



HINDI TO ENGLISH TRANSLATION

(हिन्दी से अंग्रेज़ी में अनुवाद)

by

Bikrant Rana

(Professional Name: Aditya Rana { www.SpokenEnglish.Guru })

&

Pooja Rana

Publisher: www.EnglishWale.com

Book Copyright @2021. All rights reserved – www.EnglishWale.com

ISBN – 9788193074312

My Dear Students,

सबसे पहले तो मैं अपने सभी 20M+ Website Users को और 5M+ YouTube subscribers को तहे दिल से धन्यवाद करता हूँ कि आपने मुझे इतना प्यार दिया कि आज एक लेखक के रूप में, एक अध्यापक के रूप में मुझे इतनी पहचान मिल पायी। ये मेरा आपसे वादा है कि मैं आपको अंग्रेजी में सक्षम बनाने के लिए जीवन पर्यन्त प्रयास करता रहूँगा।

आप सभी के लिए लिखी गयी इस पुस्तक में मेरी पूरी "Spoken English Guru" टीम के सदस्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, खासकर मिठो भविष्य यदुवंशी का। हमने हर संभव प्रयास किया है कि किसी भी प्रकार की कोई त्रुटि न रहे, पर फिर भी यदि आपको कहीं कोई टाइपिंग मिस्टेक या अन्य कोई त्रुटि दिखे, तो कृपया हमें englishwale12@gmail.com पर सूचित करिएगा ताकि उस त्रुटि को तुरन्त सुधारा जा सके।

शिक्षा ही एकमात्र ज़रिया है अपनी खुद की पहचान बनाने का और इस संघर्ष में इंग्लिश का महत्व कौन नहीं जानता। आप तो जानते हैं कि हमारे देश में कई ऐसे गाँव व शहर हैं जहाँ इंग्लिश सीखने के लिए अच्छे इंस्टिट्यूट नहीं हैं, किताबें हैं भी तो उन्हें पढ़ाने के लिए समर्पित अध्यापक नहीं हैं। हिन्दी मीडियम स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को तो माहौल तक नहीं मिल पाता।

देश के ज़रूरतमंद बच्चों को इंग्लिश सीखाने में मैं अपना छोटा सा योगदान दे पाऊँ, चाहे YouTube Videos के माध्यम से, अपनी वेबसाइट www.SpokenEnglish.Guru के माध्यम से या फिर अपनी "Spoken English Guru" पुस्तकों के माध्यम से, बस यही मेरा लक्ष्य है।

मुझे पूरा विश्वास है कि अगर आप अपना सतप्रतिशत दें तो इंग्लिश सीखने में ज़रूर कामयाब होंगे। आपसे बस इतनी सी अपील है कि इस पुस्तक को हर गाँव व शहर तक पहुँचाने में मेरी मदद करिए। क्या पता आपका और मेरा एक छोटा सा प्रयास किसी के जीवन में परिवर्तन लाने में सहायक बन सके। आईए, मिलकर शुरूआत करें इंग्लिश सीखने के सफर की। मेरी शुभकामनाएँ हमेशा आपके साथ हैं।

- आदित्य सर

Websites: www.spokenenglish.guru, www.englishwale.com & www.wemakebloggers.com

Books, eBooks & Web Courses: <https://in.spokenenglish.guru/>

Blogs: <https://www.spokenenglish.guru/blog/>

Lesson-wise Videos & Practice Exercises on Android App:

<https://play.google.com/store/apps/details?id=in.qtime.spokenenglishguru>

YouTube: www.youtube.com/SpokenEnglishGuru

Facebook: <https://www.facebook.com/spokenenglishguruofficial/>

Instagram: <https://www.instagram.com/spokenenglishguruofficial/>

Index

<u>Translate Exercise</u>	<u>Page</u>
1	> 5
2	> 7
3	> 9
4	> 11
5	> 13
6	> 16
7	> 18
8	> 21
9	> 24
10	> 26
11	> 28
12	> 30
13	> 32
14	> 34
15	> 36
16	> 38
17	> 40
18	> 42
19	> 44
20	> 46
21	> 48
22	> 51
23	> 53
24	> 55
25	> 57
26	> 59
27	> 61
28	> 63
29	> 65
30	> 67
31	> 69
32	> 71
33	> 73
34	> 75
35	> 77
36	> 80
37	> 82
38	> 84
39	> 86

40	-> 88
41	-> 90
42	-> 92
43	-> 94
44	-> 96
45	-> 98
46	-> 100
47	-> 102
48	-> 104
49	-> 106
50	-> 108
51	-> 109
52	-> 110
53	-> 111
54	-> 112
55	-> 113
56	-> 114
57	-> 115
58	-> 116
59	-> 117
60	-> 118
61	-> 119
62	-> 120
Sachin Tendulkar	-> 121
Mahendra Singh Dhoni	-> 140
Cristiano Ronaldo	-> 155

TRANSLATION EXERCISE # 1

सुमित बिहार के एक छोटे से गाँव में रहता था जो सिवान से कुछ 20 किलोमीटर दूर था। वह रोज़ सुबह अपने पिताजी के साथ खेतों में जाके काम करता था लेकिन उसे सिविल सर्विसेज की तैयारी करनी थी। घर में पैसों की तंगी थी और इसलिए वह केवल बारहवाँ तक ही पढ़ पाया था। एक दिन उसने यह बात अपनी माँ से कही जो एक सामान्य गृहिणी थी। सुमित की बात सुनकर उसकी माँ बहुत भावुक हो गयी और उन्होंने सोचा कि अपने होनहार बेटे के लिए वो ज़रूर कुछ उपाय निकालेंगी। जब उस दिन सुमित के पिताजी घर आये तो उसकी माँ ने उनसे इस बारे में बात की। पिताजी ने कहा कि बरसात और कीड़ों के कारण इस बार फ़सलों को बहुत नुकसान पहुँचा है। इस कारण इस बार भारी आर्थिक नुकसान हुआ है और ऐसे समय पर पढ़ाई पर खर्च करना संभव नहीं था। सुमित की माँ यह बात सुनकर निराश ज़रूर हुई लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी, उन्होंने अचार और पापड़ के गृह उद्योग की शुरुआत की। कुछ ही महीनों में अच्छे खासे पैसे आने लगे और अच्छी बारिश के कारण फ़सलें भी काफी अच्छी हुईं। अब सुमित के घर की आर्थिक स्थिति थोड़ी बेहतर होने लगी। सुमित ने यह सब महसूस किया लेकिन अपने माता - पिता पर बोझ न डालने के कारण से उसने फिर से पढ़ाई की बात नहीं की। एक दिन जब वह सुबह उठा तो उसने देखा कि डाकिया चिट्ठी छोड़ कर गया है, उसे खोलने पर उसने देखा कि उसमें ट्रेन की टिकट और कोचिंग क्लास की जानकारी है। अचानक पीछे से पिताजी ने उसके कंधे पर हाथ रख कर बोला, बेटा, अपनी पढ़ाई पूरी कर और अपना आई० ए० एस० बनने का सपना साकार कर। सुमित की आँखें नम हो गयी और उसने अपने माता - पिता से वादा किया कि वह दिल्ली जाकर उनका नाम रोशन करेगा और अगले ही दिन, वो दिल्ली के लिए रवाना हो गया।

Help

सामान्य- Ordinary

भारी - Severe

संभव - Feasible

निराश - Dismay

बोझ - Liability

रवाना होना - Set out

Translation

Sumit lived in a small village in Bihar which was some 20 Kilometers away from Sivan. He used to go to the fields daily along with his father and work but he wanted to prepare for the Civil Services. There were financial problems in the house and because of that he was able to study only up to class 12th. One fine day, he told this to his mother who was a simple housewife. After listening to Sumit, his mother got very emotional and she thought of devising a way for his sincere son. When Sumit's father came home that day, then his mother talked to him about this. Sumit's father said that due to rains and pesticides, crops have been severely damaged. Due to this, there has been huge financial loss and it is not feasible to spend on studies. Although Sumit's mother got dismayed by listening to this, yet she didn't give up, she opened a pickle and wafers home business. In a few months, a good amount of money started to flow in, and the crops were also good this time due to desired rainfall. Now, the financial condition of Sumit's house started improving. Sumit realised all of this but to avoid being a liability to his parents he didn't discuss about his studies. One day when he woke up in the morning, he saw that the postman had left a letter; on opening it he found a train ticket and coaching classes' details. Suddenly from behind, his father while keeping his hand on Sumit's shoulders said, son, complete your studies and fulfil your dream of becoming an I.A.S officer. Sumit became emotional and he promised his parents that he will make them proud after going to Delhi and on the very next day, he set out for Delhi.

TRANSLATION EXERCISE # 2

किसी भी छोटे शहर के लड़के के लिए दिल्ली जैसे बड़े शहर में कदम रखना बहुत ही बड़ी बात है। सुमित को इस बात का अहसास शायद ही था कि उसका रास्ता कितना कठिन होने वाला है। मुखर्जी नगर, जो सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी के लिए काफी मशहूर है, वहाँ सुमित ने एक मकान किराये पर लिया। छोटे से कमरे के उसे पाँच हजार देने पड़े और साथ में हिमांशु नाम के लड़के के साथ वो कमरा साझा भी करना पड़ा। सुबह आठ बजे से लेकर शाम के सात बजे तक उसकी क्लासेज़ चलती थी और बीच में मुश्किल से बस खाने का समय मिल पाता था। बाहर का खाना खाने से सुमित की तबियत कई बार ख़राब हो जाती थी। कई सारी मुश्किलें झेलने के बाद भी सुमित ने अपने लक्ष्य से ध्यान नहीं भटकाया और पढ़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी। हिमांशु भी होनहार लड़का था और वह और सुमित मिलकर पढ़ाई किया करते। रोज़ घर से पिताजी का फोन आता तो सुमित उन्हें हौसला देता कि वह अपना और उनका सपना ज़रूर पूरा करेगा। कई बार ऐसा भी होता कि दिन भर पढ़ने के बाद भी सवाल हल नहीं होते, इससे कई बार सुमित निराश होकर बैठ जाता। हिमांशु फिर उसे समझाता कि यह जीवन के उतार - चढ़ाव का एक हिस्सा है और इसे हिम्मत के साथ पार करना होगा। कभी - कभी पैसे ज्यादा खर्च हो जाने के कारण, सुमित रात का खाना नहीं खाता था ताकि वह अधिक न खर्च कर दे। परीक्षा का समय पास आता जा रहा था और सुमित की घबराहट बढ़ रही थी। सुमित के पिताजी ने उसका हौसला बढ़ाया और उसे खूब मेहनत करने की नसीहत दी। सुमित ने भी उम्मीद नहीं छोड़ी और लगातार कड़ी मेहनत करते रहा। आखिर एक साल के लम्बे इंतज़ार के बाद परीक्षा की घड़ी आ ही गयी।

Help

साझा – Share

अहसास - Realise/feel

होनहार - sincere/promising

हिम्मत – courage

घबराहट - Anxiety/Nervousness

हौसला – Confidence

मेहनत - Hard Work/Effort

नसीहत - Advice/Suggestion

भटकाया - Deviated

Translation

For any boy hailing from a small town, stepping in a big city like Delhi is a huge thing. Sumit hardly had any idea about how difficult his path was going to be. Mukherjee Nagar, the area which is famous for the Civil Services Preparation, Sumit rented a house there. He had to pay five thousand rupees for such a small room and along with that share it with a boy named Himanshu. Classes used to be held from eight in the morning to seven in the evening and there was hardly some time in between for having food. Sumit fell ill several times due to the consumption of outside food. Despite facing so many problems, Sumit didn't lose his focus on the aim and didn't leave any stone unturned in his studies. Himanshu was also a sincere boy and he and Sumit used to study together. Every day, Sumit's father used to call him and Sumit would give him hope that he would surely fulfil his and their dreams. Sometimes, it happened that despite studying all day, he wasn't able to solve questions; Sumit got disheartened by this many a time. Himanshu then explained to him that this was a part of the ups and downs of life and he would have to face it with courage. Sometimes due to over expenditure, Sumit didn't eat dinner so as to avoid additional spending. The day of examination was drawing near and Sumit's anxiety was increasing. Sumit's father motivated him and advised him to work hard. Sumit didn't lose hope and worked hard consistently. Finally, after a long wait of one year, the time of examination came.

TRANSLATION EXERCISE # 3

सुमित, सुबह भगवान की पूजा करके और फ़ोन पर माँ पिताजी का आशीर्वाद लेकर, घर से निकला। रास्ते में उसे ट्रैफिक का सामना करना पड़ा और उसे लगा कि शायद वह परीक्षा के लिए देर हो जायेगा। किसी तरह सुमित निर्धारित समय से पाँच मिनट पहले एग्जाम सेंटर पहुँच गया। अपनी जगह पर जाकर, उसने एक गहरी सांस ली और शांति से बैठ गया। जब घड़ी में नौ बजे तो प्रश्न पत्र उसके सामने आया और उसे देखकर वह दंग रह गया। सुमित को यह विश्वास नहीं हो रहा था कि उसे लगभग सभी प्रश्नों के उत्तर आते थे। वह खुशी से फूले नहीं समा रहा था। अपने मन को शांत कर के, उसने लिखना शुरू किया और तय समय सीमा से दस मिनट पहले ही उसका पेपर पूरा हो गया। उसे लगा कि शायद उसका कोई प्रश्न छूट गया होगा तो उसने फिर से उत्तर पुस्तिका जाँची। उसने सारे सवालों के जवाब लिख लिए थे। कोई गलती न रह गयी हो इसलिए उसने एक बार फिर सारे जवाबों की जाँच कर ली। एग्जाम समाप्त होने के बाद, जब परीक्षा हॉल से निकला तो उसने देखा कि सभी छात्र चर्चा कर रहे थे। उसने सीधा मेट्रो पकड़ी और घर की ओर रवाना हो गया। हिमांशु भी कुछ देर बाद घर पहुँचा। दोनों ने एक दूसरे से पूछा कि उनकी परीक्षा कैसी हुई। हिमांशु ने कहा कि थोड़े से मुश्किल प्रश्न थे लेकिन हल हो गए। सुमित की बात सुन कर हिमांशु दंग रह गया और उसने सुमित से कहा कि इस बार सुमित शायद पूरे देश में अब्बल आ सकता है।

Help

आशीर्वाद - Blessings

निर्धारित - Scheduled

चर्चा - Discussion

रवाना – To depart

मुश्किल - Tough

दंग रहना – To be Stunned/ Shocked/ Amazed

अब्बल आना – To Top / To stand First

Translation

Sumit, after worshipping God and taking blessings from his parents over the phone, left home. He had to face traffic on his way and he thought he might get late for the exam. Somehow, Sumit reached the exam centre five minutes before the scheduled time. Going up to his seat, he took a deep breath and sat down. When the clock struck nine, the question paper came in front of him and he was amazed by seeing it. Sumit couldn't believe that he knew the answers of almost all the questions. He was extremely overjoyed. Keeping his mind relaxed, he started writing the answers and his paper got completed ten minutes before the scheduled time limit. He felt like he might have missed out on a question so he rechecked his answer sheet. He had written the answers to all the questions. To avoid any unintentional error, he again rechecked all his answers. After the exam got over, when he came out of the exam hall, he saw that all the students were discussing about it. He immediately boarded the metro and headed towards home. Himanshu also reached home after some time. Both of them asked each other about how their exams went. Himanshu said that there were some difficult questions but they got solved. Listening to what Sumit said, Himanshu got shocked and he told Sumit that maybe he might come first all across the country this time.

TRANSLATION EXERCISE # 4

सुमित को विश्वास नहीं हो रहा था कि उसकी परीक्षा उम्मीद से इतनी बेहतर जा सकती है। उसने घर पर बताया कि उसकी परीक्षा बहुत ही अच्छी गयी है और उम्मीद है कि परिणाम भी अच्छा ही आएगा। यह बात सुन कर उसके माता पिता दोनों बहुत ही खुश हो गए। सुमित ने अगले चरण की तैयारी शुरू कर दी जो कि कुछ दो महीने बाद होनी थी। सिविल सेवा की परीक्षा तीन चरण में होने वाली परीक्षा है और इसलिए यह सबसे कठिन परीक्षाओं में शामिल है। सुमित और ज्यादा हौसले और विश्वास के साथ अपनी अगले चरण के लिए पढ़ने लगा। आखिर दस दिन बाद, पहले चरण का परिणाम घोषित हुआ और सुमित शीर्ष विद्यार्थियों में शुमार था जिनके सबसे अधिक अंक थे। अब कुछ ही दिनों में दूसरे चरण की परीक्षा थी जिसके लिए सुमित पूरे जी-जान से मेहनत कर रहा था। हिमांशु भी पहला चरण पार कर गया और दूसरे चरण के लिए पढ़ने लगा। दो महीने कैसे बीत गए, पता ही नहीं चला। दूसरे चरण की परीक्षा भी सुमित ने बहुत अच्छे से लिखा और वह अपने परिणाम को लेकर बहुत आश्वस्त था। एक महीने बाद जब दूसरे चरण के नतीजे आये तो सुमित की खुशी का ठिकाना नहीं था, वह इंटरव्यू के लिए सलैक्ट हो गया था। हिमांशु को निराशा हाथ लगी लेकिन उसने सुमित की तैयारी में उसकी मदद करने की ठानी।

Help

बेहतर - Better

परिणाम - Result/Outcome

चरण - Stage/Phase

आश्वस्त - Assure/Confirm

निराशा - Disappointment

Translation

Sumit was not able to believe that his exam could go so much better than he had expected. He told at his home that his exam went extremely well and he expected the result to be great as well. Hearing this, his mother and father, both became really happy. Sumit started preparing for the next stage which was going to be held some two months from then. Civil services exam is a three-stage exam and this is why it is considered as one of the toughest exams. Sumit started studying with even greater

belief and courage for his next stage. After ten days, first stage results were declared and Sumit was among the top 10 candidates who got the maximum marks. In a few days, the second stage exam was to be conducted for which Sumit was working hard with his heart and soul. Himanshu also cleared the first stage and started studying for the second round. How two months passed away, went unnoticed. The second stage of the exam was also written well by Sumit and he was confident of a good result. After one month when the results were declared, Sumit was extremely jubilant, he was selected for the interviews. Himanshu was left disappointed but he firmly decided to help Sumit with his preparation.

TRANSLATION EXERCISE # 5

अब सुमित थोड़ा बेहतर महसूस कर रहा था और करे भी क्यों न, इतनी कठिन परीक्षा के दो चरण सफलतापूर्वक पार किये थे। हिमांशु ने सुमित की हर तरह से सहायता की और ये सुनिश्चित किया कि पढ़ाई के अलावा सुमित को कोई और काम न करना पड़े। सब्ज़ी लाना या कपड़े धोना और अन्य ऐसे छोटे - मोटे काम सब हिमांशु कर दिया करता जिससे सुमित का समय व्यर्थ न जाए। सुमित पूरी मेहनत और लगन से तैयारी कर रहा था। यह इंटरव्यू उसके लिए बहुत ही महत्वपूर्ण था, उसने पूरे जीवन आई० ऐ० एस० अधिकारी बनने का सपना देखा था। अचानक गाँव से खबर आयी कि बाढ़ के कारण सुमित के घर में भारी नुकसान हुआ है और पूरे शहर में भारी तबाही हुई है। खबर मिलते ही सुमित ने पिताजी से बात की तो पता लगा कि स्थिति बहुत ही बदतर है और खाने रहने के लिए भी जगह नहीं है। सुमित के पिताजी ने उसे फिर भी हार न मानने और अपनी तैयारी जारी रखने को कहा। अपने जीवन के इतने महत्वपूर्ण मोड़ पर जिंदगी उसका कड़ा इम्तिहान ले रही थी। सुमित कुछ समय परेशान रहा लेकिन फिर उसने सोचा कि इस दल दल से निकलने का एक ही उपाय है। उसे यह परीक्षा किसी भी हालत में पार करनी होगी अन्यथा उसकी और उसके घर की स्थिति कभी नहीं सुधरेगी। एक सप्ताह के अंदर, सिवान में बाढ़ का प्रकोप खत्म हुआ और सामान्य जीवन लौट आया। कुछ ही दिन में इंटरव्यू था और अब एक और परेशानी आ खड़ी हुई। सुमित के कम सोने के कारण, वह बीमार पड़ गया और डॉक्टर ने उसे आराम करने की सलाह दी। सुमित बिस्तर पर पड़ा - पड़ा बस यही सोचता रहता कि वह कब ठीक हो जाये और पढ़ना शुरू करे। हिमांशु ने दवाई और हर प्रकार से सुमित का ख्याल रखा और एक तरह से एक भाई का फ़र्ज़ निभाया। एग्ज़ाम से पाँच दिन पहले आखिर सुमित भला चंगा हो गया। सप्ताह - दस दिन न पढ़ने के कारण सुमित का आत्मविश्वास थोड़ा डगमगा सा गया था लेकिन उसने अपना ध्यान बनाये रखा। इतने दिनों की मेहनत आखिर बेकार थोड़े ही जाती और यही सोचकर सुमित ने पूरे लगन से पढ़ाई की। आखिर इंटरव्यू का दिन आ ही गया। थोड़ा सहमा और घबराया सा, सुमित इंटरव्यू देने पहुँचा। शालीनता के साथ सुमित ने सभी सवालों के जवाब दिए और उसकी सुध बुध से सभी बहुत प्रभावित हुए। इतने कठिन परीक्षा में यह कह पाना मुश्किल था कि सुमित को सफलता हाथ लगेगी या नहीं। सभी बहुत ही उत्सुकता के साथ सुमित के परिणाम का इंतज़ार कर रहे थे और उसकी सफलता की दुआएँ माँग रहे थे।

Help

सहायता - Assistance

महत्वपूर्ण - Crucial/Significant/Vital/Important

दल दल - Abyss

बदतर - Worse

अन्यथा - else

प्रकोप - Outbreak

डगमगा - Wayward/Haywire

शालीनता - Pacified/Calm/Cool headed

सुध बुध - Presence of mind

कठिन - Tough/difficult/stern

उत्सुकता - Enthusiasm/Excitement/Eagerness

Translation

Now Sumit was feeling slightly better and why he shouldn't be, he had successfully passed two stages of such a difficult exam. Himanshu assisted Sumit in every possible way and made sure that Sumit had no work to do except studying. Getting vegetables and washing clothes, all these odd jobs were done by Himanshu so that Sumit's time doesn't get wasted. Sumit was preparing with his heart and soul. This interview was extremely important for him, he had dreamt of becoming an I.A.S officer all his life. All of a sudden, news came from the village that due to floods heavy damage has been suffered by Sumit's house and there has been huge destruction in the entire city. As soon as he received the news, Sumit called his father, he came to know that the situation was worse and there was not even a place for food and shelter. Sumit's father still told him not to lose hope and continue with his preparation. At such a crucial stage of his life, life was taking a stern test of him. Sumit remained worried for some time but then he thought that to come out of this abyss, there is only one way. He had to pass this exam anyhow, else his, as well as his household's situation, would never improve. Within a week, the outbreak of floods

ended and life came back to normalcy. The interview was scheduled a few days from then and another problem came up. Sumit fell ill due to his lack of sleep and the doctor advised him to take rest. Sumit, while he lied down on the bed kept on thinking, when he would get well and start studying. Himanshu took care of Sumit along with his medicines and played the role of a brother in a way. Five days before the exam, finally, Sumit got well. Due to lack of studies for around a week to ten days, Sumit's confidence started to dwindle but he kept himself focussed. After all, the effort of so many days wouldn't have gone in vain and keeping this in mind he started studying with all dedication. Finally, the day of the interview arrived. A bit scared and fearful, he arrived to give the interview. With calmness, Sumit gave answers to all the questions and all were impressed by his presence of mind. In such a difficult exam, it was difficult to say that Sumit will be successful or not. Everyone was waiting with a lot of enthusiasm for Sumit's results and was praying for his success.

TRANSLATION EXERCISE # 6

आखिर इंतज़ार की घड़ियाँ खत्म हुईं और अंतिम चरण का परिणाम भी आ गया। अखबारों के शीर्ष पर एक ही नाम था - सुमित यादव; न्यूज़ चैनल और सोशल मीडिया पर भी सुमित की धूम मची थी। सुमित की तो जैसे रातों - रात ज़िन्दगी बदल गयी, लोग उसे आई० ए० एस० बाबू के नाम से पुकारने लगे। उसके छोटे से शहर से आकर बड़े शहर में संघर्ष करने और सफलता प्राप्त करने की कहानी हर घर में सुनी जाने लगी। सुमित ने हिमांशु का आभार प्रकट किया और शायद उसके न रहने पर यह सफलता हाथ नहीं लग पाती। सुमित के पिताजी आज सीना तान कर, पूरे गाँव में सबको लड्डू और पेड़े बॉट रहे थे, उसकी माँ भोले बाबा का आभार व्यक्त कर रही थी। सुमित अपने गाँव में एक मसीहा बन गया क्योंकि एक छोटे से गाँव के लड़के के लिए देश के इतने कठिन परीक्षा में सफल हो जाना अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि थी। बच्चे, बूढ़े और जवान, सबकी जुबान पर बस एक ही नाम था, सुमित यादव। सुमित की मेहनत आखिर रंग लाई थीं और वह पूरे देश में पाँचवें स्थान पर आया था। सुमित के इस सफलता से प्रेरित हो कर गाँव के कई बच्चे भी बड़े सपने देखने लगे। कोई डॉक्टर तो कोई पायलट, हर कोई कुछ बड़ा करने के लिए तत्पर था। सुमित की इस सफलता से उसके नए जीवन की शुरुआत तो हुई ही और उसके साथ ही साथ उसके गाँव ने भी एक नया सवेरा देखा। सुमित की मदद से हिमांशु ने अगले साल आई पी एस बनकर अपना सपना साकार किया। सुमित और हिमांशु बहुत ही छोटे गाँव से आते थे और ऐसे में इतने बड़े पद पर आसीन होना पूरे परिवार और गाँव के लिए बड़े ही गर्व की बात थीं।

Help

शीर्ष - Top/Apex

रातों - रात - Overnight

संघर्ष - Struggle

आभार - Thanking/Oblilize

व्यक्त - Express

मसीहा - Messiah

सफलता - Success

प्रेरित - Inspired/Motivated

पद - Post/Designation

गर्व - Pride/Honour

Translation

Finally, the wait ended and the results of the final stages came out. There was only one name on the headlines of the newspaper - Sumit Yadav; there was a craze about Sumit on news channels and social media. Sumit's life turned overnight, people started calling him IAS babu. His story of hailing from a small city to struggles in a big city and getting success became a household story. Sumit thanked Himanshu and probably success would not have been possible if he were not there. Sumit's father was proudly distributing sweets in the entire village; his mother was thanking Lord Shiva. Sumit had become a messiah/patron in his village because for a small village's boy, to get success in such a difficult exam was an achievement in itself. Kids, elderly and the young, there was just a single name on everyone's tongue, Sumit Yadav. Sumit's hard work had borne fruit and he stood fifth all across the country. Inspired by this success of Sumit, kids of the village had also started dreaming big. Someone aspired to be a doctor, others for pilots, everyone was aspiring to do something big. With this success of Sumit, his new life had started and at the same time, his village also saw a new dawn. With the help of Sumit, Himanshu fulfilled his dream of becoming an IPS next year. Sumit and Himanshu hailed from a very small village and in such a situation, it was a matter of great pride for the whole family and the village to see them at such a designation.

TRANSLATION EXERCISE # 7

सीमा और गीता दो बहने थीं। वे प्रयागराज में रहती थी और एक सामान्य परिवार से ताल्लुक रखती थीं। दोनों बहनें पढ़ने में बहुत ही होशियार थीं और बहुत बुद्धिमान थीं। सीमा को नृत्य का बहुत शौक था और गीता को पेंटिंग बनाने में महारत हासिल थी। इनके पिताजी सरकारी नौकरी करते थे और बड़े ही शांत स्वभाव के थे। दोनों की माँ सरकारी स्कूल में शिक्षिका थीं और बच्चों को विज्ञान सिखाती थीं। एक दिन सीमा ने अपनी माँ से कहा कि उसे बड़े होकर विदेश में नौकरी करनी है, यह सुनकर उसकी माँ हैरान हो गयी। उसकी माँ ने उससे पूछा कि आखिर ऐसा ख्याल उसके मन में आया कहाँ से? उसने कहा कि उसने कल टीवी पर देखा कि विदेश में सब लोग बहुत खुश रहते हैं और वहाँ हर चीज़ की सुविधा है। इन दोनों की बात के बीच ही गीता वहाँ आ गयी और दोनों की बातें सुनने लगी। गीता उम्र में सीमा से तीन साल बड़ी थी और उसे सभी चीजों की जानकारी भी रहती थी। सीमा की उस बात पर गीता समझ गयी कि वह ऐसा क्यों कह रही थी। उसने माँ को बताया कि कल वो एक सिनेमा देख रहे थे जिसमें जर्मनी के बारे में दिखाया गया था और वहाँ के सुन्दर पहाड़ों और नदियों को देख कर सीमा प्रभावित हो गयी थी। माँ ने सीमा से कहा कि वह पूरी पूरी बात बताये जो उसके दिमाग में चल रही थी। सीमा ने कहा कि उसने देखा कि वहाँ पर सब लोग बहुत मौज मस्ती कर रहे थे और उन्हें हर चीज़ की आज़ादी थी। उसकी माँ को लगा कि शायद सीमा लड़कियों के अधिकार को लेकर कुछ कहना चाह रही थी। गीता ने सीमा से उसके दोस्तों के बारे में पूछा, वे आपस में क्या बातें करते थे। सीमा ने बताया कि उसकी कई दोस्त हमेशा घर पर ही रहती हैं और उन्हें बाहर जाने की आज़ादी भी नहीं थी। जब स्कूल जाना होता है तभी वे घर से बाहर निकलती हैं नहीं तो इसके अलावा वे घर से शायद ही कभी बाहर जाती थी। यह सब सुनकर सीमा की माँ काफी चिंतित हो उठी। उन्होंने सीमा से पूछा कि क्या उसे भी ऐसा ही महसूस होता है उसे किसी प्रकार की आज़ादी नहीं थी? सीमा ने कहा कि वह खुद को बहुत भाग्यशाली समझती है कि उसे किसी भी प्रकार का काम करने से या कहीं जाने से कोई रोक टोक नहीं थी लेकिन उसे बाकी दोस्तों और लड़कियों की चिंता होती थी जिन्हे पिंजरे में बंद करके रखा जाता था।

Help

सामान्य - Ordinary/Common

ताल्लुक - Belong/Concerning/Regarding

महारत - Adept/Mastery

विदेश - Abroad/Foreign

प्रभावित - Amazed/Influenced/Impressed

अधिकार - Rights

आज़ादी - Independence/Freedom

भाग्यशाली - Lucky/Fortunate

पिंजरे - Cage/Captivity

Translation

Seema and Geeta were two sisters. They lived in Prayagraj and belonged to an ordinary family. Both sisters were pretty good in academics and were very intelligent. Seema was very fond of dance and Geeta was adept in painting. Their father did a government job and was of very calm nature. The mother of both was a teacher in a government school and taught science to children. One day, Seema told her mother that when she grows up, she wanted to do a job abroad, hearing that her mother was shocked. Her mother asked her, where did such a thought come to her mind? She said that she saw on TV yesterday that everybody abroad was very happy and everything was available there. Amidst these two talking, Geeta came there and started listening to both of them. Geeta was three years older than Seema and was far more experienced. Geeta understood why Seema was talking like that. She told her mother that yesterday they were watching a cinema which showed about Germany and Seema was impressed by looking at the beautiful mountains and rivers there. Mother asked Seema to tell the whole thing which was going on in her mind.

Seema said that she saw that everyone was having a lot of fun there and they had freedom of everything. Her mother thought that Seema was trying to say something about the rights of girls. Geeta asked Seema about her friends, what they talked to each other about. Seema said that many of her friends were always at home and they did not have the freedom to go outside. They only went out of the house when they had to go to school, apart from that they seldom went out of the house. Seema's mother got very worried after hearing all this. She asked Seema if she also feels the same way that she didn't have any kind of freedom. Seema said that she considered herself very lucky that she was not restrained from doing any kind of work or going anywhere but she was worried about the rest of the friends and girls who were kept in a cage.

TRANSLATION EXERCISE # 8

गीता अपनी छोटी बहन को इतनी बड़ी बातें करते देख अचंभित थी और साथ ही साथ गर्व भी महसूस कर रही थी कि सीमा की सोच कितनी बड़ी है। माँ ने सीमा को कहा कि आज तो नारी सशक्तिकरण का ज़माना है, हर क्षेत्र में नारी का बोलबाला है, चाहे विज्ञान हो, उद्योग हो या साहित्य। गीता ने भी छोटी बहन को समझाया कि उसे हर प्रकार के क्षेत्र में आगे बढ़ने की पूरी छूट है। माँ को पता था कि सीमा को नृत्य का बहुत शौक था और उन्हें लगता था कि शायद आगे जाकर उसे नृत्य के क्षेत्र में ही नाम कमाना हो। यह बात सोचकर उन्होंने सीमा से पूछा कि क्या उसने आगे का कुछ सोचा है कि उसे क्या करना है ? सीमा अचानक से भावुक हो गयी और उसके साथ - साथ गीता की आँखों में भी आँसू आ गए। अपनी दोनों बेटियों को ऐसे रोते हुए देख कर माँ घबरा गयी। उन्होंने घबराई हुई हालत में पूछा कि वे क्यों रो रही हैं ? गीता ने बताया कि सीमा का सपना भारतीय वायु सेना में जाने का है, यह सुनकर माँ बहुत खुश हुई। गीता ने बताया कि ये बात जब सीमा ने अपनी कक्षा में जब सबको बताई तो सब उस पर हँसने लगे और कहने लगे कि फ़ौज में जाना सिर्फ लड़कों के बस में होता है, लड़कियाँ बहुत ही कमज़ोर होती हैं और वे इतनी शक्ति नहीं जुटा पाएँगी। माँ ने सीमा के आँसू पोछते हुए पहले उसे इस बात के लिए डाटा कि उसने ये बात घर पर क्यों नहीं बताई। इसके बाद उन्होंने दोनों बेटियों को बड़े ही प्यार से समझाया कि औरत तो शक्ति का प्रतीक होती है क्योंकि वह घर के साथ साथ बाहर के काम भी बड़ी निपुणता से करती है। इसके साथ साथ उन्होंने यह भी कहा कि शारीरिक क्षमता से कहीं बढ़कर मानसिक वृद्धता यह तय करती है कि कोई कितना शक्तिशाली है। सीमा के कंधे पर हाथ रखते हुए उसकी माँ ने उसे शाबाशी दी और कहा कि उन्हें गर्व है कि वह उनकी बेटी है। माँ की इन बातों से गीता और सीमा दोनों को बहुत हौसला मिला और वे फिर से मुस्कुरा उठीं और माँ को गले से लगा के लिपट गए। माँ ने दोनों को समझाया कि हमेशा हिम्मत और हौसले के साथ हर किसी का मुकाबला करना चाहिए और कभी भी खुद को कम नहीं आंकना नहीं चाहिए। कल्पना चावला और इंदिरा गाँधी का उदाहरण देते हुए माँ ने दोनों बेटियों को और ऐसे कई महिलाओं के बारे में बताया जिन्होंने सारी मुश्किलों के बावजूद पूरे देश का नाम रौशन किया है। सीमा मन ही मन यह सोच रही थी कि वह बहुत ही किस्मत वाली है कि उसे ऐसी माँ मिली है जो इतनी हौसला अफ़ज़ाई करती हैं और उन्हें समझती हैं।

Help

अचंभित - Amazed/Surprised/Astonished

सशक्तिकरण - Empowerment

बोलबाला - Domination

भावुक - Teary-eyed/Emotional

बस - Caliber/Capacity

प्रतीक - Symbol

निपुणता - Efficiently/ With a flair

शक्तिशाली - Strong/Mighty/powerful

शाबाशी - Applause

मानसिक दृढ़ता - Mental fortitude/ Mental toughness

हिम्मत - Courage

आंकना - Evaluate/Estimate

हौसला अफ़ज़ाई - Motivate/Encourage

Translation

Geeta was surprised to see her younger sister talking so maturely and at the same time felt proud of how good Seema's thoughts were. Mother told Seema that it is the era of women empowerment, women are dominating in every field, be it science, industry or literature. Geeta also explained to the younger sister that she had complete freedom to excel in all kinds of fields. Mother knew that Seema was very fond of dance and thought that she might have to establish herself in the field of dance. Thinking this, she asked Seema if she thought anything further about what she had to do. Seema suddenly became emotional and along with it, Geeta got tears in her eyes. Their mother got nervous after seeing her two of the daughters crying like that. She asked nervously why they were crying? Geeta told that Seema dreamt of joining the Indian Air Force, hearing to which mother became very happy. Geeta

said that when Seema told this thing to everyone in her class, everyone started laughing at her and said that going into the army was just of boys calibre, girls were very weak and couldn't muster the courage to do so. The mother first wiped Seema's tears and scolded her as to why she did not tell this thing at home. After this, she lovingly explained to both the daughters that the woman is a symbol of power because she does household as well as outside work with great skill. Along with that, she also said that mental fortitude, more than physical ability determines how powerful someone is. Keeping a hand on Seema's shoulder, her mother complimented her and said that she was proud that she was her daughter. Geeta and Seema both got very encouraged by their mother's words and they smiled again and hugged their mother. The mother explained to both that everyone should always compete with courage and grit and never underestimate them. Giving the example of Kalpana Chawla and Indira Gandhi, the mother told both the daughters about many other women who have made the whole country proud despite all the difficulties. Seema was thinking that she was very lucky that she had got such a mother who was so understanding and kept on encouraging her.

TRANSLATION EXERCISE # 9

रोहित की आज लंदन की फ्लाइट थी, पहली बार विदेश जा रहा था तो थोड़ा सा सहमा हुआ था। रोहित के मामा की लंदन में कपड़ों की बहुत ही बड़ी फैक्टरी थी। रोहित ने दिल्ली के किरोरीमल कॉलेज से अर्थ-शास्त्र में पढ़ाई की थी और शुरू से ही एक होनहार छात्र रहा था। रोहित को आगे लंदन यूनिवर्सिटी में पढ़ाई करनी थी लेकिन उसके पिताजी चाहते थे कि वह अपने घर का कारोबार संभाले। रोहित को एक शर्त पर लंदन जाकर पढ़ने का मौका मिला था कि वह पढ़ाई पूरी करने के बाद वहाँ रहकर कारोबार संभालेगा। रोहित को उद्योग में कुछ खास दिलचस्पी तो नहीं थी लेकिन पिताजी की बात का वह अनादर भी नहीं कर सकता था। पूरे पंद्रह घंटे की यात्रा के बाद रोहित दिल्ली से लंदन पहुँचा जहाँ उसके मामा और मामी उसके स्वागत के लिए खड़े थे। वहाँ पहुँचकर वहाँ की चमक - दमक देख कर वह हैरान रह गया। बड़ी - बड़ी इमारतें और शीशे से बने घर देख कर उसे ऐसा लगा कि मानो वह किसी दूसरी दुनिया में आ गया हो। रोहित की अंग्रेजी बड़ी ही शानदार थी इसलिए उसे वहाँ किसी से बात करने में कोई दिक्कत नहीं हो रही थी बल्कि ऐसा लग रहा था वह वहीं का निवासी हो। यूनिवर्सिटी पहुँचने पर, उसकी आँखें खुली कि खुली रह गयी, इतना बड़ा कॉलेज उसने अपने जीवन में आज तक कभी नहीं देखा था, वहाँ हर देश से छात्र पढ़ने आते थे जिनमें कई भारतीय भी शामिल थे।

Help

सहमा - apprehensive

अर्थ-शास्त्र - economics

चमक - दमक - glitter and glitz

बड़ी - बड़ी इमारतें - big buildings/Skyscrapers/Edifices

निवासी - Resident/Native

Translation

Rohit had a flight to London that day, he was going abroad for the first time so he was a little apprehensive. Rohit's maternal uncle had a large clothing factory in London. Rohit had studied economics in Delhi from Kiorimal College and was a promising student from the beginning. Rohit wanted to study further at London University but his father wanted him to take over his family business. Rohit had the

opportunity to go to London to study on one condition that after completing his studies, he would stay there and handle the business. Rohit was not particularly interested in the business but he could not even disrespect his father. After a full fifteen-hour journey, Rohit reached London from Delhi where his maternal uncle and aunt were waiting to welcome him. After reaching there, he was surprised to see the glitter and glitz there. Seeing big buildings and houses made of glass, he felt as if he had come to some other world. Rohit's English was very good, so he did not have any problem in talking to anyone there rather it seemed that he was a native. Upon reaching the university, his eyes were left wide open, he had never seen a college so big in his life, where came students from every country to study, including many Indians too.

TRANSLATION EXERCISE # 10

लंदन यूनिवर्सिटी विश्व के सर्वश्रेष्ठ संस्थानों में गिनी जाती है और यहाँ के विद्यार्थी पूरी दुनिया में अपनी छाप छोड़ चुके हैं। रोहित को उसके होस्टल का कमरा मिल गया और उसकी खुशी उसके चेहरे पर साफ़ झलक रही थी। रूम की चाबी लेने के बाद रोहित ने अपना सामान कमरे में रख दिया और मामा के साथ उनके घर चला आया। लंदन का मौसम बहुत ही ठंडा रहता है और राजस्थान के जोधपुर में जन्म लेने वाले रोहित के लिए ठंड बर्दाश्त करना एक टेढ़ी खीर साबित हो रहा था। मामी ने खाना खिलाया और उसके बाद मामा ने रोहित को थोड़े पैसे दिए और उसके होस्टल छोड़ आये। नया शहर और नया देश था, रोहित थोड़ा सा असहज महसूस कर रहा था लेकिन उसने अपने आस पास घूमना शुरू किया। उसे आस पास के कमरे में कई भारतीय और चीनी लड़के मिले, हिंदी बोलने वाले लड़कों से मिल के मानो उसे ऐसा महसूस हो रहा था कि वो लंदन में नहीं दिल्ली में हैं। वहाँ का खाना भी काफी अलग प्रकार का था और उसमें रोटी दाल की जगह नहीं थी, ब्रेड और अंडे भरपूर रूप से खाने में शामिल थे। रोहित को थोड़ी परेशानी इसलिए भी हो रही थी क्योंकि वह शुद्ध शाकाहारी था और वहाँ पर माँस - मछली ही ज्यादा मिलता था। शाकाहारी भोजन में उसके पास कम विकल्प थे लेकिन खाना बहुत ही पौष्टिक और साफ़ सुथरा मिलता था। रोहित के लिए ये एक नए जीवन की शुरुआत थी।

Help

सर्वश्रेष्ठ - Best

छाप छोड़ - make a mark

टेढ़ी खीर - a tough task

असहज - uncomfortable

प्रकार - Variety

शाकाहारी - Vegetarian

विकल्प - Options/Choices

पौष्टिक - nutritious

Translation

London University is counted among the best institutions in the world and students from here have left their mark all over the world. Rohit found his hostel room and his happiness was reflected clearly on his face. After taking the key of the room, Rohit kept his belongings in the room and came to his house with his maternal uncle. The weather in London remains very cold and for Rohit, who was born in Jodhpur, Rajasthan, to survive the cold was proving to be a tough task. Mami served him lunch and after that Mama gave Rohit some money and dropped him to the hostel. The city, as well as the country, was new, Rohit was feeling a bit uneasy but he started moving around. He found many Indian and Chinese boys in the nearby room, meeting Hindi-speaking boys as if he felt that he was not in London but Delhi. The food there was also quite different and there was no place for roti dal, instead, bread and eggs were included in it. Rohit was also having some trouble because he was a pure vegetarian and he used to get more non-vegetarian food there. He had few choices in vegetarian food but the food was very nutritious and was served clean and hygienic. This was the beginning of a new life for Rohit.

TRANSLATION EXERCISE # 11

धीरे धीरे ही सही लेकिन रोहित नए शहर में खुद को अकेला महसूस नहीं कर रहा था क्योंकि उसने कई सारे दोस्त बना लिए थे जिनमे से कई अँग्रेज़ भी थे। सब एक साथ पढ़ाई करते और किसी भी सवाल में कोई कठिनाई हो, तो उसे भी मिलकर सुलझा लेते। लंदन एक बहुत ही बड़ा शहर है और यहाँ घूमने की भी बहुत चीजें थीं, हर रविवार को रोहित अपने दोस्तों के साथ घूमने जाता था और खूब मज़े करता था। धीरे - धीरे उन सबकी काफी गहरी दोस्ती हो गयी और इतनी ज़्यादा बढ़ गयी कि अब तो घर भी आना - जाना होता था। रोहित अपनी पढ़ाई बहुत ही लगन और मेहनत के साथ कर रहा था और अपने दोस्तों को भी कभी - कभार पढ़ा दिया करता था। लंदन के लॉर्ड्स के मैदान पर अक्सर मैच होते रहते हैं और बीच में भारत और इंग्लैंड के बीच एक शृंखला का आयोजन किया गया। रोहित और उसके दोस्तों ने फाइनल मैच की टिकटें बुक करा ली। फाइनल मैच हद से ज़्यादा रोमांचक था और अंत में बड़े ही निराले रूप में युवराज सिंह और मोहम्मद कैफ की जांबाज़ परियों के दम पर भारत ने दो विकेट से जीत अपने नाम कर ली। उस दिन तो रोहित ने खूब जश्न मनाया और अपने अँग्रेज़ दोस्तों को एक अच्छे जगह डिनर कराने ले गया। इसी प्रकार वे टेनिस की विंबलडन की प्रतियोगिता भी देखने गए जिसमे रोहित का पसंदीदा खिलाड़ी राफेल नडाल बहुत ही अच्छा खेला। इसी प्रकार खेलते - कूदते और पढ़ते - लिखते रोहित के दो साल कैसे निकल गए उसे पता ही नहीं चला। अब उसके वार्षिक परिणाम घोषित होने वाले थे, वह बहुत ही उत्सुक था। उसने बड़ी मेहनत से पढ़ाई की थी तो उसे पता था कि उसका परिणाम अच्छा ही आने वाला है तो वह सकारात्मक सोच रहा था। जब परिणाम आया तो उसके उम्मीद से भी ज़्यादा ही अच्छा आया, उसने पूरी यूनिवर्सिटी में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इन सब के बीच सबसे बड़ी बात ये हुई कि उसे इंग्लैंड की और दुनिया की सबसे बड़ी मोबाइल कैरियर कंपनी वोडाफोन से नौकरी का प्रस्ताव आया और वो भी पूरे पाँच करोड़ का। रोहित की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था लेकिन उसे इस बात का डर था कि शायद उसके पिता मना ना कर दें।

Help

धीरे धीरे – Gradually,

कठिनाई - Difficulty

अक्सर – Often,

कभी - कभार - Occasionally

जांबाज़ - Valliant/Courageous

पसंदीदा – favourite,

प्रस्ताव - offer/proposal

Translation

Gradually, but Rohit was not feeling alone in the new city as he had made many friends, many of whom were Britishers. Everyone studied together and if anyone faced any difficulty in any question, they would solve it together. London was a big city and there were many things to visit here, every Sunday Rohit used to go with his friends and had a lot of fun. Gradually, they all became very close friends and their bond grew so much that they then even started visiting homes. Rohit was doing his studies with great dedication and hard work and used to teach his friends occasionally. Matches were often held on the grounds of the Lords of London and a series between India and England was held in between. Rohit and his friends booked tickets for the final match. The final match was extremely exciting and in the end, India won by two wickets on the back of Yuvraj Singh and Mohammad Kaif's innings. That day Rohit celebrated a lot and took his English friends for dinner at a good place. Similarly, they also went to watch the Wimbledon competition in tennis, in which Rohit's favourite player Rafael Nadal played very well. Rohit didn't realise how smoothly two years passed, enjoying and studying all along. Now that his annual results were about to be announced, he was very eager. He had studied hard, so he knew that his result was going to be good, so he was thinking positively. When the result came, it was better than he had expected, he finished first in the whole university. The biggest thing among all this was that he got a job offer from England and the world's largest mobile carrier company, Vodafone and that too for a total of five crores. Rohit was extremely delighted but he was afraid that his father might refuse.

TRANSLATION EXERCISE # 12

रोहित ने वोडाफ़ोन में नौकरी की खबर पहले मामा और उसके बाद पिताजी को बताई। सब घर में बहुत खुश तो हुए लेकिन अब भी मुद्दे की बात यही थी कि रोहित को उसके पिता कारोबार में ही जाने कहेंगे या फिर उसे वोडाफ़ोन में काम करने के लिए मंजूरी दे देंगे। पिताजी ने रोहित को अपने कमरे में बुलाया, उन्होंने रोहित से पूछा कि उसका क्या मन है। आखिर इतना बड़ा सफर था कि उसे मना करने के पहले भी कोई दस बार सोचेगा, पाँच करोड़ रूपए कोई मामूली रकम नहीं है। रोहित ने कहा कि वह पिताजी की बहुत इज़्ज़ात करता है और उनकी आज्ञा का पालन करेगा लेकिन उसे वोडाफ़ोन में अपने मन लायक क्षेत्र में काम करने का मौका मिलेगा, जो कि वह हमेशा से चाहता था। उद्योग धंधा वह संभाल तो लेगा लेकिन वह कभी भी उसमें अपना दिल नहीं लगा पायेगा। रोहित की यह बात पिताजी को उनका निर्णय लेने के लिए पर्याप्त थी, रोहित की इच्छा को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने रोहित को वोडाफ़ोन में काम करने की अनुमति दे दी और साथ ही अपनी दो वर्ष पहले दी हुई वो शर्त भी वापस ले ली। रोहित तो जैसे सातवें आसमान पर था क्योंकि उसे यह उम्मीद नहीं थी कि पिताजी कारोबार को छोड़ कर कभी कोई दूसरा काम करने की इजाज़त भी देंगे। फिर क्या था, रोहित ने तुरंत ही कंपनी ज्वाइन की। लंदन के वोडाफ़ोन के बड़े से ऑफ़िस में रोहित का अपना विशाल सा केबिन था, उसे काफी ऊँची पद पर रखा गया था। रोहित वहाँ बहुत ही खुश था और उसे खुश देख कर घर के सारे लोग खुश थे।

Help

मुद्दे की बात - a matter of discussion

मामूली - Ordinary

निर्णय - Decision

सातवें आसमान - Seventh heaven/Cloud nine

अनुमति - Permission

पर्याप्त - Enough

शर्त - Condition

विशाल - Large

Translation

Rohit told the news of Vodafone's job first to his maternal uncle and then to his father. Everyone was very happy at home, but still, the matter of discussion was whether Rohit's father would ask him to go into business or he would permit him to work in Vodafone. Dad called Rohit to his room, he asked Rohit what he wanted. After all, it was such a huge offer that even before refusing it, one would think ten times, five crore rupees is not an ordinary amount. Rohit said that he respected his father a lot and would obey him but he would get a chance to work in his interested area at Vodafone, which he had always wanted. He will be able to handle the business, but he will never be able to put his heart into it. This statement made by Rohit was enough for his father to make his decision, keeping in mind Rohit's wish, he allowed Rohit to work in Vodafone and also withdrew his condition given two years back. Rohit was on the seventh heaven as he did not expect that his father would ever allow him to do some other thing besides the business. It was just a matter of time, Rohit immediately joined the company. Rohit had his huge cabin in the big office of Vodafone in London; he was placed at a very high position. Rohit was very happy there and all the people in the family were happy to see him cheerful.

TRANSLATION EXERCISE # 13

सूर्यांश आठवीं कक्षा में पढ़ता था और बड़ा ही होनहार छात्र था। वह सारे शिक्षक और अपने सभी सहपाठियों की मदद करता था। अपने माता पिता का भी लाडला था और अपने नाना जी से तो उसकी कुछ ज़्यादा ही बनती थी। एक दिन गणित की कक्षा में मास्टर साहब ने बोर्ड पर एक सवाल लिखा जो किसी को भी नहीं आ रहा था, सूर्यांश को भी नहीं। तभी सूर्यांश के शरारती दोस्त दिशान को एक शरारत सूझी, उसने अपने बैग से नकली सांप निकाला और अध्यापक के ऊपर फेंक दिया जिससे कि सब डर जायें और अगली कक्षा की घंटी का समय हो जाये। उसने यह सोचकर नकली सांप फेंका, मास्टर साहब इतने भयभीत हो उठे कि वह अपनी कुर्सी से ही उलटे गिर पड़े, उनके सिर में गहरी चोट आयी। दिशान घबरा गया और तुरंत ही कक्षा से भाग गया, कुछ देर बाद जब डॉक्टर आये और उनकी जाँच की तो यह पाया कि चोट बहुत गंभीर नहीं थी। अगर चोट थोड़ी और गहरी होती तो अध्यापक की यादाश्त भी जा सकती थी, यह सब सुनकर दिशान बहुत ही सकपका गया। सूर्यांश को ये बात पता थी कि ऐसा नकली सांप दिशान के पास ही है लेकिन उसने अपना मुँह नहीं खोला। उसने दिशान के पास जाकर उससे पूछा कि क्या सांप उसने फेंका था। दिशान ने सर हिलाया और ना में जवाब दिया, सूर्यांश को पता था कि पकड़े जाने के डर के कारण दिशान सच नहीं बोल रहा है। सूर्यांश ने उसे शांत करते हुए फिर से पूछा, इस शर्त के साथ कि वह किसी को नहीं बताएगा। दिशान ने यह बात मानी कि यह उसी की शरारत थी लेकिन सज़ा के डर के कारण वह सबके सामने आने से बहुत डर रहा था। जब मास्टर साहब एक सप्ताह बाद ठीक हुए तो वे स्कूल वापस आये। सभी बच्चे उन्हें देख कर बहुत ही खुश हुए क्योंकि अब वह बिलकुल ठीक हो चुके थे। पूरे कक्षा के दौरान, शिक्षक ने उस दिन की कोई बात नहीं की। सूर्यांश ने घंटी बजने से थोड़े पहले दिशान को अध्यापक को सब सच बताने को कहा। लेकिन दिशान चुप रहा। सूर्यांश ने ये बात दिशान की माँ को बताई। उन्होंने सूर्यांश से कहा कि वह दिशान से सच बुलवाने का कोई तरीका ज़रूर निकालेंगी।

Help

होनहार - Sincere

सहपाठियों - Classmates/colleagues

लाडला - Apple of eye/dear

शरारत - Prank/Mischief

भयभीत - Afraid/frightened

तारीफ - Appreciation

Translation

Suryansh studied in eighth grade and was a very sincere student. He used to help all the teachers and all his classmates. He was the apple of his parents' eye and he used to have a bit more bonding with his maternal grandfather. One day, in the class of Mathematics, the teacher wrote a question on the board whose answer was not known to anyone, not even Suryansh. Just then Suryansh's mischievous friend Dishan thought of doing a prank, he took out a fake snake from his bag and threw it at the teacher so that everyone would be scared and it would be time for the next class bell. Thinking that he threw a fake snake, the teacher was so frightened that he fell backwards from his chair; he got deeply hurt on his head. Dishan got nervous and immediately ran away from the class, after some time when the doctor came and examined him; he found out that the injury was not very serious. If the injury was a little deeper, the teacher's memory could have been lost, hearing all this, Dishan was very upset. Suryansh knew that such a fake snake was possessed by Dishan but he did not speak up. He went to Dishan and asked him if he had thrown the snake. Dishan nodded and answered no. Suryansh knew, that Dishan was not speaking the truth due to the fear of being caught. Suryansh asked him again, calming him down, with the condition that he would not tell anyone. Dishan admitted that it was his mischief but he was too afraid to face everyone due to the fear of punishment. When the teacher recovered after a week, he came back to school. All the children were very happy to see him because he was fully recovered. During the class, the teacher didn't talk about that day. Just before the bell rang, Suryansh told Dishan to let the teacher know the truth. But Dishan kept mum. Suryansh told this whole matter to Dishan's mother. She told Suryansh that she would definitely devise a way to make Dishan speak the truth.

TRANSLATION EXERCISE # 14

अगले दिन, जब दिशान घर आया तो उसकी माँ ने उससे मास्टर साहिब की तबियत के बारे में पूछा, दिशान ने बताया की वह ठीक है और स्कूल वापिस आ गए हैं। माँ ने फिर से उस घटना के बारे में दिशान से पूछा और यह उम्मीद की कि शायद दिशान सच बोल दे। दिशान ने कोई झूठी कहानी रच दी और बात को टाल दिया। माँ की तरकीब काम न आयी, उन्होंने दूसरा उपाय सोचा। उन्होंने दिशान को झूठी कहानी बताई कि उन्हें पता लगा है कि सूर्यांश ने उस दिन मास्टर साहब के साथ शरारत की थी। दिशान शरारती तो था लेकिन अपने दोस्त से उसका बहुत लगाव था, उस पर झूठा आरोप लगते देख उसने सोचा कि अब शायद सच बताना ही पड़ेगा। उसने माँ से कहा कि सूर्यांश ने कुछ नहीं किया बल्कि सारी गलती उसकी खुद की थी। माँ को यह बात सुनकर जैसे बहुत बड़ा सुकून मिला हो, वह बहुत ही ज़्यादा खुश हो गयी और उन्होंने दिशान को अपने गले से लगा लिया। दिशान रोने लगा और उसने माँ से बहुत माफ़ी माँगी, उसने कहा कि वह काफी डर गया था तो इसलिए उसकी सच बताने की हिम्मत नहीं हो रही थी। माँ ने उसे समझाया कि गलती कितनी भी बड़ी क्यों न हो, अगर उसका पछतावा हो तो वही सबसे बड़ी क्षमा है। कभी भी गलती हो जाए तो माता पिता को तो हमेशा बताना चाहिए, कैसी भी गलती हो, वे ज़रूर मदद करेंगे। दिशान ने अगले ही दिन स्कूल जा कर, मास्टर साहब के पास जा कर माफ़ी माँगी और उन्हें पूरी सच्चाई बताई। मास्टर साहब ने उसकी बहुत प्रशंसा की और कहा कि उसने सच बोल कर बहुत ही अच्छा काम किया है और इसके लिए बहुत साहस की ज़रूरत है। दिशान और सूर्यांश अब और भी अच्छे दोस्त बन गए और दिशान ने सूर्यांश को भी धन्यवाद दिया कि सच बोलने में उसने बहुत बड़ी भूमिका निभाई। मास्टर साहब ने अगली कक्षा में दिशान के लिए तालियां बजवाई और सबके सामने उसकी खूब प्रशंसा की जिसे देख कर दिशान को सच बोलने के लिए प्रेरणा मिली। दिशान ने अपनी माँ से और मास्टर साहब से ये वादा किया कि वह आगे कभी कोई गलती पर, उसे छुपाने या झूठ बोलने के बजाय हमेशा सच ही बोलेगा।

Help

झूठी कहानी - Cock and bull story

तरकीब - idea

लगाव - attachment

माफ़ी - apology

पछतावा - regret

प्रशंसा - Applause

भूमिका - Role

प्रेरणा - Inspiration

Translation

The next day, when Dishan came home, his mother asked him about the health of the teacher, Dishan told that he was fine and had rejoined the school. Mother again asked Dishan about the incident and hoped that perhaps Dishan would tell the truth. Dishan created a cock and bull story and avoided it. Mother's idea did not work, she thought of another idea. She told the false story to Dishan that she had come to know that Suryansh had done mischief with the teacher that day. Dishan was mischievous but was very close to his friend, seeing that he was falsely accused, he thought that now he might have to tell the truth. He told his mother that Suryansh did nothing but the entire mistake was his own. Hearing this his mother was very relaxed, she became very happy and hugged Dishan. Dishan started crying and apologized to his mother, he said that he was scared, so he did not dare to tell the truth. Mother explained to him that no matter how big the mistake was if he is regretful about it then it is the greatest forgiveness. In case of any mistake, parents should always be told, whatever mistake is committed, they will help. Dishan went to school the next day, went to the teacher and apologized and told him the whole truth. The teacher praised him a lot and said that he had done a great job by speaking the truth and it required a lot of courage. Dishan and Suryansh became even closer friends now and Dishan also thanked Suryansh that he played a big role in telling the truth. The teacher made everyone clap for Dishan in the next class and applauded him in front of everyone. Dishan promised his mother and teacher that he would always speak the truth instead of hiding or lying to them from next time onward.

TRANSLATION EXERCISE # 15

सुनीता और संगीता, दो बहुत ही अच्छी मित्र थीं। उन्होंने साथ साथ अपनी पढ़ाई पूरी की और एक ही साथ बारहवीं की परीक्षा भी दी। जब बारहवीं के परिणाम आये तो सुनीता के संगीता से बहुत अच्छे अंक थे, संगीता काफी निराश थी तो वहीं सुनीता सातवें आसमान पर। सुनीता का दाखिला दिल्ली यूनिवर्सिटी के सबसे बेहतरीन कॉलेज में से एक, सेंट स्टीफ़ंस में हुआ और वहीं संगीता को एक सामान्य से कॉलेज में दाखिला लेना पड़ा। संगीता अपने करियर को लेकर बहुत ही चिंतित हो उठी, उसे लगा कि एक सामान्य से कॉलेज से पढ़कर भला वो कितना ही आगे जा पायेगी और अपने आप को इन सब का जिम्मेदार ठहराने लगी। संगीता की माँ ने यह महसूस किया कि आज कल वह थोड़ी उदास और घबराई हुई सी रहती थी। उन्होंने संगीता से इसकी वजह पूछी तो संगीता ने बताया कि उसे लगता है सुनीता बहुत आगे तक जायेगी और संगीता का सफर यहीं ख़त्म हो जायेगा। माँ ने संगीता को अपने पास बुलाकर समझाया कि ऐसा सोचना बहुत ही गलत है, कॉलेज तो बस जीवन की एक छोटी से शुरुआत है और उसे आगे बहुत सारे मौके मिलेंगे खुद को साबित करने के लिए। सुनीता के तो जैसे पर निकल आये थे, रोज़ बाहर घूमना और देर रात तक पार्टी करना उसकी आदत बन चुकी थी। पढ़ाई या उससे जुड़ी कोई भी बात से, अब उसका दूर - दूर तक कोई नाता नहीं दिखता था। कॉलेज के एग्जाम में भी यह बेर्झमानी से पास होने लगी, पढ़ना तो उसने बंद कर रखा था, तो सवाल के जवाब आते भी कहाँ से। इन सब के बीच संगीता माँ के समझाने पर पूरे मन से पढ़ाई कर रही थी और अपने दिमाग से कॉलेज की बात को निकाल दिया था। संगीता कक्षा में अब्बल आने लगी और बाकी सभी प्रकार की चीज़ों में भी वह आगे थी। जब एक साल बीत गया, तो संगीता और सुनीता एक दिन, एक साथ बाहर घूमने गए, कॉलेज के पहले तो वे एक साथ खूब घूमा करते लेकिन अब अलग कॉलेज होने के कारण उन्हें एक दूसरे के साथ बहुत ही कम समय मिल पाता था। वे दोनों प्रगति मैदान घूमने गए थे, वहाँ पुस्तक मेला लगा हुआ था जिसमे विश्व के कई देशों से लोग आये हुए थे। वहाँ पर एक कंपनी एक प्रतियोगिता करा रही थी जिसमे सबसे अच्छा भाषण देने वाले को कंपनी के साथ तीन महीने काम करने का मौका मिलता।

Help

परिणाम - Results/Outcome

बेहतरीन – Outstanding, चिंतित - Worried/Anxious

साबित – Prove, प्रतियोगिता - Competition

Translation

Sunita and Sangeeta were two very good friends. Together they completed their studies and simultaneously appeared for the twelfth class examination. When the results of the twelfth class came, Sunita scored much better marks than Sangeeta, Sangeeta was very disappointed, while Sunita was on the seventh heaven. Sunita was admitted to St. Stephen's, one of the best colleges in Delhi University, and Sangeeta had to enrol in a normal college. Sangeeta became very worried about her career, she felt that she would not be able to excel after studying from a normal college and started to blame herself for all that. Sangeeta's mother realized that those days she remained a little sad and nervous. When she asked Sangeeta the reason for that, Sangeeta told that she thought Sunita would do exceedingly well and Sangeeta's journey would be near its ending. Mother called Sangeeta closer to herself and explained that it was very wrong to think so, college is just a small beginning in life and she would get lots of opportunities to prove herself. Sunita was like almost spoilt; travelling around and partying till late night had become her habit. From studies or anything related to it, now she had no relation with, she was distant from it. In college exams too, she started to pass by wrong means, she had stopped studying, so how would she be able to answer the questions. In the midst of all this, Sangeeta was studying wholeheartedly as advised by her mother and removed the college thing from her mind. Sangeeta started topping the class and was excelling in all other types of activities as well. When a year passed, Sangeeta and Sunita went out for a day together, before college, they used to travel a lot together but now due to being indifferent colleges, they could get very little time with each other. They both went to visit Pragati Maidan, there was a book fair in which people from many countries of the world had come. There, a company was conducting a competition in which the best speaker would get a chance to work with the company for three months.

TRANSLATION EXERCISE # 16

सुनीता और संगीता दोनों ही अच्छा बोलती थीं लेकिन अभी काफी समय से मौज - मस्ती करने के कारण सुनीता को भाषण देने की आदत नहीं थी। वहीं संगीता हर चीज़ में आगे रहती थी जिसके कारण उसने बहुत ही ज़बरदस्त भाषण दिया, सुनीता ने भी ठीक - ठाक बोला लेकिन अब उसमें वो वाली बात नहीं थी जो कुछ साल पहले हुआ करती थी। भाषण के परिणाम आये तो संगीता को प्रथम पुरस्कार मिला और वायदे के अनुसार कंपनी के साथ काम करने का मौका। सुनीता को तो जैसे इससे कोई फर्क ही नहीं पड़ रहा था, उसने संगीता को बधाई तक नहीं दी। लगता है बड़े कॉलेज में आने से सुनीता के अंदर थोड़ा घमंड भी आ गया था, अपने आगे वह किसी और को कुछ समझती ही नहीं थी। सुनीता ने इस बात का बुरा नहीं माना और वे दोनों ने उसके बाद पूरा मेला घूमा, खाना खाया और अंत में घर वापिस आ गए। संगीता ने कंपनी में चुने जाने की बात अपनी माँ को बताई तो माँ बहुत खुश हुई। उन्होंने कहा कि यह सब उसकी मेहनत का नतीजा है और अगर वह इसी प्रकार से लगातार मेहनत करते रही तो ज़रूर सफल होगी। संगीता ने पूरे तीन महीने उस कंपनी में कड़ी मेहनत की और उसके प्रयास का नतीजा ये रहा कि वहाँ के सबसे बड़े अधिकारी ने उससे प्रसन्न हो कर, उसे दिल्ली हेड ऑफिस में उसकी सिफारिश कर दी। दो महीने बाद, उसका हेड ऑफिस में इंटरव्यू था और अब संगीता पूरे दिल और जान से उसकी तैयारी में लग गयी। वहीं दूसरी तरफ, सुनीता उसी तरह इधर - उधर घूमते रही और अपना कीमती समय व्यर्थ करते रही। दो महीने बाद, संगीता का इंटरव्यू हुआ और उसने बड़े ही शानदार तरीके से सारे जवाब दिए। उसे डेढ़ साल बाद, कॉलेज खत्म होने के बाद, कंपनी ज्वाइन करने का प्रस्ताव मिल गया। संगीता ने यह खुशी सब से बांटी और सुनीता को भी यह खबर सुनाई। सुनीता ने सोचा कि अभी भले ही संगीता को नौकरी मिल गयी हो लेकिन सुनीता को उससे अच्छी और कहीं बेहतर नौकरी मिलेगी।

Help

भाषण - Speech

ज़बरदस्त - spectacular

अनुसार - According to

घमंड - haughtiness

नतीजा - Outcome

सिफारिश - Recommendation

कीमती - Precious

व्यर्थ - Waste

शानदार - Great/Brilliant

Translation

Both Sunita and Sangeeta used to speak well but Sunita was not used to giving speeches for quite some time due to her time wasted in doing fun and frolic. While Sangeeta was excelling in everything, due to which she gave a very spectacular speech, Sunita also spoke well but now she did not have the same charm that was there a few years back. When the results of the speech came, Sangeeta got the first prize and the chance to work with the company as promised. It was like Sunita was unaffected by all this, she did not even congratulate Sangeeta. It seemed that Sunita had developed a sense of haughtiness after coming to such a renowned college, she considered herself to be the supreme and didn't value anyone. Sunita did not mind this thing and both of them then went around the whole fair, ate food and finally returned home. When Sangeeta told her mother about her selection in the company, her mother became extremely happy. She said that all this was the result of her hard work and if she continued to work in this way, she would surely succeed. Sangeeta worked hard in the company for the entire three months and the result of her efforts was that the senior-most officer there was impressed by her, he recommended her name to the Delhi Head Office. After two months, she was to be interviewed at the head office and now Sangeeta was wholeheartedly preparing for the same. On the other hand, Sunita wandered around like that and wasted her precious time. Two months later, Sangeeta was interviewed and gave all the answers in a great way. A year and a half later, after finishing college, she received the proposal of joining the company. Sangeeta shared her happiness with everyone and told this news to Sunita as well. Sunita thought that even though Sangeeta had got a job now, Sunita would get a decent and better job than that.

TRANSLATION EXERCISE # 17

एक साल के बाद, जब सुनीता के कॉलेज में कम्पनियाँ आयी तब सुनीता ने सभी कम्पनियों का फॉर्म भर दिया। उसने हर जगह प्रयास किया कि उसे कहीं अच्छी जगह नौकरी मिल जाये। कड़ी मेहनत के बाद, उसे निराशा ही हाथ लगी, उसे हर जगह से ना ही सुनने को मिला और ऐसा तो होना ही था क्योंकि उसने अपने कॉलेज का पूरा समय बस मौज मस्ती में ही निकल दिया। अब बहुत ही दुखी मन से वह संगीता के पास आयी और उसे अपनी पूरी कहानी बताई। संगीता को यह सुनकर बहुत बुरा लगा कि इतने अच्छे कॉलेज में होने के बावजूद सुनीता को खाली हाथ आना पड़ा। संगीता ने सुनीता को समझाया कि किस तरह उसने अपने पूरे कॉलेज के दौरान केवल मौज मस्ती की और पढ़ाई या किसी भी अन्य कला पर ध्यान नहीं दिया। सुनीता को यह महसूस हुआ कि संगीता सही कह रही थी और उसे इस बात का बहुत पछतावा हुआ। संगीता ने सुनीता को बताया कि उसके कंपनी में कुछ पद खाली हैं और सुनीता उनके लिए इंटरव्यू दे सकती है। सुनीता ने उन सभी पद के लिए फॉर्म भर दिया, संगीता की मदद से और अपनी मेहनत से उसने खूब अच्छी तैयारी कर ली। कुछ दिन बाद, जब इंटरव्यू के परिणाम आये तो सुनीता भी उस कंपनी के लिए चुन ली गयी। सुनीता की आँखों में खुशी के आँसू थे और उसने संगीता से माफ़ी माँगी। सुनीता ने संगीता को कहा कि वह काफी घमंडी हो गयी थी क्योंकि उसे सर्वश्रेष्ठ कॉलेज मिला था। वह यह सोचती थी कि अब तो उसे बिना किसी मेहनत के ही सफलता मिल जाएगी। सुनीता और संगीता फिर से बहुत अच्छे दोस्त बन गए और दोनों पूरी मेहनत से काम करने लगे।

Help

प्रयास - Efforts

दुखी मन - heavy heart

पछतावा - regret

खाली - vacant

घमंडी - Arrogant/haughty/proud

सर्वश्रेष्ठ - Best

Translation

After one year, when companies came to Sunita's college, Sunita filled the form of all the companies. She tried everywhere to get a job somewhere. After so much of hustle, she was left disappointed, she had to face rejections from everywhere and it was bound to happen because she spent the entire time of her college just enjoying and having fun. Then, she came to Sangeeta with a very heavy heart and told her the entire story. Sangeeta felt extremely sorry to hear that despite being in such a good college, Sunita had to go empty-handed. Sangeeta explained Sunita how she only enjoyed and had fun during her entire college and did not focus on studies or any other field. Sunita realized that Sangeeta was right and she regretted it. Sangeeta told Sunita that some positions were vacant in her company and Sunita could give an interview for them. Sunita filled the form for all those posts, with the help of Sangeeta and hard work she prepared very well. A few days later, when the results of the interview came, Sunita was also selected for that company. Sunita had tears of joy in her eyes and apologized to Sangeeta. Sunita told Sangeeta that she had become very arrogant as she got the best college. She used to think that now she would get success without any hard work. Sunita and Sangeeta became very good friends again and both started working hard.

TRANSLATION EXERCISE # 18

पटना में एक पंद्रह साल का लड़का रहता था, जिसका नाम पंशुल था। वो बहुत अच्छा फुटबॉल खेलता था। पंशुल के पिताजी एक सरकारी कार्यालय में काम करते थे और वो उससे बहुत प्यार करते थे। पंशुल शुरू से ही पढ़ाई में बहुत तेज़ था लेकिन उसे पढ़ाई से ज्यादा फुटबॉल खेलने में मज़ा आता था। उसके पिताजी को यह बात अच्छे से पता थी पर वो नहीं चाहते थे कि पंशुल फुटबॉल में अपना करियर बनाये। दरअसल, भारत में क्रिकेट को छोड़ कर बाकी किसी भी खेल में बहुत ज्यादा उम्मीद की किरण नहीं नज़र आती। जब पंशुल के बोर्ड का परिणाम आया, तो उसके बहुत अच्छे अंक आये और उसने पूरे जिले में टॉप किया। उसके परिणाम देख कर, घर में सब ने उसकी बहुत तारीफ की और उसके पिताजी को सब ने उसे इंजीनियरिंग या मेडिकल के क्षेत्र में भेजने की सलाह दी। बिहार, खास तौर पर आई आई टी में होनहार विद्यार्थी देने के लिए जाना जाता है। इस बात को जानते हुए, पंशुल के पिता ने उसे इसी की तैयारी कराने का फैसला किया। पंशुल को पढ़ाई में कोई परेशानी तो नहीं होती थी लेकिन उसे सबसे ज्यादा मज़ा खेलने में ही आता था। जब उसका परिणाम आया तो उसने पिताजी से कहा कि वह भारतीय अंडर - 17 टीम के लिए खेलना चाहता है, वह पहले ही बिहार की टीम से राज्य स्तर पर खेलता था। पिताजी ने पंशुल को साफ़ निर्देश दिया कि वह फुटबॉल से ध्यान हटा कर अब पूरा ध्यान पढ़ाई पर लगा दे। पंशुल ने पिताजी को बहुत समझाने की कोशिश की लेकिन उसकी एक न सुनी गई। पंशुल ने हार मान कर पिताजी की बात मान ली और फुटबॉल का सपना छोड़ दिया। जब कोचिंग शुरू हुआ तब पंशुल की पढ़ाई काफी अच्छी चल रही थी लेकिन धीरे - धीरे उसके प्रदर्शन में गिरावट आना शुरू हुआ और एक साल के अंत तक, मानो वो सबसे ऊपर से सबसे नीचे खिसक गया हो। पंशुल के पिताजी को उसकी चिंता होने लगी और उन्होंने पंशुल से बात करने का सोचा। पिताजी जानना चाहते थे कि पढ़ाई में इतने अच्छे रहे उनके बेटे का प्रदर्शन अचानक से ही कैसे खराब हो गया?

Help

बहुत अच्छा - extremely well

कार्यालय - office

उम्मीद - Hope

प्रभावित - Influenced

गिरावट - Decline

खराब - Deteriorate

Translation

A fifteen-year-old boy lived in Patna named Panshul. He used to play football extremely well. Panshul's father worked in a government office and loved him very much. Panshul was very bright in studies right from the beginning but he enjoyed playing football more than his studies. His father knew this very well but he did not want Panshul to pursue a career in football. Actually, in India, there is not much hope in any other game except cricket. When the result of Panshul's board exams got declared, he scored very good marks and topped the entire district. Seeing his results, everyone in the house praised him very much and advised his father to send him to the engineering or medical field. Bihar is known for producing brilliant students, especially in IIT. Knowing this, Panshul's father decided to make him prepare for the same. Panshul did not have any problem in studies but he used to enjoy playing the most. When his results came, he told the father that he wanted to play for the Indian Under-17 team; he had already played at the state level with the Bihar team. Father gave clear instructions to Panshul that he should focus on studies, shifting his focus from football. Panshul tried to convince father a lot but he was not listened to. Panshul gave up on his father and gave up his dream of football. When coaching started, Panshul's studies were going very well but gradually his performance started to decline and by the end of one year, it was like he had slipped from the top to the bottom. Panshul's father began to worry about him and thought to talk to Panshul. Father wanted to know how his son's performance in academics, which was so good had suddenly deteriorated.

TRANSLATION EXERCISE # 19

पिताजी ने पंशुल से पूछा कि आखिर उसके पढ़ाई में प्रदर्शन में गिरावट की वजह क्या है। पंशुल ने कहा कि उसे सब समझ आता है और ज़्यादा कठिनाई भी नहीं होती है लेकिन उसे पढ़ने में इतना मन नहीं लगता। पिताजी समझ गए कि पंशुल के सर से अब तक फुटबॉल का भूत नहीं उतरा है। उन्होंने पंशुल को अपनी फुटबॉल प्रैक्टिस फिर से शुरू करने को कहा और साथ ही साथ अपनी पढ़ाई भी जारी रखने को कहा। पंशुल के अंक फिर से बढ़ना शुरू हो गए और फुटबॉल में तो वह पहले ही से माहिर था। एक साल बाद जब भारतीय अंदर 17 टीम में चुनाव की बात आयी तो स्थिति थोड़ी सी गंभीर हो गयी। अब पंशुल के बारहवाँ के बोर्ड एजाम और ट्रायल एक ही साथ होने वाला था। पंशुल ने दोनों पर बराबरी का ध्यान दिया और उसके बहुत अच्छे अंक आये। अब बारी थी ट्रायल की, कड़े परिश्रम के बाद पांशुल ने मैच में घुटने में चोट लगने के बावजूद दो गोल किये और अपनी टीम को जीत दिलाई। उसके इस जु़झारूपन और खेल के प्रति समर्पण को देख कर उसे भारतीय टीम में जगह मिल गयी। जब पिताजी ने यह देखा कि पंशुल बुरी तरह घायल होने के बावजूद मैच से बाहर होने के बजाय खेल में बना रहा और शानदार प्रदर्शन किया तो उन्होंने अपने फैसले पर फिर से सोचा। पिताजी ने पंशुल से पूछा कि वह आखिर क्या करना चाहता है। पंशुल के खेल के प्रति रुझान और समर्पण के साथ साथ पंशुल के फुटबॉल को लगाव को देख कर पिताजी ने उसे फुटबॉल में करियर बनाने की अनुमति दे दी। इस सब के साथ पिताजी ने एक शर्त ज़रूर रखी कि अगर वह फुटबॉल का रास्ता चुन रहा है तो उसे पूरी लगान और श्रद्धा से मेहनत करे।

Help

गिरावट - decline

परिश्रम - hard work

जु़झारूपन - combativeness

समर्पण - dedication

लगाव - interest/fondness

श्रद्धा - devotion

Translation

Father asked Panshul what was the reason behind the decline in performance in his studies. Panshul said that he understood everything and did not have much difficulty but he did not feel much interested in studying. Father understood that the mania of football hadn't left Panshul. He asked Panshul to resume his football practice and to continue his studies as well. Panshul's marks started improving again and he was already adept in football. A year later, when the matter of selections in Indian Under 17 teams came, the situation became a bit serious. Now the twelfth board exams and trials of Panshul's were to be held simultaneously. Panshul paid equal attention to both and got very good marks. Now it was time for the trials, after hard work, Panshul scored two goals in the match despite a knee injury and led his team to victory. Seeing his combativeness and dedication towards the game, he got a place in the Indian team. When father noticed that Panshul continued playing the game rather than pulling out of the match despite being badly injured, he reconsidered his decision. Father asked Panshul what he wanted to do. Seeing Panshul's interest in sports and his passion for football, father allowed him to pursue a career in football. With all this, father made a condition that if he was choosing the path of football, then he should work with dedication and devotion.

TRANSLATION EXERCISE # 20

अभय और हितेश जुड़वा भाई थे। दोनों हर काम एक साथ करते थे, खाने से लेकर सोने और पढ़ने तक, सब कुछ दोनों साथ ही करते थे। पूरे मोहल्ले में सब लोग दोनों को बहुत अच्छे से जानते थे, यहाँ तक कि अपने स्कूल में भी वे बहुत प्रसिद्ध थे। दरअसल, जुड़वा होने के कारण वो दोनों इतने ज्यादा एक जैसे दिखते थे कि दोनों में फर्क कर पाना बहुत ही मुश्किल था। यहाँ तक कि इनके माता पिता भी कभी - कभार इन दोनों को पहचानने में गलती कर देते थे। इससे कई परेशानी भी होती थी, अभय की गलती पर हितेश को डाट पड़ जाती और कभी - कभी हितेश के लिए लाई हुई चीज़ अभय को मिल जाती। एक बार क्या हुआ कि घर में चोर घुस आया, सब लोग सो रहे थे तो किसी को पता भी नहीं लगा। चोर दबे पाँव सारे सामान अपनी झोली में डाल कर निकलने ही वाला था कि तभी अभय की नींद खुल गयी। चुप के से जा के जब उसने देखा, तो चोर सारा सामान बाँध रहा था और बाहर निकलने की तैयारी कर रहा था। उसने हितेश को धीरे से नींद से जगाया और उसे पूरी बात बता के एक तरकीब बनाई। वह अचानक से चोर के सामने एक सफेद चादर पहन कर आ गया। चोर उसे देख कर थोड़ा डर गया, अभय ने अपने चेहरे से चादर उठाया तो उसे देख चोर हँसने लगा। चोर को लगा कि एक छोटा बच्चा भला उसका क्या बिगाड़ पायेगा। अभय ने उसे कहा कि वो भूत है और तभी हितेश पीछे से हँसने लगा, यह देखकर चोर घबरा गया। एक ही शक्ल के दो लोग एक साथ देख कर, चोर का दिमाग काम करना बंद हो गया, वह बेहोश हो गया। इसके बाद दोनों बच्चों ने पहले माँ पापा को जगाया और फिर उसके बाद सबने पुलिस को फोन किया। पुलिस ने आकर चोर को पकड़ा और साथ ही साथ बच्चों को उनकी बहादुरी के लिए उनकी बहुत प्रशंसा की। आने वाले 26 जनवरी के लिए बहादुर बच्चों को दिए जाने वाले पुरस्कार में अभय और हितेश का नाम पुलिस द्वारा प्रस्तावित किया गया। अभय और हितेश की इस होशियारी से मोहल्ले के सभी बच्चे बहुत प्रोत्साहित हुए।

Help

जुड़वा - twins

मोहल्ले - neighbourhood

प्रशंसा - Appreciation

बहादुरी - Bravery

प्रस्तावित – Proposed

होशियारी - Smartness

Translation

Abhay and Hitesh were twin brothers. Both used to do everything together, from eating to sleeping and reading, they used to do everything together. Everyone knew the two very well in the whole neighbourhood; even in their school they were pretty famous. Actually, due to being twins, they both looked so much alike that it was very difficult to differentiate between them. Even their parents sometimes made a mistake in identifying these two. There were many problems created due to this, Hitesh was scolded for Abhay's mistake and sometimes Abhay would get something brought for Hitesh. Once it happened that a thief entered the house, everyone was sleeping, no one even came to know. The thief was about to leave with all the belongings in his bag when Abhay woke up. When he sneaked without making any noise, the thief was packing everything and preparing to go out. He woke Hitesh slowly and made a plan by telling him the whole thing. He suddenly appeared in front of the thief covering himself in a white bed sheet. The thief got a little scared to see him, Abhay removed the bed sheet from his face and the thief started laughing to see it. The thief felt that what a small child would not be able to do much against him. Abhay told him that he was a ghost and then Hitesh started laughing from behind, seeing that the thief got scared. Seeing two people of the same appearance together, the thief's brain stopped working, he fainted. After this, both the children first woke up their parents and then after that everyone called the police. The police came and apprehended the thief and along with that praised the children for their bravery. The name of Abhay and Hitesh was proposed by the police in the award to the brave children for the then coming 26 January. All the children of the locality were greatly encouraged by this smartness of Abhay and Hitesh.

TRANSLATION EXERCISE # 21

एक बार की बात है, शिवम नाम का लड़का रस्ते पर से जा रहा था। उसे माँ ने बाजार से चावल और सब्जियाँ लाने को कहा था। माँ ने कहा था कि एक घंटे के अंदर घर आ जाना नहीं तो बहुत डांट पड़ेगी। शिवम को बाजार में भीड़ होने के कारण काफी समय लग गया। माँ को दरअसल घर आ रहे कुछ मेहमानों के लिए खाना बनाना था, घर में राशन खत्म होया हुआ था। जब सारा काम निपटा कर शिवम घर की ओर जा रहा था तब उसने देखा कि एक लाचार सा दिख रहा कुत्ता सड़क किनारे कराह रहा था। उसके पास जाने पर, शिवम ने पाया कि उसके पैर पर किसी ने गाड़ी चढ़ा दी थी जिससे उसका पैर बुरी तरह घायल हो गया था। उसके पैर से बहुत खून बह रहा था और शायद उसका दर्द बदशत के बाहर था। शिवम ने समय की चिंता न करते हुए तुरंत ही पास की एक दवाई की दुकान से पट्टी और दवाई खरीदी। अपने दोस्त शिवानी को उसने फ़ोन करके बुलाया ताकि वो थोड़ी मदद कर सके। शिवानी का घर वहीं पास में ही था और उसके साथ ही साथ शिवानी के घर पे भी एक कुत्ता था तो उसे कुत्तों के बारे में थोड़ी सी जानकारी थी। शिवानी अपने घर से कुत्तों का खाना और कुछ कपड़े ले कर आई। शिवानी और शिवम ने मिलकर पहले उस कुत्ते के पैर पर पट्टी लगायी और उसके बाद उसे कुछ कपड़े पहनाये। ठंड बहुत होने के कारण भी कुत्ता बाहर बैठे हुए बीमार पड़ सकता था। शिवानी ने जो कुत्तों का खाना लाया था वो उस कुत्ते को खिलाया और उसके बाद उसे पानी भी पिलाया। इसके बाद उन्होंने एनिमल केयर संस्थान को फ़ोन किया, वे आये और उन्होंने शिवम और शिवानी की बहुत प्रशंसा की। वे सही सलामत उस कुत्ते को अपने साथ ले गए। यह सब करते करते पूरे दो से तीन घंटे निकल गए और माँ घर पर शिवम का इतने देर से इंतज़ार कर रही थी। शिवम दौड़ा - दौड़ा घर पहुँचा तो देखा कि सारे मेहमान लज़ीज़ खाना खा रहे हैं। दरअसल, हुआ ये था कि शिवानी के घर शिवम की माँ ने फ़ोन किया था तो उन्हें पता चला की उनका बेटा कितना नेक काम कर रहा है। शिवानी की माँ शिवम के घर सामान ले कर आ गयी और दोनों ने मिलकर मेहमानों के लिए खाना बनाया। यह सब सुन कर शिवम हैरान रह गया लेकिन उसे खुशी इस बात की थी कि उसने एक बेसहारा जानवर की मदद की और माँ का काम भी बिना किसी रुकावट के पूरा हो गया।

Help

डांट - Scolding

लाचार - helpless

कराह - Moan

बदशत के बाहर - Unbearable

प्रशंसा - Appreciation

नेक - Noble

हैरान - Shocked

लज्जी़ज़ - Delicious/Sumptuous

रुकावट - Obstruction

Translation

Once upon a time, a boy named Shivam was walking on the road. He was asked by his mother to bring rice and vegetables from the market. Mother had said that if she did not come home within an hour, he would be scolded. Shivam took a long time due to the excessive crowding in the market. The mother had to cook for some of the guests coming home, grocery items were over in the house. When Shivam was going towards the house after doing all the work, he saw that a helpless looking dog was moaning along the road. Upon getting closer to him, Shivam found that someone had run a car over his leg, which severely injured his leg. There was a lot of bleeding from his leg and perhaps his pain was unbearable. Shivam, without worrying about time, immediately bought bandages and medicine from a nearby medicine shop. He called his friend Shivani so that she could help a little bit. Shivani's house was nearby and there was a dog at Shivani's house as well, so she had some knowledge about dogs. Shivani brought the dogs' food and some clothes from her house. Shivani and Shivam put a bandage on that dog's feet first and then put him on some clothes. The dog could have gotten sick from sitting outside due to the cold. The dogs' food that Shivani brought was fed to that dog and then she also fed him water. After this he called the animal care organisation, they came and praised Shivam and Shivani very much. They took the dog safely with them. While doing all this, the two to three hours passed and Mother was waiting for Shivam at home for so long. Shivam hurried home and saw that all the guests were eating delicious food.

What happened is that Shivam's mother called at Shivani's home, then she came to know about the noble work her son was doing. Shivani's mother brought items to Shivam's house and the two together cooked food for the guests. Hearing about all this, Shivam was left shocked but he was happy for the cause that he helped a homeless animal and his mother's work was also sorted out without any obstruction.

TRANSLATION EXERCISE # 22

हर्षद वर्मा एक बहुत बड़ा व्यापारी थी और उसका करोड़ों का कारोबार था। उसका हीरे और सोने का सूत में बहुत बड़ा उद्योग था, बाजार में उसका सिक्का चलता था। बड़े बड़े नेताओं से लेकर बॉलीवुड अभिनेता, सबसे उसकी जान पहचान थी। देश के सबसे रईस लोगों में उसकी गिनती होती थी और सब उसकी बड़ी इज़्ज़त करते थे। कहते हैं इंसान का ईमान ही उसका सबसे मूल्यवान वस्तु होती है, न कि कोई महँगी चीज़ या पैसा। उद्योग में कई प्रकार के सौदे और घोटाले रोज़ सामने आते थे लेकिन हर्षद की गरिमा पर किसी भी प्रकार का कोई भी कीचड़ नहीं था। भारत के साथ - साथ जर्मनी, फ्रांस और इंग्लैंड जैसे बड़े बड़े देशों में भी हर्षद का व्यापार फैला हुआ था। इतने धनवान होने के बावजूद, हर्षद पैसों की लालच में आकर एक गलती कर बैठा। उसे अमेरिका में नए सिरे से अपना धंधा शुरू करना था, न्यूयॉर्क और कैलिफ़ोर्निया जैसी महँगी जगहों पर व्यापार शुरू करना बहुत ही महँगा सिद्ध होता है। कई हज़ार करोड़ की ज़रूरत थी, हर्षद ने सोचा कि कहीं न कहीं से व्यापार में से ही पैसे निकल आएँगे। रकम काफ़ी बड़ी थी और हर्षद बहुत ही आत्मनिर्भर आदमी था, उसने किसी से मदद माँगना सही नहीं समझा। उसके दिमाग में एक चाल आई, यह गैर कानूनी तो था लेकिन यह करके उसे बहुत बड़ा फायदा होता और शायद वह भारत में सबसे अमीर आदमी भी बन जाता। उसने एक सरकारी बैंक से उधार पर दो हज़ार करोड़ रूपए लिए, उसका नाम बहुत बड़ा था और वह अरबपति था तो उसे पैसे उधार देने में बैंक को कोई संदेह नहीं हुआ। पूरा व्यापार स्थापित करने के बाद हर्षद ने बैंक के एक कर्मचारी को पाँच करोड़ की घूस देकर उस दो हज़ार करोड़ से जुड़े हर कागज़ को गायब करवा दिया। जब बैंक में हड़कंप मचा तो पता लगा कि हर्षद वर्मा के दो हज़ार के उधार से जुड़े सारे कागज़ गायब हैं, सभी कर्मचारी हैरान थे। बैंक कंगाल हो गया और कई मासूम लोगों के पैसे डूब गए जिनमें कई लोगों की मेहनत की कमाई भी शामिल थी।

Help

बड़ा - renowned

कारोबार - business

सिक्का चलता था - ruled the roost

घोटाले - scams

गरिमा - dignity

सिद्ध - Prove

घूस - Bribe

हड़कंप - Furore/Uproar

हैरान - Astonished

कंगाल - Bankrupt

Translation

Harshad Verma was a renowned businessman and had a business worth crores. He had a huge business empire of diamonds and gold in Surat, he ruled the roost in the market. Ranging from big leaders to Bollywood actors, he had connections with all of them. He was counted among the richest people of the country and all respected him. It is said that a person's faith is his most valuable thing, not an expensive thing or money. Various sorts of deals and scams used to come up in the industry daily but Harshad's dignity remained unscathed. Along with India, Harshad's trade was spread in big countries like Germany, France and England. Despite being so rich, Harshad being greedy for money made a mistake. He had to start his business in America afresh, starting a business in expensive places like New York and California proves very costly. Hundreds of thousands of crores were needed, Harshad thought that money would come out of business from somewhere. The amount was quite huge and Harshad was a very self-sufficient man, he thought it was not right to ask for help from anyone. A trick came in his mind, it was illegal but by doing this he would have benefited a lot and he would probably also become the richest man in India. He took two thousand crore rupees on a loan from a government bank, he was renowned and he was a billionaire, so the bank was not sceptical in lending money to him. After setting up the entire business, Harshad gave a bribe of five crores to an employee of the bank and made every document related to that two thousand crores disappear. When there was a furore in the bank, it was found out that all the documents related to the two thousand crore rupees loan had gone missing, all the bank employees were astonished. The bank had gone bankrupt and many innocent people lost their money out of which many of them lost their hard-earned money.

TRANSLATION EXERCISE # 23

सौरव मेरठ में रहने वाला एक सीधा - साधा लड़का था। पढ़ने में सामान्य था, लेकिन उसे कलाकारी करने का बड़ा शैक्षणिक था। नाचना, गाना और अभिनय करना उसके लिए सबसे प्रिय थे। एक बार उसका एक बनाया हुआ वीडियो यूट्यूब पर वायरल हो गया, कई हजार लाइक्स और कमैंट्स की जैसे बारिश होने लगी। सौरव अचानक से रातों रात स्टार बन गया, उसे कई दोस्तों के फ़ोन आने लगे। सौरव की तो जैसे दुनिया ही बदल गयी थी, उसे लगा कि वो बहुत बड़ा अभिनेता या जानी - मानी हस्ती बन चुका है। उसने पढ़ाई लिखाई सब छोड़ कर वीडियो बनाना शुरू कर दिया। अपने कुछ और दोस्तों की मदद से उसने और कई वीडियो बनाये और उसके वीडियो कई दिन तक ट्रेंडिंग होते रहे। इन सब के बीच वह अपने परिवार और बाकी दोस्तों से कितना दूर चला गया, इस बात का उसे ज़रा सा भी एहसास नहीं हुआ। वो न किसी से कुछ बात करता, न साथ में खाना खाता, बस दिन भर अपने कमरे में बंद रहता और वीडियो की शूटिंग करने में व्यस्त रहता। उसके माता पिता को स्कूल से फ़ोन भी आया कि आज कल सौरव बहुत ही गुमसुम सा रहने लगा है, किसी से ज़्यादा बात नहीं करता और अकेले ही रहना पसंद करता है। पिताजी ने बहुत सोचा लेकिन उन्हें इसका कोई ठोस उपाय नहीं सुझा जिससे सौरव के सर से ये वीडियो और वायरल का भूत उत्तर जाए। एक दिन जब सब खाना खा रहे थे तब अचानक से सौरव का दोस्त आया और सबको पकड़ कर छत के नीचे ले आया। जब सब आये तो सब ऊपर देख कर हैरान रह गए, सौरव छत के किनारे खड़ा था और अपने कूदने के सीन को वो कैमरे में कैद कर रहा था। सौरव के पिता फौरन छत की तरफ भागे और इससे पहले कि सौरव अपना एक भी कदम आगे बढ़ाये, उसे उसके पिता ने पकड़ कर छत पर गिरा दिया। सौरव को लगा उसके पिता उसे मारेंगे लेकिन उसके पिता ने मारने के बजाय उससे एक सवाल पूछा। उन्होंने उससे यह सोचने को कहा कि आज अगर वो गिर कर घायल हो जाता तो उसके ऊपर और घरवालों के ऊपर क्या बीतती। पिताजी ने समझाया कि एक दो दिन में कभी भी कोई प्रसिद्ध नहीं बनता, कई सालों की कड़ी मेहनत और परिश्रम के बाद जाकर ही कहीं सफलता हाथ लगती है। चाहे यह सचिन तेंदुलकर हो या कल्पना चावला, सब ने निरंतर प्रयास और मेहनत से अपनी मंज़िल पाई है।

Help

सीधा - साधा – simple, सामान्य - average

हस्ती - well-known figure/celebrity

प्रसिद्ध – famous, मेहनत - diligence

निरंतर - continuous/consistent

मंज़िल - goal

Translation

Saurav was a simple boy who lived in Meerut. He was average in academics, but he was very fond of doing creative arts. Dancing, singing and acting were most dear to him. Once one of his made videos went viral on YouTube, as thousands of likes and comments started pouring in. Sourav suddenly became a star overnight, he started getting calls from many friends. It was as if Sourav's world had changed, he felt that he had become an imminent actor or well-known figure/celebrity. He left his studies and started making videos. With the help of some of his other friends, he made many more videos and his videos kept trending for many days. In the midst of all this, he did not even realize how far he had gone from his family and other friends. He would not talk to anyone, nor would he eat together, just remained locked in his room all day and remained busy shooting videos. His parents also got a call from the school that off late Sourav was being pretty quiet, did not talk to anyone much and liked being alone. Father thought a lot but he was not able to find any concrete solution to this so that the video and the craze of viral videos got off Sourav's head. One day while everyone was eating food, suddenly Sourav's friend came and took everyone under the roof. When everyone came there, all were surprised to see above, Sourav was standing on the side of the roof and was trying to shoot his jumping scene in the camera. Saurav's father immediately ran towards the roof and before Sourav could take a single step forward, his father caught him and pushed him on the roof. Sourav thought his father would beat him but his father asked him a question instead of beating him. He asked him to think about what would have happened to him and the family if he had fallen and been injured today. Father explained that just in a couple of days, no one ever becomes famous, after going through many years of hard work and diligence, success is achieved at last. Whether it is Sachin Tendulkar or Kalpana Chawla, everyone has achieved the goal through continuous effort and hard work.

TRANSLATION EXERCISE # 24

भारत में एक पहाड़ी जगह है, लेह, जो कि बहुत ही सुन्दर और अद्भुत है। बर्फ की चादर से वह साल भर ढके ही रहती है, मौसम इतना सुहाना रहता कि यहाँ पर सैलानिओं की भारी भीड़ रहती है। ऐसी खूबसूरत वादियों के बीच, घर था होनहार और विज्ञान में रूचि रखने वाले कबीर का, वह केवल ग्यारह साल का था। उसके माँ - बाप चरवाहे थे, गाय और बकरियों को चराने ले जाते थे, जो उनके दूध से पैसे आये उसी से घर चलता था। कबीर भी अक्सर गाय चराने और भेड़ों को चराने जाया करता था, उसे मन मोहक दृश्य रोमांचित तो करते थे लेकिन उससे भी ज्यादा उसे आसमान में चमचमाते हुए तारे और आसमान का नीला रंग, उसे ज्यादा आकर्षित करता था। कक्षा में भी वह बाकी सारे विषय उतने ध्यान से नहीं पढ़ता था, लेकिन विज्ञान की कक्षा में वह पूरे ध्यान के साथ सुनता था और समझने की कोशिश करता था। एक दिन उसने देखा कि उसके दौड़ने से उसे ऐसा लग रहा था कि चाँद उसके साथ चल रहा था। जैसे ही वो भागता, वो चाँद की तरफ देखता, चाँद को देख कर वो हैरान हो जाता। एक दिन उसने अपने शिक्षक से पूछ ही लिया कि आखिर चाँद हमारे साथ कैसे चलता है? शिक्षक ने कबीर को समझाया कि दरअसल धरती हर समय धूमते रहती है, हर पल चाहे हम सो रहे हों या दौड़ रहे हों। यह सुनकर कबीर और ज्यादा सोच में पड़ गया, उसने सोचा कि अगर धरती धूमती है तो हमें पता क्यों नहीं लगता? उसने शिक्षक से यह पूछा तो शिक्षक ने उसे गुरुत्वाकर्षण के नियम के बारे में बताया। कबीर बहुत ही ध्यान मग्न हो कर इन सब के बारे में और ज्यादा समझने लगा। धीरे-धीरे और चीज़ें जानने और समझने के बाद, कबीर अब और दिलचस्पी के साथ विज्ञान की पढ़ाई करने लगा। चार साल बीत गए और पढ़ते पढ़ते कबीर दसवीं कक्षा में आ गया।

Help

सुन्दर - beautiful

अद्भुत - amazing

सुहाना - pleasant

भीड़ - crowd

सैलानिओं - tourists

चरवाहे - shepherds

चमचमाते - blazing

आकर्षित - fascinated

दिलचस्पी - interest

Translation

There is a hilly place in India, Leh which is very beautiful and amazing. It remains covered with snow all year round, the weather is so pleasant that there is a huge crowd of tourists here. Amidst such beautiful valleys, there was the home of sincere and science freak Kabir, who was only eleven years old. His parents were shepherds, used to take cows and goats to graze, the money that used to come from milk was used to make both ends meet. Kabir too often used to go for grazing cows and grazing sheep, he used to be fascinated by the delightful scenes but more than that he was attracted by the blazing stars in the sky and the blue colour of the sky. Even in class, he did not study all the other subjects very attentively, but in science class, he listened with full attention and tried to understand. One day he saw that while he was running, it seemed to him as if the moon was running along. As he ran, he would look at the moon, he would be surprised to see the moon. One day he asked his teacher how the moon moved with us. The teacher explained to Kabir that in fact, the earth rotates all the time, every moment whether we were sleeping or running. Hearing this, Kabir started thinking even more deeply, he thought that if the earth rotates, why didn't we realise? When he asked the teacher, the teacher told him about the law of gravitation. Kabir became very attentive and started to understand more about all these. Gradually, after learning and understanding more things, Kabir now started studying science with even more interest. Four years passed and while studying, Kabir came into the tenth standard.

TRANSLATION EXERCISE # 25

दसवीं कक्षा में दबाव बहुत था लेकिन कबीर बहुत ही होशियार था, उसके लिए ये इतना मुश्किल नहीं होने वाला था। कबीर ने उम्मीद के अनुसार, बहुत ही अच्छे अंकों के साथ दसवीं की परीक्षा पास की। अब सबसे बड़ी समस्या ये थी कि लेह जैसे इलाके में अच्छे स्कूल नहीं थे और खास तौर पर बारहवीं के लिए अच्छी शिक्षा मिल पाना लगभग नामुमकिन ही था। बाहर जाना बहुत खर्चीला था, बड़े शहर और बड़े स्कूल में नाम लिखवाने के लिए बहुत पैसे खर्च करने पड़ते और कबीर के पास या उसके माता-पिता के पास इतने पैसे नहीं थे। कबीर सोच में पड़ गया कि अब क्या किया जाए। उसने अपने कुछ क्रीड़ी दोस्तों से मदद माँगी लेकिन किसी के पास भी इतनी बड़ी रकम नहीं थी कि कबीर की पढ़ाई के लिए वो काफी हो। अंत में जाकर, कबीर को कोई उम्मीद की किरण नहीं दिखी और उसने सोचा कि शायद उसकी पढ़ाई यहीं तक की थी। कबीर बहुत ही निराश होकर अपने पिताजी से कहता है कि वह भी अब उनके साथ रोज़ बकरियां चराने चला करेगा। पिताजी को यह बात सुन कर गहरा सदमा लगा और उन्होंने अपने एक वकील दोस्त से बात की। उन्होंने कबीर के पिता को एक स्कॉलरशिप के बारे में बताया जो भारत सरकार द्वारा दी जाती है। उन्होंने कबीर के लिए उसके बारे में थोड़ी बात - चीत की। कबीर के दसवीं के नंबर बहुत ही अच्छे थे, इसका उसे बहुत फायदा हुआ और पूरे राज्य से जिन दस बच्चों को स्कॉलरशिप मिली उनमें से कबीर भी एक था। कबीर को जब यह बात पता चली तो उसके लिए जैसे उम्मीद की एक नई किरण जाग गयी थी। कबीर ने उस दिन ठान लिया कि जीवन के इस बहुत ही सुनहरे अवसर का वो पूरा फायदा उठाएगा।

Help

दबाव - pressure

होशियार - intelligent

खर्चीला - Expensive

सदमा - Shocked

सुनहरे अवसर - golden opportunity

Translation

There was a lot of pressure in class tenth, but Kabir was very intelligent, it was not going to be so difficult for him. Kabir, as expected, passed the Class tenth examination with pretty decent marks. Now the biggest problem was that there were no good schools in an area like Leh and it was almost impossible to get a good education, especially for the twelfth class. It was very expensive to go out, spend a lot of money to go to a big city and enrol in a big school, and Kabir or his parents did not have that much money. Kabir wondered what to do now. He sought help from some of his close friends, but no one had such a huge amount to get enough for Kabir's studies. In the end, Kabir did not see any ray of hope and thought that his academic career had come to an end. Kabir was very disappointed and told his father that he too would now go along with them daily for goat grazing. Dad was shocked to hear this and talked to a lawyer friend. He told Kabir's father about a scholarship that is given by the Government of India. He talked a little about that for Kabir. Kabir's tenth class marks were pretty good, he benefited immensely and Kabir was one of the ten children who got scholarships from all over the state. When Kabir came to know this, a new ray of hope arose for him. Kabir decided on that day that he would take full advantage of this very golden opportunity in life.

TRANSLATION EXERCISE # 26

शिवम इंजीनियरिंग का छात्र था, वह एक बहुत ही नामी कॉलेज में इलेक्ट्रिक इंजीनियरिंग की पढ़ाई करता था। उसके दोस्त उसे बहुत मानते थे, वे सब साथ में ही खाते, खेलते और पढ़ाई भी किया करते। होस्टल में शिवम और उसके दोस्त खूब मस्ती करते थे, सबके जन्मदिन पर सबकी पिटाई करना और होस्टल वार्डन को रात को ज़ोर से गाने बजा के परेशान करना उनके लिए बहुत आम था। सारे लड़के खूब मस्ती करते और परीक्षा के समय इतना ध्यान लगा के पढ़ते की ऐसा लगता की पूरा होस्टल ही सुनसान है। एक दिन क्या हुआ कि शिवम के दोस्त कार्तिक को खेलते खेलते चोट लग गयी। डॉक्टर के पास गए, उसने कहा कि कम से कम एक महीने का आराम ज़रूरी है। परीक्षा सर पर थी, एक सप्ताह बाद से परीक्षाएँ शुरू होने वाली थी। कार्तिक को यह सुनकर पसीने छूटने लगे, पढ़ने में कार्तिक बहुत ही होशियार था लेकिन अब ऐसी हालत में उसका पढ़ना बहुत ही मुश्किल था। कार्तिक ने शिवम से कहा कि इस बार वह परीक्षा में फेल हो जायेगा। शिवम कार्तिक की बात सुनकर हैरान हो गया, उसने उसकी मदद करने की ठानी। शिवम ने कार्तिक को समझाया कि वह चिंतित न हो और अपनी पढ़ाई पर ध्यान दे। उसकी बाकी सारे काम जैसे खाना लाना या चीज़ें रखना शिवम कर देगा। दो दिन के भीतर कार्तिक होस्टल आ गया, उसे शिवम ने अपने रूम में ही आराम करने बोला। शिवम रोज़ उसके लिए मेस से खाना लाता और उसके साथ ही साथ उसे पढ़ाता भी था। धीरे - धीरे कैसे पाँच दिन बीत गए, पता ही नहीं चला। अब परीक्षा शुरू हो चुकी थी, कार्तिक ने पूरी मेहनत से सारे पेपर दिए और उसे उम्मीद थी कि उसका परिणाम भी अच्छा ही आएगा। आखिर परिणाम उम्मीद से ज़्यादा अच्छा आया। कार्तिक का परिणाम देख कर, उसके शिक्षक थोड़े हैरान थे, आखिर उसे चोट लगी थी तो उसने पढ़ाई कैसे की। जब सबने शिवम के बारे में जाना तो सबने उसकी बहुत तारीफ की और सभी बच्चों को उससे सीख लेने को कहा। कुछ ही दिनों में कार्तिक बिलकुल ठीक हो गया और सारे काम खुद से करने लगा। जो मदद कार्तिक की शिवम ने की, उसके बाद से वे दोनों बहुत ही पक्के मित्र बन गए।

Help

नामी - prominent

आम - common

सुनसान - deserted

पसीने छूटना - Nervous

उम्मीद - Expectations

तारीफ - Appreciation

सीख - Learn

Translation

Shivam was a student of engineering; he studied electrical engineering in a very prominent college. His friends loved him a lot, they used to eat, play and study together. Shivam and his friends used to have a lot of fun in the hostel, beating everyone on their birthday and teasing the hostel warden by playing songs out loud at night. All the boys used to have a lot of fun and at the time of examination, they would study so attentively that it seemed that the entire hostel was deserted. What happened one day that Shivam's friend Karthik got injured while playing. They went to the doctor, he said that at least a month's rest is necessary. The exams were approaching, the exams were scheduled to start a week later. Hearing this, Karthik started becoming nervous, Karthik was very intelligent, but now in such a situation, it was very difficult to study. Karthik told Shivam that this time he will fail the exam. Shivam was surprised to hear Karthik, he decided to help him. Shivam explained to Karthik that he should not be worried and concentrate on his studies. All his other things like bringing food or keeping things would be done by Shivam. Within two days, Karthik came to the hostel, Shivam asked him to take a rest in his room. Shivam used to bring food for him daily from the mess and also taught him along with it. Gradually, how five days passed, it was hard to realise. Now the examination had started, Karthik gave all the exams with all efforts and he hoped that his result would also be good. Finally, the result was better than expected. Seeing the result of Karthik, his teachers were a little surprised, after all, he was injured, how did he manage to study. When everyone came to know about Shivam, they praised him a lot and asked all the students to learn from him. Within a few days, Karthik recovered completely and started doing all the work by himself. With the help of Karthik Shivam, both of them became very close friends.

TRANSLATION EXERCISE # 27

हितेश एक नौजवान था जो भारत पाकिस्तान की सीमा से सटे शहर गंगानगर में रहता था। एक दिन उसने अपने मोबाइल पे 98 रूपए का रिचार्ज कराया। उसे लगा कि उसे जो इंटरनेट मिलेगा वो पूरे 28 दिनों तक चलेगा और यह सोचकर उसने उस प्लान का रिचार्ज करा लिया। दो तीन दिनों तक उसका इंटरनेट बिना किसी रुकावट के चलते रहा। तीन दिन बाद, जब उसने अपने कॉलेज के काम से अपनी ऑनलाइन क्लासेस खोली तो वह खुल नहीं रही थी। शुरू में उसे लगा कि शायद उसका फ़ोन खुराब हो गया है, पिछले दो साल से उसका इस्तेमाल कर रहा था तो उसने सोचा कि पिताजी को बोल कर नया फ़ोन भी ले लेगा। वह यह सोच कर बहुत ही खुश हो गया था, आखिर नया फ़ोन लेने का बहाना उसे मिल गया था। उसने जब क्लास करने के लिए लैपटॉप खोला, तो उस पर भी उसे वही दिक्कत आयी। उस दिन उसका एक बहुत ही ज़रूरी टेस्ट था, उसका क्लास को ज्वाइन करना भी बहुत ज़रूरी था। उसने अपनी छोटी बहन का फ़ोन माँगा और उसके मोबाइल से क्लास ज्वाइन करके अपना टेस्ट दिया। टेस्ट खत्म होने के बाद, जब वह शांति से बैठा तब उसने सोचा कि आखिर परेशानी कहाँ आयी। थोड़ी जाँच पड़ताल करने के बाद, उसने ये पाया कि उसके मोबाइल और लैपटॉप दोनों में ही इंटरनेट नहीं आ रहा था। जब उसने अपने मोबाइल के इंटरनेट का बैलेंस चेक किया तो यह पाया कि वह तो समाप्त हो चुका है। बस तीन ही दिन हुए थे और इंटरनेट का बैलेंस समाप्त हो गया, हितेश को कुछ समझ नहीं आ रहा था। उसने इसका एक हल निकालने का सोचा, उसका एक दोस्त था भविष्य जिससे वह अक्सर सलाह लिया करता था। उसने भविष्य को पूरी बात बताई।

Help

नौजवान - young man

रुकावट - interruption

बहाना - excuse

जाँच पड़ताल - investigation

हल - solution

सलाह - consult

Translation

Hitesh was a young man who lived in Ganganagar, a city bordering India, Pakistan. One day he recharged his mobile with Rs 98. He thought that the internet he would get would last for 28 days and keeping that in mind he had recharged with that plan. For two to three days, his internet worked without any interruption. Three days later, when he opened his online classes for his college work, it was not loading. Initially, he felt that his phone might have gone out of order, he had been using it for the last two years, so he thought that he would get a new phone by speaking to dad. He was very happy thinking that he had got an excuse to get a new phone. When he opened the laptop to do class, he faced the same problem. He had a very important test that day, it was also very important for him to join his class. He asked for his younger sister's phone and joined the class from her mobile and gave his test. After the test was over, when he sat calmly, he wondered where the trouble came. After some investigation, he found that both his mobile and laptop were not getting internet. When he checked the balance of his mobile internet, he found out that it had expired. Just three days had passed and the internet balance was exhausted, Hitesh had no clue of what was happening. He thought of finding a solution to this, he had a friend named Bhavishya whom he used to consult often. He explained the whole thing to Bhavishya.

TRANSLATION EXERCISE # 28

पूरी बात सुनने के बाद, भविष्य भी सोच में पड़ गया कि आखिर तीन दिन में पूरा इंटरनेट का बैलेंस कैसे समाप्त हो गया। उसने हितेश को कस्टमर केयर से बात करने की सलाह दी। वह जनता था कि हितेश थोड़ा गर्म स्वभाव का है, तो उसने हितेश को खास तौर पर यह समझाया कि विनम्रता और शांति से अपनी समस्या कस्टमर केयर पर बताये। उसने हितेश को चीखने या चिल्लाने से खास रूप से मना किया। हितेश ने भविष्य की सलाह के अनुसार, कस्टमर केयर को बहुत ही शांति और निवेदन करते हुए अपनी पूरी आपबीती सुनाई। हितेश की बात सुनने के बाद, उसे कस्टमर केयर से यह जवाब मिला कि उस प्लान की समाप्ति तीन दिनों के अंदर ही होती है और यह उनका एक नया नियम है। यह सुनकर हितेश का पारा चढ़ गया लेकिन भविष्य की बताई हुई बात उसे ध्यान आ गयी और उसने सहमति जताकर फ़ोन रख दिया। उसने भविष्य की सलाह पर, अपने राज्य के सबसे सीनियर अधिकारी को मेल करना ठीक समझा। जब उसने अधिकारी को मेल किया तो उसने उसे कंज्यूमर कोर्ट जाने की भी बात कही। उसने लिखा कि या तो उसका डेटा उसे वापस कर दिया जाए या फिर उसके पैसे वापस कर दिए जाये, नहीं तो वो कंज्यूमर कोर्ट का रास्ता अपनाएगा। अधिकारी ने मेल देख कर यह सोचा कि अगर हितेश कंज्यूमर कोर्ट जाता है तो इससे कंपनी को और भी नुकसान हो सकता है और नाम भी खराब होगा। यह सब सोच समझ कर, अधिकारी ने हितेश के पैसे वापस करने का फैसला किया। कुछ ही घंटे बाद जब हितेश ने देखा कि उसके फ़ोन में सौ रूपए का रिचार्ज हुआ है तो उसने भविष्य का बहुत आभार माना। भविष्य ने उसे समझाया कि कभी भी किसी मुश्किल स्थिति में शांति और संयम से काम लेना चाहिए, तभी जाकर उस परेशानी का हल निकलता है।

Help

समाप्त - exhaust

गर्म स्वभाव - short tempered

विनम्रता - politely

निवेदन - request

सहमति - Agreeing

नाम खराब - tarnish image

संयम - balanced temperament

Translation

After listening to the whole thing, Bhavishya also started pondering that in the last three days, how did the entire internet balance exhaust. He advised Hitesh to talk to customer care. He was aware that Hitesh was slightly short-tempered, so he specially explained to Hitesh that he should report his problem to customer care politely and calmly. He specifically told Hitesh not to scream or shout. Hitesh, according to the advice given by Bhavishya, narrated his entire plea to the customer care very calmly and in a pleading manner. After listening to Hitesh, he got a reply from Customer Care that the plan expired within three days and this was their new rule. Hearing this, Hitesh got angry but he recalled Bhavishya's advice and he agreed with the customer care and hung up. Based on the advice of Bhavishya, he thought it was appropriate to mail the senior-most officer in his state. When he mailed the officer, he told him that he would also go to the consumer court. He wrote that either his data should be returned to him or his money should be refunded, otherwise he would knock the door of the consumer court. After seeing the mail, the officer thought that if Hitesh went to the Consumer Court, then it would hamper the company even more and the image will also be tarnished. Considering all this, the officer decided to refund Hitesh's money. A few hours later, when Hitesh saw that his phone had a recharge of a hundred rupees, he thanked Bhavishya. Bhavishya explained to him that in any difficult situation one should work cool headedly and maintain a balanced temperament, only then the problem could be resolved.

TRANSLATION EXERCISE # 29

सिद्धार्थ एक बीस साल का लड़का था और वह मेडिकल की पढ़ाई करता था। सभी युवकों की तरह, वो भी सोशल मीडिया का दीवाना था; दिन भर बस फेसबुक, इंस्टाग्राम और स्नैपचैट पर दोस्तों से बातें करता रहता। हर दिन की खाने-पीने से लेकर घूमने तक की तस्वीरें वो अपलोड किया करता था। कभी किसी के साथ नूडल्स खाये या कभी अपने दोस्तों के साथ कॉफी पीने जाए, हर चीज़ की खबर उसके परिवार से पहले बाहर वालों को हो जाती थी। वैसे तो वो बहुत ही शांत स्वभाव का था और कम ही बात करता था लेकिन सोशल मीडिया पे उसके बहुत सारे दोस्त थे। चाहे सिद्धार्थ किसी को जनता हो या नहीं, अगर किसी की भी रिकेस्ट आये तो वह इंस्टासे उसको स्वीकार कर लेता। इस प्रकार उसके फेसबुक पर दो हजार से भी ज़्यादा लोग दोस्त थे जिनमे से वह बस पचास से सौ लोगों को ही जनता था। उसके बड़े भाई और पिताजी ने उसे कई बार समझाया कि अनजान लोगों के साथ रिश्ते न जोड़े। कई बार सिद्धार्थ को अनजान लोगों से अजीब से मैसेज भी आते थे, लॉटरी के और कोई इनाम जीतने के मैसेज आते रहते थे। इन सब को वह देखता था और नज़रअंदाज़ कर दिया करता, उसे इतना पता था कि ऐसे कई लोग झाँसा देने के लिए ऐसे झूठे मैसेज भेज कर उससे पैसे ऐंठते हैं। सिद्धार्थ पढ़ने में बहुत होशियार था और सभी शिक्षकों का लाडला था। इस चीज़ के कारण कई लड़के उससे जलते थे कि वह इतना सफल है। इसके कारण कई बार उसे स्कूल में भी कुछ लड़कों ने परेशान किया था लेकिन सिद्धार्थ घबराया नहीं था और उनका मुँह तोड़ जवाब दिया था। एक दिन अचानक से सिद्धार्थ को ढेर सारे मैसेज आना शुरू हो गए, फेसबुक हो या इंस्टाग्राम, हर जगह उसे कई लोग मैसेज करने लगे। इतने सारे मैसेज देख कर वह थोड़ा डर गया, उसे लगा कि कोई बहुत बड़ी बात हो गयी है जबकि उस दिन कुछ भी ख़ास घटना नहीं हुई थी।

Help

युवकों - young people

अनजान - strangers

नज़रअंदाज़ - ignore

मुँह तोड़ जवाब - fitting reply

बहुत बड़ी बात - big deal

Translation

Siddharth was a twenty-year-old boy and studied medical sciences. Like all young people, he was also crazy about social media; he just kept talking to friends on Facebook, Instagram and Snapchat all day long. He used to upload pictures of every day from food and drinks to travelling. Eating noodles at times with someone or stepping out to drink coffee with his friends, everything was known to the outsiders before his family. Although he was very quiet and was an introvert, yet he had many friends on social media. Whether Siddharth knew a person or not, irrespective of that if anyone's request came, he would immediately accept it. In this way, he had more than two thousand friends on Facebook, out of which only fifty to a hundred people were known to him. His older brother and father explained to him many times not to make connections with strangers. Many times Siddharth used to get strange messages from unknown people, messages of lottery and of winning some prize. He used to see all this and would ignore it, he knew that many such people sent such false messages to cheat and rob money from others. Siddharth was bright in studies and was the apple of the eye of all the teachers. Due to this thing many boys were jealous of him that he was so successful. Due to this many times, he was harassed/teased by some boys even in school but Siddharth did not panic and gave a fitting reply. One day suddenly a lot of messages started coming to Siddharth, be it Facebook or Instagram, many people started messaging him everywhere. Seeing so many messages, he got a little scared, he felt that something sort of big deal had happened while nothing much happened on that day.

TRANSLATION EXERCISE # 30

उसने फिर धीरे-धीरे कर के सारे मैसेज देखना शुरू किये, उसने देखा कि सभी लोग उसे लगभग एक ही प्रकार का मैसेज कर रहे थे। मैसेज में यह लिखा था कि उसने एक बहुत ही शर्मनाक काम किया है और उसे इसके लिए बहुत पछतावा होना चाहिए। उसके समझ में ही नहीं आ रहा था कि उसने आखिर ऐसा कौन सा शर्मनाक काम किया है। उसने देखा कि सबने उसके बारे में बहुत ही गलत आरोप लगा रखे हैं और उसे बहुत बुरा भला कह रखा था। उसने देखा कि बिल्ली के बच्चे कि तस्वीर के साथ उसकी फोटो छपी हुई है और नीचे लिखा हुआ था कि सिद्धार्थ ने उसे मारा है। सिद्धार्थ यह देख कर हैरान हो गया, उसने देखा कि उस तस्वीर के नीचे किसी सरकारी संस्थान का भी कमेंट था। वहाँ पर लिखा हुआ था कि हमने पुलिस को बता दिया है और कुछ ही देर में यह लड़का उनकी गिरफ्त में होगा। यह कमेंट देख कर जैसे उसके पैरों तले ज़मीन खिसक गयी, उसे घबराहट के मारे पसीने छूटने लगे। सिद्धार्थ ने तुरंत अपने दोस्त से बात की और पूरी बात बताई, यह सब जब बता रहा था तभी उसके पिताजी आ गए और उन्होंने पूरी बात सुन ली। सिद्धार्थ की बात सुन कर उसके पिताजी भी सोच में पड़ गए लेकिन उन्होंने सिद्धार्थ को समझाया कि डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। सिद्धार्थ ने पहले सोचा कि सभी मैसेज के रिप्लाई दे और उसने एक पोस्ट डाल दिया जिसमें उसने सफाई दी कि उसने कोई जुर्म नहीं किया है। कुछ ही देर में पुलिस घर के पास आ गई और उन्हें नीचे बुलाया। सिद्धार्थ एक सोसाइटी में रहता था और पुलिस के आने पर अचानक से बहुत भारी भीड़ जमा हो गई। सिद्धार्थ को नीचे सबके सामने बहुत डर लग रहा था, पिताजी ने उसे समझाया कि जब गलती उसने नहीं की है तो उसे डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। बहुत समझाने के बाद सिद्धार्थ नीचे उतरा और उसे देख कर सब लोग आपस में बातें करने लग गए।

Help

शर्मनाक - shameful

बुरा भला - bad-mouthed

गिरफ्त - arrest

संस्थान - institution

घबराहट - Nervous

Translation

He then slowly started looking at all the messages, he noticed that everyone was messaging him almost the same way, in the message it was written that he had committed a very shameful act and he should be very sorry for it. . He could not understand what kind of shameful act he had done. He saw that everyone had made very false allegations against him and had bad-mouthed him. He saw his photo posted with a picture of a kitten and it was written below that Siddharth had killed her. Siddharth was surprised to see this; he saw that there was a comment from some government institution below that picture. It was written there that they have told the police and that the boy would be under arrest shortly. Seeing this comment, it was like a nightmare struck him as a bolt out of the blue, he started sweating in panic. Siddharth immediately spoke to his friend and told the whole thing, while telling all this, his father came and he heard the whole thing. Hearing Siddharth's story, his father also started wondering but he explained to Siddharth that there is no need to be afraid. Siddharth first thought to reply to all the messages and uploaded a post in which he clarified that he had not committed any crime. Shortly after, the police came near the house and called them down. Siddharth lived in a society and suddenly a huge crowd gathered when the police arrived. Siddharth was very scared to come in front of everyone; his father explained to him that when he had not made a mistake, he need not be afraid. After much persuasion, Siddharth came down and after looking at him, everyone started talking among themselves.

TRANSLATION EXERCISE # 31

सिद्धार्थ सहमी हुई हालत में पुलिस के पास गया, उस दिन पुलिस के साथ पहली बार उसका सामना हुआ था। खाकी वर्दी देख कर उसकी आवाज़ नहीं निकल रही थी। पुलिस ने पूछा कि सिद्धार्थ इतना घबराया हुआ क्यों है। तो सिद्धार्थ के पिताजी ने बताया कि दरअसल उसे एक जाल में फँसाया गया है और अचानक इतने सारे लोगों के मैसेज और पोस्ट्स देख कर वह सदमे में है। सिद्धार्थ ने पुलिस को बड़ी हिम्मत के साथ बोला कि उसने ऐसा कोई काम नहीं किया है, जिस प्रकार का आरोप उस पर लगाया जा रहा है। पुलिस ने कहा कि सिद्धार्थ पर ऐसे आरोप इसलिए लगे हैं क्योंकि उसके ही अकाउंट से एक वीडियो डाला गया है जिसमें कि उस घटना को अंजाम दिया गया है। सिद्धार्थ के पूछने पर पुलिस ने उसे वो वीडियो दिखाया, सिद्धार्थ ने यह देखा कि अकाउंट तो उसी का है और उस पर फोटो भी उसी की है। वह सोच में पड़ गया क्योंकि उसके अलावा उसके अकाउंट का पासवर्ड और किसी को नहीं पता था। जब उसने ध्यान से देखा तो वीडियो में जो लड़का था उसके हाथ में एक सोने की अंगूठी थी जिस पर शिव लिखा हुआ था। सिद्धार्थ तुरंत ही समझ गया कि यह एक सोची समझी चाल थी जो उसके खिलाफ की गई थी। सिद्धार्थ ने यह देखा कि जिस अकाउंट से वीडियो डाली गयी है उसका नाम और फोटो तो उसके अकाउंट से ही मिलती है लेकिन ईमेल आई डी टूसरी थी। सिद्धार्थ ने तुरंत पुलिस को यह बताया कि यह ऑनलाइन जालसाज़ी का मामला है जिसमें उसे फँसाने की कोशिश की जा रही थी। सिद्धार्थ ने अपने दोस्त भविष्य को तुरंत फ़ोन करके उससे मदद माँगी जो कि सोशल मीडिया का जानकार था, उसने उससे पूछा कि क्या वो थोड़ी और जानकारी बता सकता है। भविष्य ने पुलिस के साथ मिलकर काम करना शुरू कर दिया जिससे कि वह मिलकर उस आदमी का पता लगा सकें जिसने ये फ़र्ज़ी काम किया है।

Help

सहमी - nervous

सामना - encounter

जाल - trap

आरोप - accusation

चाल - trap

जालसाज़ी - fraud

फ़र्ज़ी - forgery/fraud

Translation

Siddharth went to the police in a nervous condition; it was his first encounter with the police that day. He was not able to utter a single word with the Police in front of him. The police asked why Siddharth was so nervous. So Siddharth's father told that he had been made the prey in a trap and with several people texting and posting about him, he had gone into a state of shock. Siddharth told the police with a lot of courage that he had not done any such thing, the kind of accusation that was being made against him. Police said that Siddharth had been facing such allegations because a video was uploaded from his account in which that incident was carried out. On Siddharth's questioning, the police showed him the video, Siddharth saw that the account was his own and it also had a photo of him on it. He started wondering because apart from him no one else knew his account's password. When he observed, the boy that featured in the video had a gold ring in his hand on which Shiva was written. Siddharth immediately understood that it was a preplanned trap that someone had made against him. Siddharth noticed that the name and photo of the account from which the video was put resembled his account but the email id was different. Siddharth immediately told the police that it was an online fraud case in which an attempt was being made to trap him. Siddharth called his friend Bhavishya immediately to seek help from him, who was a social media expert; he asked him if he could extract a little more information. Bhavishya started working along with the police so that they could work together to find the man who had done this forgery/fraud.

TRANSLATION EXERCISE # 32

पुलिस ने अपने साइबर सेक्योरिटी सेल की मदद से यह पता लगाने की कोशिश की कि यह किस आई पी एड्रेस के द्वारा अपलोड की गयी है। आई पी एड्रेस पता लगाने से यह पता लग सकता था कि किस जगह से इस वारदात को अंजाम दिया गया। तीन - चार घंटों की मशक्कत के बाद और उसके बाद थोड़ी सी सिद्धार्थ के दोस्तों की मदद के दम पर पुलिस ने यह ट्रैक कर लिया कि आखिर किस आई पी एड्रेस से वह पोस्ट डाला गया था। यह पता चलने के बाद पुलिस ने यह पाया कि वह जिस भी किसी ने किया था वो उसी शहर का था, इसके पता चलते ही छानबीन और तहकीकात और भी तेज़ हो गयी। थोड़ी सी और ट्रैकिंग के बाद ये पता चला कि यह काम एक साइबर कैफ़े से किया गया है जो कि सिद्धार्थ के कॉलेज के पास में ही था। सिद्धार्थ से यह कहा गया कि उससे किस पे शक था, जो इस काम को कर सकता था। सिद्धार्थ पढ़ने और हर चीज़ में सबसे आगे रहता था तो उससे कई लोग ईर्ष्या करते थे, उसके लिए यह बता पाना बहुत मुश्किल था कि यह कौन था। सिद्धार्थ ने थोड़ा सोचा तो उसे एक हफ्ते पहले की एक बात याद आयी जब एक रेस में उसने मयंक को हराया था और मयंक ने उसे कहा था कि इस हार का बदला वो ज़रूर लेगा। सिद्धार्थ को यह लगने लगा कि यह शायद मयंक की चाल है और वह ऐसी हरकत से उसका नाम सबके सामने ख़राब करना चाह रहा था। पुलिस तुरंत ही सिद्धार्थ के साथ मयंक के घर पहुँची और उससे पूछताछ करना शुरू कर दिया। ऐसे अचानक पुलिस के आने से मयंक घबरा गया और थोड़ा सहम सा गया। थोड़ी देर बाद, जब सब शांत हुआ तो मयंक के बताया कि उसने ही किया है क्योंकि वह सिद्धार्थ की सफलता से जलता था।

Help

वारदात - crime

ईर्ष्या - jealous

हरकत - action

बदला - revenge

पूछताछ - questioning

सफलता - success

Translation

The police, with the help of its cybersecurity cell, tried to find out from which IP address it was uploaded. By knowing the IP address, it could be revealed from where the crime was carried out. After three to four hours of struggle and then with the little help of Siddharth's friends, the police tracked down from which IP address the post was posted from. After finding out that the police found that whosoever had done that was from the same city, the investigation and inspection became even faster as soon as this was found out. After a little more tracking, it was found that this work was from a cyber café which was near Siddharth's college. Siddharth was asked about who he was suspicious of, who could do this work. Siddharth used to be at the forefront of academics and everything, so many people were jealous of him, it was very difficult for him to tell who it was. Siddharth thought a little, he remembered one thing a week ago when he defeated Mayank in a race and Mayank told him that he would definitely take revenge for that defeat. Siddharth started to think that this was probably Mayank's plan and he wanted to spoil his name in front of everyone with such action. The police immediately reached Mayank's house with Siddharth and started questioning him. Mayank got nervous due to such sudden arrival of the police and got a little bit scared. After a while, when things got eased up a bit, Mayank told that he had done it because he was jealous of Siddharth's success.

TRANSLATION EXERCISE # 33

आरव मुंबई में रहता था और उसका बहुत बड़ा घर था। आरव के पिताजी एक बहुत बड़ी नामी कंपनी में काम करते थे और उनकी मोटी तनख्वाह थी, आरव की माँ एक फैशन डिज़ाइनर थी और उनके बनाये हुए लहंगे लाखों रुपयों में बिकते थे। आरव छठी कक्षा में पढ़ता था और उसका स्कूल शहर के सबसे जाने माने स्कूलों में से एक था। आरव स्कूल से घर पैदल ही आया करता क्योंकि घर स्कूल से बहुत ही नज़दीक था और बीच में वह बर्गर पिज़्ज़ा भी खा लिया करता। एक बार क्या हुआ कि रास्ते में उसे एक दूसरे स्कूल का बच्चा मिला जो कि सरकारी स्कूल में पढ़ता था। उस बच्चे ने आरव से मदद माँगी और कहा कि उसकी परीक्षा आ रही हैं लेकिन उसके पास किताबें नहीं हैं। आरव ने उसे कुछ पैसे दे दिए और उससे कहा कि वह दो महीने बाद ये पैसे लेने आएगा। वो पैसे दरअसल आरव को उसके जेब खर्च के लिए मिले थे, उसने वह बचा रखे थे। उस बच्चे का नाम दिवाकर था और वह पास के ही एक बस्ती का रहने वाला था। दिवाकर के माँ और बाप दोनों मज़दूर थे और उन्हें कई बार उनका मेहनताना नहीं मिलता था जिसके चलते दिवाकर की पढ़ाई के लिए पैसे तो दूर, घर का खर्च और खाना भी मुश्किल हो जाता था। दिवाकर पढ़ने में तो बहुत होशियार था लेकिन आर्थिक तंगी के कारण उसे कई महीने स्कूल से दूर रहना पड़ता। जिस तरह उसने आरव से पैसे माँगे उसी तरह वो कई लोगों से पैसे माँगता और उन्हें जोड़ - जोड़ कर वो अपनी फीस चुकाता। आरव पैसे वाले घर का था तो उसने दिवाकर को इतने पैसे दिए जिससे उसके सात महीने की स्कूल की फीस भरी जा सके। दिवाकर ने सोचा कि आरव ने उसे खुशी से पैसे दिए हैं, पैसे लौटने वाली बात पर उसने ध्यान नहीं दिया। जब दिवाकर ने घर जा कर बताया कि उसे इतने पैसे मिले हैं तो उसके माँ बाप ने उसे कहा कि स्कूल में पैसे देने के बजाय वो पैसे दूसरे काम में लगाए जाए। दिवाकर के पिताजी क़ऱज़ में ढूबे हुए थे इसलिए उन्हें पैसों कि सख्त ज़रूरत थी और वो आरव से मिले हुए पैसे कर्ज़ चुकाने में इस्तेमाल करना चाहते थे।

Help

बहुत बड़ा - gigantic

बड़ी नामी - prominent

मोटी तनख्वाह - hefty salary

बस्ती - shelter home

मेहनताना - wages

आर्थिक तंगी - financial problems, कर्ज़ - debt

सख्त ज़रूरत - dire need, चुकाने - repay

Translation

Aarav lived in Mumbai and had a gigantic house. Aarav's father used to work in a prominent company, and he had a hefty salary, Aarav's mother was a fashion designer, and her designed lehengas were sold for millions of rupees. Aarav studied in the sixth grade and his school was one of the most well-known schools in the city. Aarav used to come home from school on foot because his house was very near to the school and also used to eat burger pizza in between the journey. What happened once was that on his way he found a child of another school who studied in a government school. The child asked Aarav for help and said that his exams were approaching but he did not have books. Aarav gave him some money and told him that after two months he would come to get that money. That money was received by Aarav for his pocket money, he had saved it. The child's name was Diwakar and he was from a nearby shelter home. Diwakar's mother and father were both labourers and many a time they did not get their wages, due to which the money for Diwakar's education was indeed a big deal, making it difficult to even fulfil household needs and make both ends meet. Diwakar was very bright in academics, but due to financial problems, he would have to stay away from school for several months. Just as he asked for money from Aarav, in the same way, he would ask for money from many people and he would pay his fees by collecting them. If Aarav was from a rich family, he gave that much money to Diwakar that he could pay his seven months of school fees. Diwakar thought that Aarav had gladly given him the money, he did not heed attention to the fact that the money had to be returned. When Diwakar went home and told that he had got so much money, his parents told him that instead of giving money in school, that money should be used for other work. Diwakar's father was in debt, so he was in dire need of money and wanted to use the money he received from Aarav to repay the loan.

TRANSLATION EXERCISE # 34

दिवाकर के पिता ने वो पैसे क़र्ज़ लौटने में लगा दिया, अब दिवाकर के पास स्कूल में देने के लिए पैसे नहीं थे। दिवाकर का एक बहुत ही खास दोस्त था जिसका नाम था शंकर। शंकर एक सामान्य घर से था, दिवाकर के मुकाबले उसकी आर्थिक स्थिति काफी अच्छी थी। शंकर को पता लगा कि एक स्कॉलरशिप टेस्ट होने वाला है, दिवाकर पढ़ने में होशियार था और शंकर यह जानता था कि दिवाकर इस टेस्ट को पास करता है। शंकर ने बिना बताये खुद दिवाकर के नाम से टेस्ट का फॉर्म भर दिया, उसे पता था कि दिवाकर ने फीस नहीं भरी है तो उसे स्कूल के अंदर आने नहीं दिया जायेगा। टेस्ट का आयोजन एक दूसरे बड़े स्कूल में किया गया था जो पास में ही था। शंकर ने टेस्ट के कुछ दिन पहले दिवाकर को टेस्ट के बारे में बताया, दिवाकर की खुशी का ठिकाना नहीं था। दिवाकर को पता था कि यह टेस्ट उसके लिए कई नए रास्ते खोल सकता है, उसकी आर्थिक तंगी जो हमेशा उसके पढ़ाई के आड़े आती थी शायद अब वो भी सुलझ जाए। अब दिवाकर कोई भी मौका नहीं छोड़ना चाहता था, उसने अपने सभी दोस्तों से किताबों का जुगाड़ किया और टेस्ट की तैयारी करने में जुट गया। आखिर टेस्ट का दिन आ गया, दिवाकर ने पूरी मेहनत से तैयारी की थी और आज उसका इम्तिहान था। दिवाकर ने अपना पूरा प्रयास किया और उसका टेस्ट बहुत ही अच्छा गया। कुछ दिनों बाद जब उस टेस्ट का रिजल्ट आया, दिवाकर दूसरे नंबर पर आया और जो पंद्रह बच्चे स्कॉलरशिप के लिए चुने जाने थे उसमें उसका भी नाम शामिल था। दिवाकर की खुशी का ठिकाना नहीं था, उसने सबसे पहले ये खुशखबरी अपने दोस्त शंकर को दी। शंकर को तो मानो पहले से ही पूरा विश्वास था कि दिवाकर इस टेस्ट में शानदार प्रदर्शन करेगा, वह इस बात से बहुत खुश हुआ। इन सब खुशियों के बीच में एक बुरी खबर भी थी जिससे दोनों दोस्त अनजान थे।

Help

खास - special

सामान्य - ordinary

मुकाबले - compared

आयोजन - held

जुगाड़ - arrange

मौका नहीं छोड़ना - not to leave any stone unturned

खुशखबरी - good news

शानदार - brilliant

अनजान - unaware

Translation

Diwakar's father spent that money in returning the loan, now Diwakar did not have money to pay in school. Diwakar had a very special friend named Shankar. Shankar was from an ordinary family, his financial condition was much better than that of Diwakar. Shankar came to know that a scholarship test was about to take place, Diwakar was very bright in academics and Shankar was aware that Diwakar would pass that test. Shankar himself filled the test form on behalf of Diwakar without telling him, he knew that if Diwakar had not paid the fees, he would not be allowed inside the school. The test was held at another renowned school which was nearby. Shankar informed Diwakar about the test a few days before the test was to be held, Diwakar was on cloud nine. Diwakar knew that this test could open up many new opportunities for him, his financial problems which had always come in the way of his education might also be solved. Now Diwakar did not want to leave any stone unturned, he arranged books from all his friends and started preparing for the test. Finally, the day of the test arrived; Diwakar had worked hard and had his test today. Diwakar tried his best and his test went pretty well. A few days later when the result of that test came, Diwakar came in second and his name was included in the fifteen children who were to be selected for the scholarship. Diwakar was on cloud nine, he first gave this good news to his friend Shankar. As if Shankar was already confident that Diwakar would perform brilliantly in this test, he was very happy with this. There was also bad news amid all these happiness that both friends were unaware of.

TRANSLATION EXERCISE # 35

दरअसल, दिवाकर को स्कॉलरशिप तो मिली थी लेकिन इसका लाभ लेने के लिए उससे शहर के किसी बड़े स्कूल में एडमिशन लेना था। इस बात का मतलब यह था कि अब वह अपने सबसे अच्छे दोस्त शंकर के साथ एक ही स्कूल में नहीं पढ़ पायेगा। दिवाकर का तो जैसे दिल ही बैठ गया, उसने कहा कि वह दूसरे स्कूल में नहीं जायेगा। शंकर ने बताया कि उसे इस शर्त के बारे में पता था लेकिन उसने दिवाकर को पहले नहीं बताया नहीं तो वह टेस्ट ही नहीं देता। बहुत देर समझाने और लंबी बातचीत के बाद कहीं शंकर दिवाकर को दूसरे स्कूल में जाने के लिए मना पाया। दिवाकर ने अंत में शंकर की बात मान कर शहर के सबसे नामी स्कूल में अपना दाखिला करा लिया, इन सब के बीच वह इस बात से अनजान था कि वह उसी स्कूल में दाखिला ले रहा है जिसमें आरव पढ़ता था। कुछ दिनों बाद स्कूल जाने का समय आया, दिवाकर के माँ बाप जब उसे स्कूल छोड़ने आये तो हैरान रह गए। उन्होंने देखा कि बच्चे बड़ी महँगी - महँगी गाड़ियों में स्कूल आ रहे हैं और सबके पास महँगे फ़ोन हैं। दिवाकर ने अपने माँ पिता से कहा कि उसे यह सब देख कर कोई फर्क नहीं पड़ता, वह अपनी पढ़ाई पर पूरी तरह केंद्रित था। यह बात सुन कर जैसे उन दोनों के दिल को चैन आया, अपने छोटे से लाडले बेटे की समझ - बूझ देख कर दोनों बहुत खुश और प्रभावित थे। दिवाकर का स्कूल में पहला दिन था, वह किसी को नहीं जानता था और उसे पता नहीं चल रहा था कि उसकी कक्षा कहाँ है। उसने जब एक बच्चे से पूछने कि कोशिश की तो उसने अंग्रेजी में जवाब दिया, दिवाकर पढ़ने में तो बहुत ही तेज़ था लेकिन उसकी अंग्रेजी बहुत ही कमज़ोर थी। उसे किसी से भी बात करने में बहुत ज़्यादा घबराहट महसूस हो रही थी, वह सोच रहा था कि सब उसका मज़ाक उड़ाएंगे। यह सोचते - सोचते अचानक उसे आरव दिख गया, उसने सोचा कि आरव को तो वह पहले से जानता है तो शायद वो उसकी मदद कर दे। आरव ने जब दिवाकर को देखा तो उसे लगा कि दिवाकर पैसे लौटाने आया है। मिलते ही उसने बहुत ही ऊँची आवाज़ में उससे पूछा कि वह इतने दिन से उसके पैसे ले कर कहाँ गायब था। सब बच्चे पीछे मुड़ के देखने लग गए कि क्या हो रहा है। अचानक ऐसे हुए हमले से दिवाकर सहम सा गया और उसकी आवाज़ ही नहीं निकल रही थी।

Help

लाभ - advantage

दाखिला - enrol

मना पाया - convince

नामी - renowned

फैक्ट - affect

केंद्रित - focused

समझ - बूझ - maturity

घबराहट - nervous

प्रभावित - impressed

मज़ाक - mockery

अचानक - sudden

सहम - stunned

Translation

Diwakar had got a scholarship but to take advantage of it, he had to take admission in any of the big schools in the city. This meant that he would no longer be able to study in the same school with his best friend Shankar. It was like Diwakar's heart sank, he said that he would not go to another school. Shankar said that he was aware of the condition but did not tell Diwakar earlier or he would not have given the test. After explaining for too long and an endless conversation, Shankar could convince Diwakar to go to another school. Diwakar finally accepted Shankar's request and enrolled himself in the most renowned school in the city, amidst all this he was unaware that he was attending the same school in which Aarav was studying. A few days later, when it was time to go to school, Diwakar's parents were surprised when he came to drop them off. They noticed that the children were coming to school in huge expensive cars and everyone had expensive phones. Diwakar told his mother and father that was unaffected even after looking at all those things, he was fully focused on his studies. Hearing this, it was as if they felt relieved, both were very happy and impressed after seeing the maturity of their adorable little son. Diwakar had his first day in school; he did not know anyone and could not figure out where his class was. When he tried to ask a child, he replied in English, Diwakar was brilliant at academics but his English was very poor. He felt too nervous to talk to anyone; he

was thinking that everyone would make fun of him. While thinking this, he suddenly saw Aarav; he thought that if he already knew Aarav, then maybe he could help him. When Aarav saw Diwakar, he thought that Diwakar had come to return the money. As soon as he met, he asked him in a loud voice where he had been missing after taking his money for so many days. All the children turned back to see what was happening. With such a sudden attack, Diwakar was left wholly stunned so much so that even he was not able to utter a single word.

TRANSLATION EXERCISE # 36

इससे पहले कि दिवाकर कुछ सोच पाता, आरव ने सेक्युरिटी गार्ड को चिल्ला कर बुलाना शुरू कर दिया। उसके चिल्लाने से और भी कई बच्चे आस पास इकट्ठा हो गए, सभी को लगा कि कोई बड़ा हंगामा हुआ है। इतनी भीड़ इकट्ठा होती देख स्कूल के कई शिक्षक भी आ गए। इन सब के बीच दिवाकर इतने सारे लोगों को देख कर और घबरा गया, साथ ही एक अनजान स्कूल में उसका यह पहला दिन था। किसी ने प्रिंसिपल मैडम को भी बुला दिया, उनके आते ही सब लोग शांत हो गए। आरव ने बिना कुछ जाने - सोचे हुए दिवाकर पर यह आरोप लगा दिया कि वह इस स्कूल में बिना दाखिला लिए घुस आया है, साथ ही उस पर पैसे उधार लेकर फरार होने का भी आरोप लगाया। आरव को पता नहीं था कि दिवाकर स्कॉलरशिप टेस्ट देकर इस स्कूल में आया है, अपने पैसे के घमंड और अकड़ के कारण उसने सबके सामने दिवाकर को बहुत सुनाया। जब वह शांत हुआ, प्रिंसिपल मैम वहाँ आयी और उन्होंने रोते हुए दिवाकर के आँसू पोछे। प्रिंसिपल मैम ने बहुत ज़ोर से आरव को डाटा, इस बात की आरव को थोड़ी सी भी उम्मीद नहीं थी बल्कि वो इस ख्याल में था कि दिवाकर को धक्के मार के स्कूल से बाहर निकाला जायेगा। प्रिंसिपल ने सबसे पहले सबको दिवाकर के लिए तालियां बजाने को कहा, इसके बाद उन्होंने बड़े ही सम्मान के साथ दिवाकर का स्कूल में स्वागत किया। उन्होंने सबको बताया कि दिवाकर की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं है लेकिन वह पढ़ने में बहुत होशियार है, उसने स्कॉलरशिप टेस्ट में पूरे शहर में दूसरा स्थान हासिल किया है। उन्होंने दिवाकर की और भी सफलतायें सबको बताई, यह सब सुन कर तो मानो ऐसा लग रहा था कि आरव के पैरों तले ज़मीन खिसक गयी। आरव इसी सोच में डूबा रहा कि आखिर एक ऐसा बच्चा जिसे उसने दान में पैसे दिए थे, वो उसके साथ एक ही स्कूल में पढ़ेगा। थोड़े देर बाद जब कुछ सामान्य हुआ, आरव ने अपनी शिक्षक से बात की, उन्होंने समझाया कि कभी भी किसी को कम नहीं अंकना चाहिए। हर किसी में क्षमता होती है इसलिए कोई भी अपने जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है।

Help

चिल्लाने - shouting

हंगामा - uproar

इकट्ठा - gathered

आरोप - accused

फरार - absconding

घमंड - arrogance

अकड़ - swagger

सम्मान - respect

दान - donation

कम आंकना – Underestimate, महान - great

Translation

Before Diwakar could think of anything, Aarav started yelling at the security guard to come. Many more children gathered around due to his shouting, everyone felt that there was a big uproar. Seeing such a huge crowd gathered around, many school teachers also came. Amidst all this, Diwakar was terrified to see so many people, and this was also his first day in an unknown school. Somebody even called the Principal Madam, everyone got quiet as soon as she came. Aarav, without any prior knowledge, accused Diwakar of the fact that he had entered this school without admission and accused him of absconding with the money. Aarav did not know that Diwakar had come to this school by giving a scholarship test, due to his arrogance and swagger of money; he insulted Diwakar a lot in front of everyone. When he calmed down, principal ma'am came and she wiped the tears of Diwakar, who was crying. Principal Mam scolded Aarav very loudly, Aarav hardly had any idea of this thing coming rather he was thinking that Diwakar would be kicked out of the school. The principal first asked everyone to applaud for Diwakar, after which she welcomed Diwakar to the school with great respect. She told everyone that Diwakar's financial situation was not so good but he was a bright student, he had secured second place in the city in the scholarship test. He told about other achievements of Diwakar as well, after listening to all this, Aarav was simply taken aback. Aarav was pondering that after all, a child whom he had donated money to, would study with him in the same school. A little later when things returned to normalcy, Aarav spoke to his teacher, she explained that one should never underestimate anyone. Everyone has potential, so one becomes great by karma/deeds, not by birth.

TRANSLATION EXERCISE # 37

यह बात ऑस्ट्रेलिया के शहर सिडनी की है, जहाँ दो भारतीय मूल के होटल थे। दोनों होटल बहुत ही शानदार और ज़बरदस्त मेहमाननवाज़ी के लिए पूरे देश में मशहूर थे। उस शहर में ऐसा शायद ही कोई होगा जो इन दोनों होटलों के बारे में न जानता हो। दोनों होटलों के मालिकों के बीच में गहरी दोस्ती थी, दोनों एक दूसरे की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते थे। कई बार ऐसा हुआ कि एक को अगर आर्थिक मदद की ज़रूरत पड़ी तो दूसरे ने बिना किसी झिल्लिक के उसकी मदद की। एक बार क्या हुआ कि सब कुछ सामान्य रहते हुए भी एक होटल जिसका नाम डिलाइट था उसके ग्राहक आना कम हो गए। कुछ महीने बीत गए, डिलाइट के मालिक सोहन ने सोचा कि शायद लोग बहार का खाना सेहत का ध्यान रखते हुए काम कर रहे हैं। सोहन ने अपने दोस्त और दूसरे होटल फैटसी के मालिक विवेक से पूछा कि क्या उसके होटल में भी पिछले कुछ महीने में ग्राहक आना कम हुए हैं? इस पर विवेक ने बताया कि उसका धंधा तो अच्छा ही चल रहा है, यहाँ तक कि उसने बताया कि कुछ महीनों से तो ज़्यादा ग्राहक आने लगे हैं। सोहन ये बात सुन कर और भी ज़्यादा परेशान हो गया, सोचने लगा कि आखिर धंधे और ग्राहकों में ऐसी गिरावट किस कारण आ रही है। सोहन के होटल में काम करने वाला एक आदमी थोड़ा चालाक था, उसने सोचा कि इन दोनों के बीच दरार पैदा की जाए। उसने सोहन को यह कह कर भड़काने की कोशिश की कि विवेक सोहन के ग्राहक अपने यहाँ खींच रहा है। इस कारण से सोहन का धंधा मंदा है और विवेक बहुत तरक्की कर रहा है। सोहन को यह बात सच लगी लेकिन यह इस बात पर विश्वास करने को तैयार ही नहीं था कि विवेक जैसा अच्छा दोस्त उसके साथ ऐसा कर सकता है। उसने यह पता लगाने की कोशिश की, वह यह पक्का करना चाहता था कि विवेक ऐसा कर रहा है या उसका कर्मचारी उसे गुमराह कर रहा है।

Help

मूल - origin

ज़बरदस्त - outstanding

मेहमाननवाज़ी - hospitality

झिल्लिक - hesitation

गिरावट - fall

मंदा - stagnant

तरक्की - progress

दरार - rift

गुमराह - misleading

Translation

This is a tale set in the Australian city of Sydney, where there were two hotels of Indian origin. Both the hotels were famous all over the country for very luxurious and outstanding hospitality. There was hardly anyone in that city who did not know about these two hotels. The owners of both these hotels were excellent friends, and both were always ready to help each other. Many times it happened that if one needed financial help, the other helped him without any hesitation. What happened once was that despite everything being normal, in a hotel called Delight the number of customers started decreasing. A few months passed, Sohan, the owner of Delight, thought that perhaps people were reducing the intake of outside food by being health conscious. Sohan asked Vivek, his friend and the owner of another hotel fantasy, whether his hotel had also seen a fall in the number of customers visiting in the last few months? On this Vivek said that his business was going well, in fact, he said that for the past few months, more customers have started visiting. Sohan got even more upset after hearing this, wondering what was causing such a decline in business and customers. A man working at Sohan's hotel was a little clever, he thought to create a rift between the two. He tried to provoke Sohan by saying that Vivek was diverting Sohan's customers towards himself. For this reason, Sohan's business was stagnant and Vivek was making brilliant progress. Sohan believed this to be true but he was not ready to believe that such a good friend like Vivek could do this to him. He tried to find out, he wanted to make sure that whether Vivek was doing this or that his staff was misleading him.

TRANSLATION EXERCISE # 38

सोहन ने अपने सबसे विश्वासु कर्मचारी प्रमोद को विवेक के होटल के बहार निगरानी रखने को कहा। होटल फैंटसी में घुसने वाले हर ग्राहक से, होटल के अंदर घुसने के पहले प्रमोद उनसे यह पूछते कि क्या वे कभी होटल डिलाइट में आये हैं। इस पर उनमें से कई ग्राहकों कहते नहीं, वहीं कई ग्राहक बोलते कि वे डिलाइट ही आया करते थे लेकिन कुछ महीनों से फैंटसी आ रहे हैं। यह सुन कर ही प्रमोद का दिमाग धूम गया, वह तुरंत अपने मालिक सोहन के पास गया और उसे जा कर पूरी बात बताई। इस बात से बौखला कर सोहन बिना सोचे समझे विवेक को मन ही मन अपना दुश्मन मानने लग गया। उसने विवेक के ग्राहकों को फैंटसी के बाहर से ही बुलाना शुरू कर दिया, ग्राहक आते और फिर लौट कर फैंटसी ही चले जाते। सोहन परेशान हो गया था, अब वह ज़बरदस्ती ग्राहक को ला भी नहीं सकता था। एक दिन जब विवेक और सोहन एक दूसरे से बात कर रहे थे, तब सोहन ने अचानक से विवेक से पूछ ही लिया। सोहन ने थोड़ी ऊँची आवाज़ में विवेक से पूछा कि आखिर वो उसके ग्राहक क्यों ले रहा है, आखिर किस बात की दुश्मनी है। विवेक को समझ नहीं आया कि सोहन किस बारे में बात कर रहा है, उसने विस्तार में समझने को कहा। जब विवेक को पूरी बात पता चली तो वह दंग रह गया, उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि वह किस तरीके से इस बात पर सोहन को समझाये कि इसमें उसका कोई हाथ नहीं है। विवेक ने सोहन से कहा कि वह खुद यह पता लगाएगा कि आखिर ग्राहक उसके होटल डिलाइट में आना क्यों काम हो गए हैं। अपने होटल फैंटसी में आने वाले हर ग्राहक से वह पूछता कि क्या उन्होंने कभी डिलाइट से खाना खाया है, अगर खाया है तो क्यों छोड़ दिया। पूरी जाँच पड़ताल और लोगों से विस्तार में पूछ - ताछ करने पर ये पता चला कि दरअसल, वो डिलाइट जाना तो चाहते हैं लेकिन पिछले कुछ महीनों से वहाँ की साफ़ - सफाई और स्वच्छता पर बिलकुल भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है। इन सब के कारण कई बार ग्राहक को खाते समय सड़ी हुई चीज़ों की बदबू या फिर कोई और गंध का सामना करना पड़ता है, इस कारण से उन्होंने डिलाइट आना ही छोड़ दिया है।

Help

विश्वासु - trusted

निगरानी - keep an eye

बौखलाया हुआ - Agitated

ज़बरदस्ती - Forcefully

विस्तार - Elaborative

पूछ - ताछ - Enquiry

स्वच्छता - Cleanliness

सड़ी – rotten, गंध - Obnoxious smell

Translation

Sohan asked his most trusted employee, Pramod, to keep an eye outside Vivek's hostel. Before entering the hotel fantasy, just before entering it, Pramod would ask them if they had ever come to the hotel Delight. Many of those customers would answer 'no' to this, while many customers answered that they used to come to delight only but for the past few months they had been visiting Fantasy. Hearing this, Pramod was bamboozled; he immediately went to his boss Sohan and told him the whole thing. Agitated with this, Sohan started thinking of Vivek as his enemy without even giving a thought about it. He started calling Vivek's customers from outside the Fantasy hotel; customers would come and then return to Fantasy. Sohan was distraught, now he could not even forcefully bring the customer. One day while Vivek and Sohan were talking to each other, Sohan suddenly asked Vivek something. Sohan asked Vivek in a slightly loud voice, why was he taking his customers, what is the enmity about? Vivek did not understand what Sohan was talking about; he asked to elaborate in detail. When Vivek came to know the whole thing, he was stunned; he could not understand how to convince Sohan that he was not involved in it. Vivek told Sohan that he would himself figure out why customers visiting his hotel Delight had started reducing in number. Every customer who came to his hotel fantasy, he asked them if they had ever eaten food from Delight, if they had then why they left. After a thorough inspection and asking people in detail, it was found that in reality, they wanted to go to Delight but for the last few months, no attention was being paid to the cleanliness and hygiene. Due to all this, many times the customer had to face the smell of rotten things or some other kind of smell while eating; owing to which they had stopped visiting Delight.

TRANSLATION EXERCISE # 39

जब सोहन ने ध्यान से सोचा तो उसे याद आया कि साफ़ सफाई करने वाले दोनों कर्मचारी अपने घर किसी काम से चले गए थे। होटल में ज़्यादा गंदगी नहीं फैलती, आखिर ग्राहक थोड़े समझदार हैं लेकिन फिर भी इतने दिन सफाई न होने के कारण शायद होटल में एक अजीब प्रकार कि गंध फैल गयी होगी। सबसे बड़ी बात यह कि यह बात सोहन को कैसे पता नहीं लगी, सोहन की माँ कि तबियत कुछ समय से खराब चल रही थी और यह अक्सर घर पर रहता था, माँ का ध्यान रखने। होटल उसने अपने कर्मचारी प्रमोद के भरोसे छोड़ रखी थी, यह लापरवाही देखने के बाद उसे एहसास हुआ कि एक मालिक की दुकान में क्या अहमियत होती है, वह किसी को भी काम में ढिलाई नहीं करने देता। ग्राहकों के न आने का सबसे मुख्य कारण अब सबके सामने था, प्रमोद ने शर्मिन्दगी के साथ माफ़ी माँगी। सोहन ने तुरंत ही सफाई विभाग के लोगों को बुला कर, अपने होटल के साथ - साथ, आस - पास के होटलों की भी बहुत ही अच्छे से साफ़ - सफाई करा ली। कुछ ही दिनों में जब सभी ग्राहक आना शुरू हुए तो उन्हें साफ़ - सफाई के साथ नए रंग की दीवार और पेंटिंग भी देखने को मिली जो कि माहौल को और भी खुश नुमा बना रही थी। डिलाइट होटल का खाना तो पहले से ही बहुत अच्छा था, नए तरीके से अंदर की रंगाई - पुताई के साथ - साथ साफ़ सफाई के बाद तो मानो वह नया होटल लग रहा था। धीरे - धीरे ग्राहकों की संख्या बढ़ना शुरू हुई, कुछ ही सप्ताह में पहले से भी ज़्यादा ग्राहक आने लग गए, कई तो उसे नया होटल समझ कर आ रहे थे। सोहन का धंधा और होटल फिर से चल पड़ा, पिछले बार से भी ज़्यादा आमदनी हुई जो कि बस विवेक के प्रयास के कारण ही हो पाया। विवेक ने अपने ग्राहकों से पूछ कर सोहन का होटल बंद होने से बचा लिया। सोहन और विवेक के बीच इस वाक्ये के बाद दोस्ती और भी गहरी हो गयी।

Help

गंदगी - litter

समझदार - sensible

लापरवाही - carelessness

अहमियत - significance

ढिलाई - lackadaisical

मुख्य - main

माहौल – ambience, खुश नुमा - pleasant

आमदनी - earnings, बंद - closure

वाक्ये – incident, गहरी - intimate

Translation

When Sohan thought carefully, he remembered that both the cleaners/sweepers had left for their home for some work. There was not much litter in the hotel, after all, the customers were a bit sensible but still, due to lack of cleanliness for so many days, a strange type of smell might have spread across the hotel. The biggest thing was how Sohan did not know about this; Sohan's mother was ill for quite some time and he often stayed at home to take care of his mother. He had left the hotel on the shoulders of his employee Pramod, after seeing the carelessness, he realized that what was the significance of a shop owner; he does not allow anyone to be lackadaisical. The main reason for the absence of customers was now in front of everyone; Pramod apologized with feeling shameful about it. Sohan immediately called the people of the sanitation department and got a very thorough cleaning of his hotel as well as the nearby hotels. In a few days, when all the customers started coming, they also got to see cleanliness along with newly painted walls and paintings, which was making the ambience even more pleasant. The food at the Delight Hotel was already pretty good, newly added paintings along with the newly painted walls, and after the cleaning, it seemed like a new hotel. Gradually, the number of customers started increasing, within a few weeks more customers started coming, many were considering it as a new hotel. Gradually, the number of customers started increasing, within a few weeks more customers started coming, many were visiting it by thinking of it as a new hotel. Sohan's business and the hotel started doing well again, with earnings even more than the last time, which was only due to Vivek's efforts. Vivek saved Sohan's hotel from closure by asking his own customers. The friendship between Sohan and Vivek became even more intimate after this incident.

TRANSLATION EXERCISE # 40

डिम्पी नाम की एक लड़की थी जो कोलकाता में रहती थी, इतने बड़े शहर में उसका एक बहुत ही आलीशान घर था। उसके पिताजी व्यापारी थे, उनकी सोने और चाँदी की दुकान थी। डिम्पी वैसे तो बहुत समझदार थी लेकिन वह बिजली बहुत बर्बाद करती थी, कभी भी पंखा या लाइट खोल कर निकल जाती थी। उसके पिता और माँ उसे हमेशा समझाते रहते कि बिजली बहुत कीमती है, हमें हमेशा बिजली की बचत करनी चाहिए। एक बार क्या हुआ कि डिम्पी के कॉलेज का एक बहुत ही ज़रूरी प्रेजेंटेशन था, उसके कॉलेज के बहुत ही सीनियर टीचर और उनके साथ - साथ कुछ खास मेहमान भी आमंत्रित थे। डिम्पी को उस प्रेजेंटेशन का हेड चुना गया था, वह काफी अच्छा बोलती थी और इसी लिए उसे चुना भी गया था। इस प्रेजेंटेशन का खुद डिम्पी को भी कई महीनों से इंतज़ार था, इतने लम्बे इंतज़ार के बाद आखिर वो बड़ा दिन आने ही वाला था। डिम्पी ने पूरी तैयारी कर ली, बोलने का अभ्यास हो या फिर चेहरे के हाव-भाव, डिम्पी ने पूरी तैयारी कर ली थी। प्रेजेंटेशन सुबह आठ बजे से थी, डिम्पी ने एक रात पहले सोचा कि वह नौ बजे सो जाएगी और सुबह छः बजे उठ जाएगी। खाना खाते - खाते उसे साढ़े नौ बज गए, सोते समय ही उसके दोस्त का फोन आया कि कॉलेज से एक बहुत ही ज़रूरी काम आया है, डिम्पी ने तुरंत ही अपनी लैपटॉप निकला और काम करना शुरू कर दिया। पूरे दो घंटे बाद उसका काम खत्म हुआ, वह अब बहुत ही ज़्यादा थक चुकी थी, इतना ज़्यादा थकी हुई थी कि अपने बिस्तर से उठ कर टेबल पर लैपटॉप चार्ज पर लगाने का भी मन नहीं कर रहा था उसे। उसने सोचा कि लैपटॉप तो उस समय भी चार्ज हो जायेगा या फिर सुबह उठ कर वह चार्ज में लगा देगी। देर तक काम करने के कारण उसे सोने में देर हो गयी थी, सुबह छः बजे जब अलार्म बजा तब बहुत नींद में होने के कारण उसकी नींद नहीं खुली। आखिर सात बजे जब डिम्पी की नींद खुली तो वह जल्दी-जल्दी तैयार हुई, इन सब के बीच लेकिन वो अपना लैपटॉप चार्ज करना भूल गयी। प्रेजेंटेशन से पहले, आठ बजने से कुछ 10 मिनट पहले ही बिजली चली गयी, डिम्पी ने तुरंत लैपटॉप चलने की कोशिश की, लैपटॉप की बैटरी पूरी तरह से खत्म होने के कारण वह चालू भी नहीं हो रहा था। डिम्पी के प्राण सूखने लगे।

Help

आलीशान - luxurious, समझदार – sensible, कीमती - valuable

आमंत्रित – invited, हाव-भाव - expressions

खत्म – exhausted, प्राण सूखने लगे - heart began to sink

Translation

There was a girl named Dimpy who lived in Kolkata, she had a very luxurious house in such a big city. Her father was a businessman, he owned a jewellery shop. Dimpy was very sensible, but she wasted electricity a lot, she often used to go out without switching off the lights and fan at times. Her father and mother always kept explaining to him that electricity is very valuable, we should always save electricity. What happened once was that Dimpy had a very important presentation in his college, with a very senior teacher from his college and a few special guests invited along with him. Dimpy was chosen as the head of the presentation, she spoke very well and that is why she was actually chosen. Dimpy herself was waiting for this presentation for several months, after being waiting for it for such a long time, the big day was about to come. Dimpy had done all the preparations, speaking/oratory practice or facial expressions, Dimpy had done all the preparations. The presentation was from eight o'clock in the morning, Dimpy thought a night before that she would go to sleep at nine and get up at six in the morning. It was half-past nine while she finished her meals when she was about to sleep she got a call from her friend that an urgent work had been assigned from college, Dimpy immediately took out his laptop and started working. After two hours, she finished her work, she was very tired now, so much so that she did not even feel like getting up from her bed and putting her laptop in charge on the table. She thought that the laptop could be charged at that time too or else she would wake up in the morning and plug it in charge. He was late to sleep due to working till late when the alarm rang at six o'clock in the morning; she could not wake up due to being in deep sleep. Finally, at seven o'clock when Dimpy woke up, she got ready quickly, but amidst all this, she forgot to charge her laptop. Before the presentation, the power went out for some 10 minutes before eight o'clock, Dimpy immediately tried to run the laptop, it was not even starting/getting switched on as the laptop's battery was completely exhausted. Dimpy's heart began to sink.

TRANSLATION EXERCISE # 41

डिम्पी के घर पर कोई और दूसरा लैपटॉप भी नहीं था, एक लैपटॉप उसके पापा के पास था तो सही, लेकिन उसका कैमरा नहीं काम करता था, अचानक से आयी इस मुसीबत से डिम्पी बहुत ज़्यादा घबरा गयी। डिम्पी को कुछ समझ नहीं आ रहा था, कुछ ही देर में प्रेजेंटेशन शुरू होने वाला था, घबराहट के मारे डिम्पी को कुछ सूझ ही नहीं रहा था। वह इधर-उधर दौड़ने लगी, इस उम्मीद में कि कहीं से उसे एक लैपटॉप मिल जाए और उस पर वह अपना प्रेजेंटेशन दे दे। डिम्पी की माँ को पहले से ही पता था कि बिजली जाने वाली है, पिछली रात उनके फोन पर बिजली विभाग से मैसेज आ गया था। डिम्पी की माँ को पता था कि वह बहुत ही लापरवाह है, शायद वह लैपटॉप चार्ज करना भूल जाए और इसी लिए उन्होंने पड़ोसियों से दो लैपटॉप माँग कर रखे थे, जिनमें से दोनों पूरी तरह फुल चार्ज थे। अपनी बेटी को परेशान देख, डिम्पी की माँ ने उसके हाथ में दोनों लैपटॉप थमाए और उसे फ़ौरन प्रेजेंटेशन शुरू करने कहा। आठ बजने में मुश्किल से दो मिनट बचे होंगे, डिम्पी ने बिना कोई समय बर्बाद किये हुए तुरंत ही प्रेजेंटेशन शुरू कर दिया, डिम्पी वैसे तो पाँच मिनट लेट हो गयी थी लेकिन किस्मत से उस दिन मुख्य अतिथि भी दस मिनट की देरी से आये। डिम्पी ने बहुत ही शानदार तरीके से पूरे प्रेजेंटेशन को पूरा किया, सभी लोग जो उस प्रेजेंटेशन में मौजूद थे, उन सभी ने डिम्पी की बहुत तारीफ की और सभी बहुत प्रभावित दिखे। जैसे ही डिम्पी का प्रेजेंटेशन खत्म हुआ, उसने अपने माँ को गले से लगा लिया और ज़ोर से रोने लगी। उसने माँ से कहा कि आज बस उनके कारण ही उसका पूरा प्रेजेंटेशन और उसी के साथ-साथ उसकी इज़्ज़त भी बच गयी, अगर वह इसमें थोड़ी भी गड़बड़ करती तो बहुत परेशानी हो जाती। डिम्पी ने फिर तुरंत ही माँ से पूछा कि अचानक से उनके पास दो लैपटॉप कहाँ से आ गए, घर पर कोई एक्स्ट्रा लैपटॉप नहीं था। माँ ने कहा कि उन्होंने कई बार यह देखा कि डिम्पी बिजली को बहुत बर्बाद करती थी, कई बार समझाने पर भी उसे कोई बात समझ नहीं आती थी। जब माँ को बिजली जाने की खबर का पता लगा तो उन्होंने सोचा कि डिम्पी को एक सीख देने का यह अच्छा मौका है, इसके साथ - साथ उन्हें ये पता था कि डिम्पी का प्रेजेंटेशन भी बहुत ज़रूरी था इसलिए उन्होंने पड़ोसियों से पहले से ही दो लैपटॉप लेकर रखे थे।

Help

मुसीबत – trouble, लापरवाह - careless

शानदार – brilliant, प्रभावित – impressed

इज़्ज़त - prestige

Translation

There was no other laptop at Dimpy's house as well, although one laptop was there with his father, yet its camera did not work, Dimpy got very nervous due to the sudden trouble. Dimpy could not understand anything, the presentation was going to start shortly, Dimpy was unable to come up with an idea. She started running around, hoping that she would get a laptop from somewhere and give her presentation on it. Dimpy's mother already knew that power cut was going to take place, last night she had received a message from the electricity department. Dimpy's mother knew that she was very careless, perhaps forgetting to charge the laptop and that is why she had requested for two laptops from the neighbours and had kept them, both of which were fully charged. Seeing her daughter upset, Dimpy's mother handed both laptops in her hand and asked her to start the presentation immediately. With barely two minutes left to eight 'o'clock, Dimpy started the presentation immediately without wasting any time, although Dimpy was late by five minutes, yet luckily the chief guest also got late by ten minutes that day. Dimpy completed the entire presentation in a very brilliant manner, all the people who were present in that presentation praised Dimpy very much and all seemed to be pretty much impressed. As soon as Dimpy's presentation was over, she hugged her mother and started crying loudly. She told the mother that today it was only because of her that her entire presentation and along with that her prestige remained intact, if she messed up even a little bit in it, then there would have been a lot of trouble. Dimpy then immediately asked her mother as in from where she came up suddenly with two laptops, there was no extra laptop at home. The mother said that she saw many times that Dimpy wasted electricity a lot; many times she ignored the instructions given. When the mother came to know about the news of the power cut, she thought this was the perfect chance to teach Dimpy a lesson, along with that she knew that Dimpy's presentation was extremely important, so she had already taken two laptops from neighbours before it.

TRANSLATION EXERCISE # 42

प्रीतम एक सॉफ्टवेयर कंपनी में बैंगलोर में काम करता था, उसने बड़ी मेहनत से यह नौकरी ली थी, इन सब के साथ-साथ उसका बचपन भी बहुत सारी परेशानियों के बीच बीता था। उसके माँ-बाप मज़दूर थे, मुश्किल से घर पर खाने के लिए पैसे जमा हो पाते थे। प्रीतम ने कड़ी मेहनत कर के पहले दसवीं, बारहवीं और उसके बाद देश की सबसे कठिन परीक्षाओं में से एक आई आई टी की परीक्षा में सफलता प्राप्त की। इन सब के बाद, उसे एक बहुत ही बड़ी कंपनी में बड़े ही अच्छे तनखावाह पर नौकरी मिल गयी। एक बार वह ऑफिस में काम करते करते ऑफिस से बहुत लेट निकला, कई होटल बंद हो गए थे, प्रीतम को भूख भी बड़ी जोरों की लगी हुई थी। उसने तभी देखा कि हाई-वे के पास एक ढाबा है, यह ढाबा थोड़ा पुराना सा लग रहा था लेकिन इतनी रात को प्रीतम के पास खाने का और कोई चारा भी नहीं था। उसने सोचा कि उस ढाबे पर ही खाना खा लिया जाए। वह जब ढाबे पर पहुँचा तो उसने अपना सामान टेबल पर रख कर वेटर को आवाज़ लगायी, उसकी आवाज़ लगाने पर एक तकरीबन सात साल का बच्चा आया। इतने छोटे बच्चे को देख कर प्रीतम हैरान था, बच्चे के कपड़ों की हालत भी बहुत खराब थी। उस बच्चे ने एक शर्ट पहन रखी थी, उस शर्ट के बटन भी बीच से टूटे हुए थे, कंधे पर से वह शर्ट फटी हुई थी। प्रीतम ने बच्चे से पूछा कि वह वहाँ क्या कर रहा है, इस पर बच्चे ने जवाब दिया कि वह वहाँ पर काम करता था और उसे आर्डर लेने और बर्टन धोने के पैसे मिलते थे। इन सब के बीच प्रीतम की नज़र एक दस साल की लड़की के ऊपर पड़ी, वह कुछ ही दूर पर जूठे बर्टन धो रही थी। प्रीतम ने उस बच्चे से पूछा कि वह लड़की कौन थी, उस लड़के ने बताया कि वह उसकी बड़ी बहन श्रेया थी। उस लड़के का नाम सिद्धार्थ था, उस लड़के ने बताया कि उसकी बहन और वो दोनों पिछले तीन साल से इस ढाबे पर काम कर रहे थे।

Help

मेहनत - hard work

परेशानियों के बीच - amidst many troubles

बड़ी - renowned

फटी - torn

Translation

Pritam used to work in a software company in Bangalore, he got that job after putting in a lot of hard work and efforts, along with all this, his childhood was spent amidst many troubles. His parents were labourers, barely able to collect enough money to feed themselves. Pritam worked hard to succeed, first in the tenth grade, twelfth grade and then the IIT exams which are considered to be one of the toughest examinations in the country. After all this, he got a job in a very renowned company with a pretty decent salary. Once, while working in the office, he left very late from the office, many hotels were closed, Pritam was indeed very hungry. He only noticed that there was a dhaba near the highway, this dhaba seemed a bit old but Pritam had no other option but to eat from there as it was a late night. He thought that he should have his dinner at the dhaba itself. When he reached the dhaba, he kept his luggage on the table and called the waiter, a child of about seven years came on his request. Pritam was surprised to see such a small child; the condition of the child's clothes was also horrible. The child had worn a shirt, the buttons of that shirt were also broken from the middle, and the shirt was torn from the shoulder. Pritam asked the child what he was doing there, to which the child replied that he worked there and received money to attend to orders and wash dishes. In the midst of all this, Pritam's eye caught sight of a ten-year-old girl, who was washing the dirty utensils pretty near to him. Pritam asked the child who the girl was, the boy said that she was his elder sister Shreya. The boy's name was Siddharth, the boy told that his sister and both of them had been working on that dhaba for the last three years.

TRANSLATION EXERCISE # 43

उस छोटे से लड़के के मुँह से यह बात सुन कर तो मानो प्रीतम की सांसें ही अटक गयी, इतने छोटे और मासूम से बच्चे इतनी मेहनत कर रहे थे, यह देख कर उसे बहुत दुःख हुआ। अपनी भूख भुला कर पहले उन दोनों बच्चों की मदद करने की ठानी। उसने उस होटल के मालिक को बुलाया, वह अपनी सफाई में कहने लगा कि ये बच्चे अनाथ थे और इनकी पैसों की मदद करने के लिए वह इन्हें कुछ छोटे मोटे काम दे दिया करता था। प्रीतम को उस ढाबे के मालिक के ऊपर शक हुआ, खाना खाते समय उसने सिद्धार्थ को अपने पास बिठाया और उससे पूरी बात बताने को कहा। सिद्धार्थ के पूरी बात बताने के बाद यह पता चला कि वो और उसकी बहन गाँव से भागकर शहर आ गए थे, शहर आने के बाद उन दोनों को पैसे कमाने के लिए बहुत मुश्किल सहनी पड़ी। अंत में आकर इस होटल के मालिक ने दोनों को काम पर रख लिया, शुरू में उसका व्यवहार बहुत ही नम्र और अच्छा रहता था। कुछ दिन होने के बाद ही उसका व्यवहार बदल गया, वह उन्हें पढ़ने भी नहीं देता था, पूरा दिन होटल में काम करवाता और कई बार तो दो- तीन महीने तक उन्हें पैसे भी नहीं देता था। प्रीतम ने सिद्धार्थ से पूछा कि उसे किस चीज़ में रुचि थी, सिद्धार्थ ने बताया कि वह एक वैज्ञानिक बनना चाहता था, उसकी बहन बहुत अच्छा गाना गाती थी और उसे गायिका बनना था। इतने छोटे और मासूम बच्चों के मुँह से इतने बड़े सपने की बात सुन कर प्रीतम की आँखें भर आईं। उसने सिद्धार्थ को कहा कि वह कुछ उपाय निकाल कर उन दोनों को उस ढाबे से ले जायेगा ताकि दोनों अच्छे से पढ़- लिख सकें और अपने सभी सपने पूरे कर सकें। सिद्धार्थ को पता था कि भारत में चौदह साल से कम उम्र के किसी भी बच्चे से काम करवाना बाल मज़दूरी है, इस पर बहुत ही सख्त कानून हमारे देश में बने हुए है। उसने खाना खत्म किया, पैसे दिए और उन बच्चों को छुड़ाने के लिए कोई प्लान सोचने बैठ गया।

Help

सांसें ही अटक गयी - shell shocked

अनाथ - orphans

सहनी - endure

नम्र - humble

आँखें भर आई - Emotional

सख्त - strict

Translation

Hearing these words from that little boy, it was as if Pritam was left shell shocked, and he was sorrowful to see that such small and innocent children were working so hard and leading such a harsh life, seeing all this he was deeply saddened. Forgetting about his hunger, the first of all decided to help the two children. He called the owner of the hotel, who began to say in his explanation that these children were orphans and he used to give them some minor tasks in order to help them financially. Pritam was suspicious of the owner of that dhaba while eating food. He made Siddharth sit beside him and asked him to tell the whole story. After Siddharth told the whole thing, it was found out that he and his sister had escaped from the village to the city, after coming to the city both of them had to endure a lot of hard work to earn money. Finally, the owner of this hotel hired both, initially; his behaviour was very humble and good. His behaviour changed only after a few days, he would not even let them study, used to make them work in the hotel all day and sometimes did not even give them money for two-three months. Pritam asks Siddharth what he was interested in, Siddharth said that he wanted to become a scientist, his sister used to sing very well and she wanted to become a singer. Pritam became pretty emotional on hearing of such big dreams from such young and innocent children. He told Siddharth that he would figure out a way and would take them both along with him from that dhaba so that both of them could get a good education and fulfil all their dreams. Siddharth knew that to make any child below the age of fourteen years work is considered as child labour in India, very strict laws are made in accordance with this in our country. He finished the meal, gave them money and sat down to think of a plan to rescue those children.

TRANSLATION EXERCISE # 44

उसने अपने एक दोस्त मनोहर को फोन लगाया, मनोहर राजस्थान हाई कोर्ट में वकील था। मनोहर ने कई बड़े केस लड़े थे, इसके साथ ही बाल क्रानून में बहुत अनुभवी था। प्रीतम ने बड़े ही विस्तार से पूरी बात अपने दोस्त मनोहर को बताई, प्रीतम की बात सुनने के बाद मनोहर ने कहा कि यह एक बहुत ही आम बात थी, वह बड़ी ही आसानी से उस ढाबे के मालिक पर केस कर सकता था। यह बात सुन कर प्रीतम की आँखें चमक उठीं, अब उसका जोश दोगुना हो चुका था। प्रीतम ने फ़ौरन ही मनोहर को कागज़ तैयार करने को कहा, मनोहर ने प्रीतम को समझाया कि केस करने में एक रोड़ा था, जब तक उसके पास ढाबे के मालिक के खिलाफ कोई ठोस सबूत नहीं मिल जाता, तब तक केस करने से कोई खास फायदा नहीं था। मनोहर ने प्रीतम को इसके बाद समझाया कि यह कोर्ट - कचहरी का मामला बहुत पेचीदा होता है, वह सॉफ्टवेयर कंपनी में काम करता था और उसे इन सब चीज़ों में नहीं पड़ना चाहिए। प्रीतम ने मनोहर को फटकार लगायी, उसने कहा कि ऐसे सोच के कारण ही ढाबे के मालिक बच्चों का शोषण करने का दुस्साहस कर पाते हैं। उसने मनोहर से कहा कि वह किसी न किसी तरीके से उस ढाबे के मालिक सबूत जुटा कर रहेगा, जिसके बाद वह उसे सजा दिलवाएगा और उन बच्चों को न्याय दिलाएगा, उन्हें अच्छी शिक्षा दिलवाएगा चाहे उसे खुद के पैसे ही क्यों न खर्च करने पड़े। अपने दोस्त को उन बच्चों के प्रति इतनी मेहनत और लागन से मदद करते देख मनोहर भी काफी प्रोत्साहित हो गया। पूरे दो से तीन घंटे फोन पर ही उन दोनों ने उस ढाबे के मालिक को फंसा कर उससे सच उगलने का प्लान बना लिया। प्रीतम के ऑफिस में उसका एक अच्छा दोस्त था, जिसका नाम था युवराज, उसे भी प्रीतम ने इस प्लान का हिस्सा बना लिया जिससे प्लान किसी भी तरीके से विफल न हो।

Help

अनुभवी - experienced

आँखें चमक उठीं - eyes lit up

कोर्ट - कचहरी - judiciary

पेचीदा - complicated

फटकार - reprimand

शोषण - exploit

न्याय - justice

Translation

He called a friend of his, Manohar, a lawyer in the Rajasthan High Court. Manohar had fought many big cases, as well as was very experienced in child law. Pritam told the whole thing in great detail to his friend Manohar, after hearing Pritam's story, Manohar said that it was a very common thing, he could easily file a case against the owner of that dhaba. Hearing this, Pritam's eyes lit up, now his enthusiasm had doubled. Pritam immediately asked Manohar to prepare the documents, Manohar explained to Pritam that there was a hindrance in the case, until he found no concrete evidence against the owner of the dhaba, then there was no use of filing the case. Manohar then explained to Pritam that judiciary and court-related things are very complicated, he used to work in a software company and he should not get into all these things. Pritam reprimanded Manohar, saying that it is due to such thinking that the owners of the dhaba are able to muster the audacity to exploit the children. He told Manohar that he would somehow collect the evidence of the owner of the dhaba, after which he would get him punished and provide justice to those children, help them get a good education even if he had to spend his own money. Seeing his friend working so hard and diligently for those children in a helping manner, Manohar was also greatly encouraged. For two to three hours over the phone, they both made a plan to make the owner fall in a trap and extract the truth from him. Pritam had a very good friend of him in his office whose name was Yuvraj, Pritam also made him a part of this plan so that the plan does not fail in any way.

TRANSLATION EXERCISE # 45

दरअसल, प्लान यह था कि वह भेष बदल कर होटल में जायेगा, सिद्धार्थ को आर्डर लेने के लिए बुलाएगा, जैसे ही सिद्धार्थ आर्डर ले कर आएगा उसके बाद वह सिद्धार्थ को बहुत ज़ोर से डांट लगाएगा। इसके बाद वह गुस्से में अपनी प्लेट फेंक देगा, यह देख कर जब मालिक आएगा तो प्रीतम उसे बहुत भला बुरा कहेगा, इस पर होटल का मालिक उससे माफ़ी माँगेगा तो वह उन बच्चों को निकालने को कहेगा। गुस्से में होने के कारण और शायद इतनी बदनामी के कारण वह उन बच्चों को काम से निकाल दे। प्लान के अनुसार, प्रीतम एक बहुत ही अमीर आदमी के भेष में गया, उसने अपने दोस्त हितेश से उसकी ऑड़ी भी ले ली थी जिससे मालिक को कोई शक नहीं हो। अपनी गाड़ी रोक कर, प्लान के मुताबिक वह होटल के अंदर गया, उसने सिद्धार्थ को इशारे से बुलाया और आर्डर में कुछ अच्छा खाने को लाने को कहा। जब सिद्धार्थ आर्डर ले कर आया, प्रीतम ने एक चम्मच चखते ही प्लेट उठा के ज़मीन पर फेंक दिया, आस - पास बैठे कई सारे लोग जो वहाँ बैठ कर खाना खा रहे थे, सब खाना छोड़ कर तमाशा देखने लगे। इतने शोर के कारण उस ढाबे का मालिक संग्राम सिंह दौड़ा-दौड़ा वहाँ प्रीतम के पास आ पहुँचा। उसने प्रीतम से माफ़ी माँगते हुए उसके सामने हाथ जोड़ लिए और कहा कि बच्चों की गलती के लिए वह बहुत शर्मिदा है। सब लोग उसे और प्रीतम के बीच हो रहे ड्रामा को बड़े चाव से देख रहे थे, यह देख कर संग्राम सिंह का दिल सूखा जा रहा था। प्रीतम ने बहुत ही ऊँची आवाज़ में सिद्धार्थ को बहुत खरी - खोटी सुनाई, उसने संग्राम सिंह से कहा कि वह बहुत बड़ा आदमी है, कुछ ही मिनटों में पूरी दुकान तहस-नहस करवा सकता है। उसने संग्राम सिंह से कहा कि सिद्धार्थ और श्रेया को अगर उसने होटल से नहीं निकाला तो वह उस होटल का लाइसेंस रद्द करवा देगा, जब बात यहाँ तक पहुँच गयी तब संग्राम सिंह को लगा कि अब उसे ये बात माननी ही पड़ेगी। उसने फ़ौरन ही दोनों बच्चों को नौकरी से निकाल दिया, इसके बाद उसने प्रीतम को बड़े ही सम्मान के साथ खाना खिलाया।

Help

भेष बदल - disguise

डांट - scold

भला बुरा - insult

शक - doubt

शर्मिंदा - apologetic

तहस-नहस - destroyed

सम्मान - respect

Translation

The plan was that he would disguise and go to the hotel, call Siddharth to take the order, he would scold Siddharth as soon as Siddharth came to take the order. After this, he will throw his plate in anger, seeing that when the owner comes, Pritam will insult by saying harsh words, on which the owner of the hotel would apologize to him, then he will ask them to fire the children from their jobs. Being angry and facing so much humiliation, he would expel those children from work. According to the plan, Pritam went under the guise of a very rich man, and he had also taken his Audi from his friend Hitesh so that the owner had no doubt. Stopping his car, according to the plan he went inside the hotel, he made gestures to Siddharth and asked him to bring some good food from the menu. When Siddharth brought the order, Pritam, after tasting a bit of it, picked up the plate and threw it on the ground, many people sitting nearby, who were sitting there and having their food, all left the food and started watching the drama. Due to so much noise, Sangram Singh, the owner of that dhaba, ran hurriedly up to Pritam. He apologized to Pritam, folded his hands in front of him and said that he was very embarrassed for the children's mistake. Everyone was watching the drama happening between him and Pritam very keenly, seeing that Sangram Singh's heart began to sink. Pritam humiliated Siddharth by shouting at the top of his voice, he told Sangram Singh that he is a big shot, he could make the entire shop get destroyed in a few minutes. He told Sangram Singh that if he did not expel Siddharth and Shreya from the hotel, he would cancel the license of the hotel when the matter got worse to such an extent, Sangram Singh felt that he would have to accept this. He immediately fired both children from the job, after which he served lunch to Pritam, treating him with the utmost respect.

TRANSLATION EXERCISE # 46

इसके बाद प्लान का बचा हुआ और सबसे ज़रूरी भाग बचा हुआ था। यह सब करने के बाद प्रीतम ने उन बच्चों को अच्छे से समझा कर मालिक के पास भेजा, इस बार उनके शर्ट के पॉकेट में एक कैमरा फिट किया हुआ था जो कि सब रिकॉर्ड करने वाला था। जब सिद्धार्थ और श्रेया संग्राम सिंह के पास नौकरी माँगने गए, उसने बोला कि अब वह उन्हें नौकरी पर नहीं रख सकता। इसके बाद दोनों बच्चों ने पिछले दो महीने के बचे हुए पैसे देने कि बात कही, इस पर संग्राम सिंह पूरे गुस्से में बोल उठा, उसने यह तक कह डाला कि वह उसके जैसे कई बच्चों से पिछले पंद्रह साल में काम करवा चुका है, उनमें से कई भाग गए और कई बच्चों को काम ढंग से न करने पर उसने बेच दिया। यह सब सिद्धार्थ के शर्ट के पॉकेट के ऊपर लगे हुए कैमरे में बहुत ही अच्छे से रिकॉर्ड हो रहे थे, इन सब से अनजान संग्राम सिंह ने दोनों बच्चों के सामने पूरी सच्चाई उगल दी, उसने यह सोचा कि इन सब बातों से वह बच्चों को डराधमका के वापस भेज देगा। उसके क्या पता था कि उसके लिए उसके जीवन की सबसे बड़ी गलती साबित होने वाली है। कुछ देर बाद जब संग्राम सिंह का गुस्सा शांत हुआ, उसके बाद बच्चे वहाँ से वापस आ गए। प्रीतम ने सिद्धार्थ के कैमरा खोल कर लैपटॉप से जोड़ा, वीडियो प्ले करते ही सबकी चेहरे पर एक बड़ी सी मुस्कान आ गयी, आती भी क्यों न। आखिर इतने सालों से परेशानी झेलने वाले बच्चों को न्याय और अच्छी पढ़ाई नसीब जो होने वाली थी। यह वीडियो प्रीतम ने फ़ौरन ही अपने दोस्त मनोहर को मेल कर दी, उसके साथ-साथ उसने यह भी लिख दिया कि अब कानूनी करवाई करने और एफ आई आर दर्ज करने के लिए तैयार हो जाए। उस ढाबे के सबसे नज़दीक के पुलिस थाने में प्रीतम दोनों बच्चों को लेकर गया, वहाँ दोनों बच्चों ने संग्राम सिंह के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करवाई, इन सब के साथ ही साथ प्रीतम ने वीडियो की एक कॉपी वहाँ के थाना इंचार्ज को भी भेज दी।

Help

ज़रूरी - crucial

समझा - instructed

अनजान - unaware

परेशानी - suffering

नसीब - Destiny

न्याय - justice

Translation

After this a part of the plan was left which was also the most crucial one as well. After doing all this, Pritam explained and instructed them properly and sent them to the owner, this time a camera was fitted in his shirt's pocket which was about to record everything. When Siddharth and Shreya went to Sangram Singh to ask for a job, he said that he can no longer give them a job. After this, both the children asked for giving the money which was due for the last two months, on which Sangram Singh shouted angrily, he even said that he had got many children like them to work in the last fifteen years, among which many of them escaped and several other children were sold by him for not doing things properly. All this was recorded very well in the camera on the pocket of Siddharth's shirt, unaware of all this, Sangram Singh had revealed the entire truth in front of both the children, he thought that by saying these things he would scare the children and would send them back. What he didn't know was that it was going to be the biggest mistake of his life. After some time when Sangram Singh's calmed down, the children returned from there. Pritam opened Siddharth's camera and connected it to the laptop, a big smile came on everyone's face as he played the video, and why not? After all, the children, who have been suffering for so many years, were destined to get justice and good education. The video was immediately mailed by Pritam to his friend Manohar, along with that he also wrote that he should now get ready to take legal action and register an FIR. Pritam took the two children to the nearest police station to that dhaba, where both the children lodged a report against Sangram Singh, along with all this, Pritam also sent a copy of the video to the police station in-charge.

TRANSLATION EXERCISE # 47

केस बैंगलोर का था तो कर्नाटक हाई कोर्ट में ही लड़ा जाता और इसलिए मनोहर ने अपने दोस्त समीर से बात की जो कि कर्नाटक हाई कोर्ट में वकील था, उसे पूरी कहानी बताई, वीडियो भेजा और तुरंत ही संग्राम सिंह के खिलाफ वारंट जारी करने को कहा। केवल एक ही दिन के अंदर, संग्राम सिंह के दुकान पर सरकारी नोटिस आया। संग्राम सिंह ज्यादा पढ़ा लिखा नहीं था तो उसने अपने एक दोस्त से पढ़वाया। वारंट के बारे में पता लगने पर तो जैसे संग्राम सिंह पागल हो गया, उसे कुछ समझ ही नहीं आ रहा था कि अब इस हालात में उसे क्या करना चाहिए। उसने तुरंत ही एक वकील ढूँढ़ा और उसे पूरी कहानी बता दी, कहानी सुनने के बाद वकील ने संग्राम सिंह से दस लाख रूपये मांगे, उसे पता था कि वह जो केस लड़ने जा रहा था उसमें उसके जीतने की सम्भावना बहुत ही कम थी। मरता क्या नहीं करता, संग्राम सिंह ने अपनी कुंजी में से बिना ज्यादा सोचे - समझे दस लाख रूपये वकील को दे दिए, वह हर हाल में खुद को जेल जाने से बचाना चाहता था। अगले सप्ताह के पहले दिन, सोमवार को कोर्ट में उनकी तारीख पड़ी, संग्राम सिंह की पेशी हुई, बच्चे भी आये थे और उनके साथ - साथ प्रीतम भी आया था। अदालत में वो वीडियो प्ले किया गया, जज साहब ने वो वीडियो देखा, उसके बाद संग्राम सिंह को अपनी सफाई का मौका दिया। संग्राम सिंह ने वीडियो को झूठलाने के लिए कई मनघड़त कहानी बनाने की कोशिश की, उसके वकील ने भी कई झूठी दलीलें पेश की लेकिन किसी का भी फायदा नहीं हुआ अंत में जज साहब ने संग्राम सिंह को एक साल की सजा सुना दी, इसके साथ ही साथ उसे तीस हज़ार का जुर्माना भरना पड़ा। इतना ही नहीं, संग्राम सिंह को यह ज़िम्मेदारी दी गई कि वह उन दोनों बच्चों की पढ़ाई का खर्च उठाएगा जब तक वह बच्चे अठारह साल के नहीं हो जाते।

Help

पागल होना – To go mad

हालात - Circumstances

सम्भावना - Probability/Chances

कुंजी - Savings

मनघड़त कहानी - Cock and bull story

फायदा - benefit

ज़िम्मेदारी - Responsibility

Translation

As the case was from Bangalore, it would have been fought in the Karnataka High Court and so Manohar talked to his friend Sameer, who was a lawyer in the Karnataka High Court, told him the whole story, sent the video and immediately asked him to issue a warrant against Sangram Singh. Within a single day, a government notice came to Sangram Singh's shop. Sangram Singh was not educated, so he got it read by a friend. When Sangram Singh came to know about the warrant, he just went mad and wasn't able to figure out what he should do in that situation then. He immediately found a lawyer for himself and told him the whole story, after hearing the story; the lawyer asked Sangram Singh for Ten Lakh rupees, he knew that he was very unlikely to win in the case he was going to fight. A drowning man clutches at straws, Sangram Singh, without thinking much of his savings, gave Ten Lakh rupees to the lawyer, he wanted to save himself from going to jail. On the first day of the next week, on Monday, he was given a date to appear in the court, Sangram Singh appeared, children also came and Pritam also came along with them. The video was played in the court, the judge saw the video, and then gave Sangram Singh a chance to give his clarification. Sangram Singh tried to create a false story/cock and bull story to justify the video as fake, his lawyer also made many false arguments but to no avail. Finally, the judge sentenced Sangram Singh for a year, Also he had to pay a fine of thirty thousand. Not only this, Sangram Singh was given the responsibility that he would sponsor the education of those two children until those children were eighteen years old.

TRANSLATION EXERCISE # 48

प्रखर नाम का एक दस साल का लड़का था, वह अपने माँ - बाप की बहुत इज्ज़त करता था, उनकी हर बात मानता था और खूब मन लगाकर पढ़ाई भी करता था। कोरोना के कारण उसका स्कूल बंद हो गया था, उसके साथ ही साथ उसकी ऑनलाइन क्लास शुरू हो गयी। प्रखर ज्यादा फ़ोन या लैपटॉप का इस्तेमाल नहीं करता था, लेकिन लॉकडाउन के कारण अपनी सारी क्लासेज मोबाइल या पापा के लैपटॉप पर करनी पड़ती थी। अचानक से स्क्रीन पर इतना समय बिताने पर प्रखर के माँ - बाप को उसके आँखों की चिंता होने लगी, पढ़ाई भी ज़रूरी थी तो क्लासेज भी करनी थी। इस चीज़ को ले कर प्रखर के माँ - बाप चिंता में थे, आखिर वो करें तो करें क्या? उन्होंने अपने रिश्तेदारों से बात की, उनसे पता लगा कि उनके बच्चे भी लैपटॉप या फिर मोबाइल पर ही क्लासेज कर रहे हैं, वे भी परेशान हैं और इस बात से चिंतित हैं। एक दिन क्लास के बाद, प्रखर मोबाइल पर कुछ कर रहा था, उसकी माँ जब रूम में आई तो उन्हें लगा कि वो क्लास ही कर रहा है, जब माँ ने झाँक के देखा तो पता लगा कि प्रखर मोबाइल पर गेम खेल रहा था। माँ ने सोचा कि उसी समय प्रखर के हाथ से फ़ोन छीन ले, यह करने के बजाय माँ ने सोचा कि एक बार प्रखर से पूछ के देखा जाए, वह यह देखना चाहती थी कि प्रखर सच बोलता है या झूठ। माँ ने प्रखर से पूछा कि वह मोबाइल पर क्या कर रहा है, इस पर प्रखर ने जवाब दिया कि उसकी क्लास थोड़ी लंबी चल रही है तो अभी तक ख़त्म नहीं हुई है। माँ को यह बात सुन कर बहुत बड़ा झटका लगा, प्रखर एक बहुत ही आश्वाकारी बच्चा था और उसकी माँ ने उससे झूठ की उम्मीद नहीं की थी। उसके बाद माँ ने यह बात प्रखर के पापा को बताई और दोनों ने यह तय किया कि किसी न किसी तरीके से प्रखर को मोबाइल और लैपटॉप पर ज्यादा समय न बिताने दें।

Help

अचानक - Suddenly

रिश्तेदार - Relatives

चिंतित - Worried

झाँक - Peep

छीन - Snatch

आश्वाकारी - Obedient

Translation

There was a ten-year-old boy named Prakhar, he used to respect his parents a lot, he was very obedient and studied hard. His school was closed due to Corona, as well as his online class started. Prakhar did not use his phone or laptop much, but due to Lockdown, he had to do all his classes on mobile or father's laptop. Suddenly, after spending so much time on the screen, Prakhar's parents started worrying about his eyes, academics was also important; he had to do classes too. Prakhar's parents were worried about this thing; they simply had no other option. They talked to their relatives, they came to know that their children are also doing classes on laptop or mobile, they were also upset and worried about this. One day after class, Prakhar was doing something on mobile, when his mother came into the room, he felt that he was doing the class, but when mother peeped, it was found that Prakhar was playing a game on mobile. Mother thought of snatching the phone from Prakhar's hand at that point of time itself, but instead of doing it, she thought of asking Prakhar about it once, she wanted to see if Prakhar spoke the truth or lied. Mother asked Prakhar what he was doing on mobile, Prakhar replied that his class was going on a little longer then and it had not finished yet. Mother was shocked to hear this, Prakash was a very obedient child and his mother did not expect him to lie. After that, the mother told this to Prakhar's father and both decided that in whatever possible way Prakhar should not spend much time on mobile and laptop.

TRANSLATION EXERCISE # 49

प्रखर की माँ इस बात का ध्यान रखा करती कि प्रखर मोबाइल पर क्या कर रहा है, क्लास ख़त्म होते ही वह मोबाइल ले लेती। पिताजी ने भी अपना लैपटॉप प्रखर को देना कम कर दिया। जब भी प्रखर को कोई स्कूल का कुछ काम होता, कुछ और ज़रूरी काम होता, जो सिर्फ लैपटॉप से ही हो सकता था तब ही प्रखर को लैपटॉप मिलता। प्रखर को यह एहसास हुआ कि उसके साथ माँ - पापा आज-कल थोड़ा अलग सा बर्ताव कर रहे थे, एक दिन खाते समय उसने उनसे पूछ ही लिया कि आखिर पिछले कुछ दिन से वह दोनों थोड़ा अलग से रुख क्यों अपना रहे थे। प्रखर के माँ - बाप ने सोचा कि प्रखर से सीधी - सीधी बात कर ली जाए। उन्होंने प्रखर से पूछा कि क्या उसे लगता है कि पिछले कुछ दिन से उसका लैपटॉप और फ़ोन पर ज़रुरत से ज़्यादा समय बीत रहा था? इस पर प्रखर ने जवाब दिया कि दरअसल वह अपने एक दोस्त प्रमोद के कारण एक गेम खेलने का आदि हो गया था, क्लास ख़त्म होते ही दो से तीन घंटे वो और उसके और कुछ दोस्त गेम खेलते। प्रखर ने बताया कि उसने खुद बहुत कोशिश कि वह इस आदत को किसी तरह से ख़त्म करे लेकिन उसके लगातार कोशिशों के बावजूद वह ऐसे नहीं कर पा रहा था। उसने बताया कि जबसे माँ ने उस पर नज़र रखना शुरू किया है, तब से उसे इस आदत को छोड़ने में बहुत मदद मिली है। यह सब सुन कर मानो जैसे प्रखर की माँ की आँखें भर आयी, उन्हें लगा कि आखिर उनकी मेहनत सफल हुई। प्रखर के माता पिता ने चैन की सांस ली और अपने नम्र रवैये से ही प्रखर को रास्ते पर लाने से वह बहुत ही खुश थे। कुछ दिन बाद प्रखर की खुद ही मोबाइल कम इस्तेमाल करने की आदत हो गयी, लोगों से बात करना, खेलना - कूदना और किताबें पढ़ना अब उसे ज़्यादा अच्छे लगते थे।

Help

एहसास - Realise

बर्ताव - Behave

रुख - attitude

आदि - addict

लगातार - Consistent

Translation

Prakhar's mother used to take care of what Prakhar was doing on mobile; she would take the mobile as soon as the class was over. His father also stopped giving his laptop to Prakhar. Whenever Prakhar used to do some school work, something so important so much so which could have been done only by laptop, then Prakhar was able to get the laptop. Prakhar realized that his mother and father were treating him a little differently so one day, he finally asked them that since the last few days why they were having a slightly different attitude. Prakhar's parents thought to talk directly to Prakhar. They asked Prakhar if he felt that he was spending more than the recommended time on laptop and phone for the last few days. On this, Prakhar replied that in fact, he had got addicted to playing a game with one of his friends Pramod, he and some of his friends would play the game for two to three hours after the class was over. Prakhar told that he tried very hard to end this habit in some way but despite his constant efforts, he was not able to do it. He said that ever since his mother started keeping an eye on him, it has helped him a lot to quit this habit. Hearing all this, as if Prakhar's mother became emotional, she felt that her hard work finally paid off. Prakhar's parents felt relaxed and were very happy to bring Prakhar on the right path keeping such a soft attitude towards him. A few days later, Prakhar himself got used to spending less time on mobile phones, interacting with people, sports and reading books were now being more liked by him.

TRANSLATION EXERCISE # 50

कुछ हद तक, उसकी बात सही है; लेकिन पूरी तरह नहीं। अगर आप इसके दूसरे पहलू पर गौर करें, तो आप पायेंगे कि जो बात मैं कह रहा हूँ, उसमें भी दम है। कोर्ट किसी भी पक्ष की बात सुने बिना फैसला नहीं दे सकता। अच्छा, दूसरी बात ये है कि आप ये भी तो देखिए कि कितने लोग उस वक्त वहाँ खड़े थे। अगर एकाद दो होते, तो कोई कुछ नहीं कहता; लेकिन वहाँ तो 50 से ज्यादा लोग थे। और ऊपर से, आसपास पुलिस भी नहीं दिख रही थी। एक पल के लिए तो मुझे लगा था कि मैं गया, पर भगवान का शुक्र है कि मैं सही सलामत हूँ।

Help

कुछ हद तक – To some extent

पहलू - Aspect

एकाद – one or two

और ऊपर से - Moreover

आसपास - around

Translation

To some extent, he is right; But not quite/completely. If you look at the other aspect of this, you will find that the thing I am saying is logical too. The court cannot pass judgment without hearing any/either of the parties. Well, the second thing is that you should also see how many people were standing there at that time. If there were one or two, nobody would say anything; but there were more than 50 people out there. Moreover, the police was not seen around. For a moment, I thought that I was gone, but thank God that I am safe.

TRANSLATION EXERCISE # 51

क्या कभी किसी ने सोचा होगा कि एक दिन हम चाँद पर होंगे! ये सपने जैसा ही था, है ना? लेकिन अब लगता है कि ये निकट भविष्य में सम्भव होने वाला है। ठीक इसी तरह, जो भी कुछ आज हमें मुश्किल लगता है, वो ज़रूरी नहीं मुश्किल हो। इसलिए, हमें कम से कम प्रयास ज़रूर करना चाहिए। और साथ ही, हमें धैर्य भी रखना चाहिए क्योंकि अगर कोई चीज़ उतनी मुश्किल नहीं है, तो उतनी आसान भी नहीं है।

Help

लगता है – seems

ठीक इसी तरह – Similarly

ज़रूरी नहीं - not necessarily

धैर्य - patience

Translation

Would anyone have ever thought that one day, we will be on the moon! It was just like a dream, wasn't it? But now it seems that it is going to be possible in the near future. Similarly, whatever seems difficult to us today is not necessarily difficult (out of the reach). Therefore, we must at least try. As well, we should keep patience because something, if not that difficult, is not that easy either.

TRANSLATION EXERCISE # 52

अगर मैं कहूँ कि कोई व्यक्ति केवल 6 महीने के अन्दर एक लाख रूपये महीना कमा सकते हैं, वो भी घर से काम करके; तो आपको हैरानी ज़रूर होगी। लेकिन ब्लॉगिंग आज एक ऐसा करियर है जिसने ये सम्भव कर दिया है। इसलिए मैंने फैसला लिया है कि मैं अपने देश के युवाओं को सक्षम बनाऊँगा कि कैसे ब्लॉगिंग के ज़रिये अपना भविष्य बना सकते हैं और अच्छा पैसा कमा सकते हैं। मैं इस प्रोजेक्ट पर दिन रात काम कर रहा हूँ जिसे मैंने नाम दिया है www.wemakebloggers.com

Help

हैरानी – Amaze

युवा – Youth

सक्षम बनाना – To empower

दिन रात - day and night

Translation

If I say that one can earn 1 Lakh a month within only 6 month, that too working from home; you will surely be amazed. But Blogging is such a career option today that has made it possible. Therefore, I've decided that I'll empower the youth of my country on how they can make their career through blogging and earn good money. I'm working on this project day and night that I've named www.wemakebloggers.com

TRANSLATION EXERCISE # 53

पक्का उसने सोचा होगा कि लोग उसकी कमज़ोरियों की हँसी नहीं उड़ायेंगे; पर शायद वो नहीं जानता था कि उसके आसपास ऐसे कई लोग हैं जिन्हें दूसरों को नीचा दिखाने में बहुत मज़ा आता है। शायद उसने सोचा हो कि उसके दोस्त हाथ बढ़ायेंगे और उसकी ताकत बनेंगे।

Help

कमज़ोरियाँ – Weaknesses

हँसी उड़ाना – To mock

आसपास – Around

नीचा दिखाना – To belittle

Translation

He must have thought that people would not mock his weaknesses, but maybe he didn't know that there were many such people around him who enjoyed a lot belittling others. He might have thought that his friends would lend him their hands and become his strength.

TRANSLATION EXERCISE # 54

ज़ाहिर है कि आप एक ही जोक को बार बार सुनकर बोर हो जाते हैं और आपको हँसी भी नहीं आती। ठीक उसी तरह से, एक ही समस्या को लेकर बार बार रोना समस्या का हल नहीं है। हर किसी को अपनी समस्या के बारे में बताकर समय व ऊर्जा को व्यर्थ न करे। केवल अपने खास मित्रों से साझा करें और खुद ही हल ढूँढने का प्रयास करें।

Help

ज़ाहिर – Obvious

हँसी आना – To feel laughter

हल – Solution

ऊर्जा - Energy

खुद ही – Oneself

Translation

It's obvious that you get bored by listening to the same joke again and again and you don't feel laughter. Similarly, crying over the same problem repeatedly is not the solution. Don't waste your time and energy by telling everyone about your problem. Only share with your close friends and try to look for the solution yourself.

TRANSLATION EXERCISE # 55

वो अपने घर का अकेला कमाने वाला था। परसों, मैंने उसे दूर एक कोने में बैठे देखा। लग रहा था कि वो ध्यान से कुछ सोच रहा है। उसने बताया कि उसे महीनों से बोनस नहीं मिला है। पर आज सुबह ही जब उसके भाई से बात हुई तो पता चला, बोनस तो दूर, उसे महीनों से सैलेरी तक नहीं मिली है।

Help

कमाने वाला – Breadwinner

परसों - Day before yesterday

ध्यान से – To ponder

पता चलना – To get to know

Translation

He was the lone breadwinner (the only earner) of his house. The day before yesterday, I saw him sitting at a distant corner. He seemed to be pondering over something. (It seemed that he was pondering over something.) He let me know (told me) that he hadn't received (got) a bonus for months. But, just in the morning today, when I had a word (spoke) with his brother, I got to know that leave the bonus (the bonus is a farfetched thing), he hadn't even got his salary for months.

TRANSLATION EXERCISE # 56

ईंटों पर रखे लकड़ी के तख्ते और रेत और बजरी के ढेर अक्सर मुझे बीते कल की याद दिला देते हैं। मैं जब छोटा था, तो अक्सर अपने पिताजी को मजदूरी करते देखा करता था। वो भले ही एक दिहाड़ी मजदूर थे, पर उन्होंने हमेशा मेरी पढ़ाई पर जोर दिया और मुझे अमीर बनने के लिए प्रेरित किया। आज मैं जो भी हूँ, सारा श्रेय उन्हीं को जाता है।

Help

लकड़ी के तख्ते – Wooden battens/planks

बजरी – Gravel

अक्सर – Often

दिहाड़ी मजदूर - Daily wage laborer

श्रेय देना – To credit

Translation

The wooden battens/planks kept on the bricks and the piles of sand and gravel often remind me of the past (a bygone era). When I was little (a kid), I would (used to) often see my father doing wages. Even if/though he was a daily wage laborer, but/yet/still he always forced/insisted me to study and inspired/motivated me to become rich. Whatever I am today, all credit goes to him.

TRANSLATION EXERCISE # 57

खिड़की खोलते ही मुझे पता चल गया कि वो कोई लड़का नहीं बल्कि लड़की है। वो कई पुरुष अभिनेताओं की हूबहू नकल कर सकती है। लगता ही नहीं कि आवाज़ किसी और की है। जब मैंने पहली बार उसकी मिमिक्री सुनी, तो मैं पागल हो गया। जब से वो इंडस्ट्री में है, मैं उसका फैन हूं।

Help

हूबहू – Precisely

लगना - Seem

नकल करना – To mimic

Translation

The moment I opened the window, I got to know that it was not a boy but a girl. She can mimic several male actors precisely. It doesn't seem/look like somebody else's voice. When I heard her mimicry for the first time, I was speechless. Ever since she has been in the industry, I'm her fan.

TRANSLATION EXERCISE # 58

एक बार की बात है, एक शेर रास्ते के किनारे लगे बरगद के पेड़ के नीचे सो रहा था। एक चींटी उसी रास्ते से जा रही थी। वो गलती से शेर के ऊपर चढ़ गयी। नींद खराब होने पर, शेर तेज़ दहाड़ते हुए उठा। वो चींटी पर चिल्लाया "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझे परेशान करने की?" चींटी मौत के डर से काँपने लगी।

Help

बरगद का पेड़- Banyan tree

गलती से - Accidentally/ mistakenly

चिल्लाना – To yell

Translation

Once upon a time, a lion was sleeping under a banyan tree at the roadside/by the side of the road/ alongside the road. An ant was going (walking) through the same path (road). She accidentally/ mistakenly went over/ upon/ on the lion. On his sleep being disturbed, the lion woke up roaring loud (in/ with a loud roar). He yelled/shouted at the ant "How dare you bother me?" The ant started shivering/trembling (began to shiver/tremble) with the fear of death.

TRANSLATION EXERCISE # 59

थोड़ी ही देर बाद आग बुझा देना वरना चारों तरफ फैल जाएगी। यह कहकर, वह चल दिया; लेकिन उसे भी क्या पता था, जिसे उसने ये कहा था, उसका पूरा ध्यान तो मोबाइल पर गेम खेलने पर था। वैसे तो उसे खुद ही आग बुझा देनी चाहिए थी; लेकिन फिर भी, इसका ये मतलब तो नहीं है न, कि दूसरा व्यक्ति परवाह तक न करें। अगर मैंने समय रहते इस पर ध्यान नहीं दिया होता, तो यह घातक हो सकता था।

Help

बुझाना - Put out

चारों तरफ - Around

फैलना – Spread

परवाह करना – Care

घातक - Fatal

Translation

Put out (Extinguish) the fire just after a while or else (otherwise) it will spread all around. After saying this, he walked away; but he had no idea, whom he had said that (so), had the whole focus on playing games on mobile. Though, he should have extinguished it (put it out) himself, but still, it doesn't mean that the other person doesn't even care. If I hadn't noticed well before time, it could have been devastating/ fatal/ hazardous/ dangerous/ perilous/ precarious/ unsafe/ threatening.

TRANSLATION EXERCISE # 60

इस रूम में, जहाँ मैं आपको पढ़ा रहा हूँ, एक split ac है। इसका जो पाईप है, जहाँ से ये दीवार के छेद के रास्ते बाहर जा रहा है, बाहर की तरफ एक चिड़िया ने घोंसला बना दिया है। कल मैंने कुछ चीं चीं की आवाज सुनी। जब बाहर गया तो मैंने घोंसले में चिड़िया के तीन बच्चे देखे। अब जब वो सोते हैं, केवल तभी वीडियोज़ बना पा रहा हूँ।

Help

छेद - Hole

घोंसला – Nest

चीं चीं की आवाज – Chirping

Translation

This room, where I am teaching you, has a split AC. (In this room, where I am teaching you, there is a split ac.) Its pipe, from where it is going out, through the hole in the wall; a bird has made a nest on the outside. Yesterday, I heard some chirping. When I went outside, I saw three chicks (baby birds) in the nest. Now, only when they sleep, I am able to make videos.

TRANSLATION EXERCISE # 61

कभी मैं गाय को हरी सब्जियाँ खिला देता था, चींटी को चीनी, कौए को रोटी, बिल्ली को दूध, कुत्तों को माँस वगैरह वगैरह। लोग अक्सर पूछते थे, "क्यों करते हो?" वो कहते थे, "फल की इच्छा में किया गया कोई भी काम किसी काम का नहीं होता।" मैंने कभी बहस नहीं की, लेकिन हमेशा माना, "भले ही मैंने पुण्य की चाह में किया, कम से कम किया तो। मैं उनसे तो बेहतर हूँ, जिन्होंने कुछ नहीं किया।"

Help

खिलाना – To feed/ fetch

वगैरह वगैरह – etc. / and so on

बहस करना – Argue

पुण्य की चाह - Sake of virtue

Translation

Sometimes I used to feed (fetch) green vegetables to the cow, sugar to the ant, bread to the crow, milk to the cat, meat to the dogs, etc. People would often ask, "Why do you do this?" They would say, "Any work done in the desire of fruit is of no use." I never argued but always believed, "Even if I did for the sake of virtue (for the will of the fruit), at least I did it. I'm better than those who did nothing."

TRANSLATION EXERCISE # 62

हवा बहुत तेज़ थी। इतनी तेज़ कि ये किसी को भी दूर फेंक सकती थी। मैं बस 5 मिनट पहले ही गाड़ी चलाकर घर वापस पहुँचा था। चारों ओर अँधेरा था। मैंने किसी के कदमों की आहट सुनी। मैं डर के मारे काँपने लगा। अचानक से ऐसा लगा मानो एक इन्सानी छाया दबे पाँव मुख्य दरवाजे की ओर गयी। हाँलाकि ये डरावना था, फिर भी मैं किसी तरह उसके पीछे जाने का साहस जुटा सका। ये कोई ओर नहीं बल्कि मेरा छोटा भाई अमन था।

Help

हवा – Wind

दूर फेंकना – Throw away

अँधेरा – Dark

कदमों की आहट – Footsteps/ Footfall

काँपना – Shiver / Tremble

डरावना – Terrifying/ Horrifying

Translation

The wind was very strong. So strong, that it could blow anyone away. I had driven back home just 5 minutes ago. It was dark all around. I heard someone's footsteps. I began to shiver with fear. Suddenly, it seemed as if a human shadow tiptoed towards the main door. Though it was terrifying; still, I could somehow gain the courage to go after him.

SACHIN TENDULKAR

1.

दुनिया के सर्वश्रेष्ठ क्रिकेटर में से एक सचिन रमेश तेंदुलकर का जन्म 24 अप्रैल, 1973 में बॉम्बे शहर में हुआ था। सचिन के पिताजी ने उनका नाम अपने पसंदीदा संगीतकार सचिन देव बर्मन के ऊपर रखा था। सचिन को उनके बड़े भाई, रमाकांत आचरेकर के पास लेकर गए, रमाकांत अचरेकर बहुत ही प्रसिद्ध कोच थे। कहा जाता है कि सचिन ने पहली बार जब आचरेकर के सामने बल्लेबाजी की तो उन्होंने बढ़िया प्रदर्शन नहीं किया, सचिन के ख़राब प्रदर्शन को देख कर, अचरेकर ने सचिन को क्रिकेट सिखाने से मना कर दिया। सचिन के भाई के निवेदन करने पर अचरेकर ने दोबारा सचिन का खेल देखा, लेकिन इस बार सामने से नहीं, सचिन की नज़रों से छुप कर। इस बार सचिन ने बेहतरीन पारी खेली, इस पारी को देख कर आचरेकर प्रभावित हो उठे, उन्होंने सचिन को अपनी एकेडमी में ले लिया। इसके बाद, रमाकांत आचरेकर ने सचिन तेंदुलकर को अपने स्कूल बदलने की सलाह दी, अपने कोच की सलाह मानकर सचिन ने शारदाश्रम विद्यामंदिर स्कूल में दाखिला ले लिया, ऐसा इसलिए किया गया था क्योंकि वहाँ के स्कूल की क्रिकेट टीम बहुत अच्छी थी। अच्छे टीम में खेलने पर सचिन को भी बहुत फायदा होता। इसके बाद सचिन, रमाकांत अचरेकर की देख रेख में शिवाजी मैदान में अभ्यास करने लगे। सचिन के शिवाजी मैदान पर किये जाने वाले अभ्यास के बारे में एक बहुत ही अनोखा किस्सा अक्सर बताया जाता है। जब सचिन बैटिंग का अभ्यास करने आते थे, उनके कोच रमाकांत आचरेकर बेल्स के जगह एक रूपए का सिक्का विकेट के ऊपर रख देते थे। अब शर्त ये रखी जाती थी कि जो कोई गेंदबाज़ सचिन की विकेट लेगा, उस गेंदबाज़ को वो सिक्का इनाम के रूप में मिल जायेगा और अगर कहीं सचिन को पूरे दिन कोई आउट नहीं कर पाया तो वो सिक्का सचिन का हो जाता था। सचिन ने सालों बाद एक इंटरव्यू के दौरान बताया था कि वो सिक्के आज भी उन्होंने बहुत संभाल के रखे हैं। उन्होंने कहा था कि उनके पास 13 ऐसे सिक्के हैं और वे सिक्के उनके लिए बाकी हर इनाम से कहीं बढ़ कर हैं।

One of the best cricketers in the world, Sachin Ramesh Tendulkar was born on 24 April 1973 in the city of Bombay. Sachin's father named him after his favourite musician, Sachin Dev Burman. Sachin's elder brother took him to Ramakant Achrekar; Ramakant Achrekar was considered a very famous coach. It is said that when Sachin

batted in front of Achrekar for the first time, he did not perform well, seeing Sachin's poor performance, Achrekar refused to teach Sachin cricket. At the request of Sachin's brother, Achrekar saw Sachin's game again, but this time not being present in front of him, rather hiding from Sachin's eyes. This time Sachin played an excellent inning, Achrekar was impressed by seeing this innings, he accepted Sachin in his academy. After this, Ramakant Achrekar advised Sachin Tendulkar to change his school, following the advice of his coach, Sachin enrolled at the Shardashram Vidyamandir School, which was done because the school's cricket team was very decent there. Playing in a good team would also benefit Sachin. After this, Sachin started practising in Shivaji Maidan under the supervision of Ramakant Achrekar. A very unique anecdote/story is often told about Sachin's practice at the Shivaji Maidan. When Sachin came to practice batting, his coach Ramakant Achrekar would place a rupee coin on the wicket in place of bails. Now the condition was that whoever took the wicket of Sachin, that bowler would get that coin as a reward and if someone could not dismiss Sachin for the whole day, that coin would go to Sachin. Sachin had told during an interview years later that even today he has kept those coins very well. He had said that he has 13 such coins and these coins are more than any other reward for him.

2.

बचपन से ही तेंदुलकर का खेल बहुत ही ऊँचे स्तर का था, आस - पास के स्कूलों में और मुंबई के लोग सचिन को भविष्य का स्टार खिलाड़ी मानते थे। स्कूल की तरफ से खेलने के साथ - साथ सचिन क्लब से भी क्रिकेट खेला करते थे, उन्होंने बॉम्बे के सबसे मुख्य क्लब टूर्नामेंट से से एक कांगा लीग में भी अपनी छाप छोड़ी। सचिन इसके बाद बीच में चेन्नई भी गए, वहाँ जाके उन्होंने एम् आर एक पेस फ़ाउंडेशन में डेनिस लिली से तेज़ गेंदबाज़ी सीखना चाहा, डेनिस लिली ने सचिन को अपनी बल्लेबाज़ी पर ही ध्यान देने को कहा, इसके बाद सचिन ने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा। सचिन इतनी कम उम्र में इतनी बढ़िया बल्लेबाज़ी करते थे कि उन्हें ही बॉम्बे के सर्वश्रेष्ठ क्रिकेटर का विजेता माना जा रहा था, सचिन को भी भरोसा था कि वही जीतेंगे। जब विजेता का नाम घोषित हुआ, तब पता चला कि सचिन तेंदुलकर

को इनाम नहीं मिला है, सचिन इस बात से निराश थे। भारत के उस समय के बेहतरीन बल्लेबाज़ों में शुमार, विश्व विख्यात बल्लेबाज़ सुनील गावस्कर ने सचिन का मनोबल बढ़ाने के लिए उन्हें अपने पैड टोफ़े के रूप में दे दिए। 1988 में सचिन टेंदुलकर ने अपने बहुत अच्छे दोस्त और पूर्व भारतीय बल्लेबाज़ विनोद कांबली के साथ विश्व रिकार्ड साझेदारी बना डाली। संत ज़ेवियर स्कूल के खिलाफ, हैरिस शील्ड टूर्नामेंट में खेलते हुए, सचिन और कांबली ने 664 की विशाल साझेदारी बना दी। इस साझेदारी में टेंदुलकर के नाम 326 रन थे। कुछ समय बाद ही, 1989 में मात्र सोलह साल की उम्र में सचिन रमेश टेंदुलकर का बरसों का सपना पूरा हुआ। सचिन को घरेलू टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन का बेहतरीन इनाम मिला, उन्हें भारतीय सलैक्टर्स ने कपिल देव को बड़े आराम से खेलते हुए देखा। इसके अलावा रणजी ट्रॉफी में भी सचिन ने अपना लोहा मनवाया था, अपने पहले ही मैच में सचिन ने गुजरात के विरुद्ध शतक जड़ा था।

He also made his mark in the Kanga League, one of the most prominent club tournaments in Bombay. Sachin then also went to Chennai meanwhile after this, going there, he wanted to learn fast bowling from Dennis Lillee at the MRF Pace Foundation, Dennis Lillee asked Sachin to focus on his batting, after which Sachin never looked back. Sachin used to bat so well at such a young age that he was considered the winner of Bombay's best cricketer, Sachin was also confident that he would win. When the winner's name was announced, it was revealed that Sachin Tendulkar had not received the prize, Sachin was disappointed. One of India's finest batsmen of that time, world-renowned batsman Sunil Gavaskar gave him his pad as a gift to boost Sachin's morale. In 1988, Sachin Tendulkar formed a world record partnership with his very good friend and former Indian batsman Vinod Kambli. Against Sant Xavier School, playing in the Harris Shield tournament, Sachin and Kambli formed a huge 664 partnership. Tendulkar had 326 runs to his name in this partnership. Shortly after, Sachin Ramesh Tendulkar's year-long dream came true in 1989 at the age of just sixteen. Sachin got the best reward for his brilliant performance in the domestic tournament, he was observed by Indian selectors playing Kapil Dev very comfortably. Apart from this, in the Ranji Trophy too, Sachin proved his mettle; Sachin scored a century against Gujarat in his very first match.

3.

14 नवंबर, 1989 को सचिन तेंदुलकर को देश की तरफ से खेलने का पहला मौका मिला। बात है पाकिस्तान टूर की, राम सिंह डूंगरपुर को सचिन के सिलेक्शन का श्रेय दिया जाता है। पाकिस्तान से पहले तेंदुलकर को वेस्ट इंडीज़ भी भेजने की तैयारी थी, लेकिन वहाँ के तेज़ गेंदबाज़ के सामने इतने युवा बल्लेबाज़ को उत्तरना सही नहीं समझा गया। अपनी पहली अंतर्राष्ट्रीय पारी में सचिन ने मात्र 15 रन ही बनाये, सबसे बड़ी बात ये रही कि पाकिस्तान के तेज़ गेंदबाज़ की आग उगलती गेंदें कई बार उनके शरीर पर भी लगी, इसके बाद भी सचिन घबराये नहीं बल्कि बड़ा जुझारूपन दिखाते हुए बल्लेबाज़ी की। उस सीरिज़ के आखिरी मैच में तेंदुलकर के साथ दुर्घटना हुई, सिआलकोट में वकार यूनुस की एक तीखी और तेज़ गेंद उनके नाक पर जा लगी। बहुत खून बहा, इन सब के बावजूद तेंदुलकर ने मेडिकल सहायता लेने से मन कर दिया, उन्होंने चोट लगने के बाद भी बल्लेबाज़ी की। इस मैच में तेंदुलकर ने 57 रन बनाये, इसकी मदद से भारत उस मैच को ड्रा करने में सफल रहा। इसके बाद जब वन डे खेलने का पहला मौका मिला, तेंदुलकर शून्य के स्कोर पर ही पवेलियन लौट गए। इस टूर के बाद, तेंदुलकर को न्यूज़ीलैंड के टूर पे जाने का मौका मिला। वहाँ भी उन्होंने कुछ बेहतरीन परियाँ खेली, इनमें से एक में उन्होंने 88 रन बनाये, इस पारी में वह सबसे युवा शतक वीर बनने से चूक गए। इंग्लैंड के टूर पर जाकर, सचिन ने अपने टेस्ट करियर का पहला शतक लगाया, उन्होंने एक शानदार अंग्रेजी बॉलिंग के सामने बहुत ही उम्दा बल्लेबाज़ी की। मैनचेस्टर के मैदान पर जब सचिन का बल्ला चला, उस दिन भारत एक निश्चित लग रही हार से बच गया। वो पारी सचिन के बेहतरीन परियों में से एक मानी जाती है, इस पारी की खास बात ये थी कि इतनी कम उम्र में इंग्लैंड की ज़मीन पर पूरे विश्वास के साथ सचिन ने अपने खेल का प्रदर्शन किया।

On November 14, 1989, Sachin Tendulkar got his first chance to play for the country. It is the story of Pakistan tour, Ram Singh Dungarpur is credited with the selection of Sachin. Before Pakistan, Tendulkar was about to be sent to the West Indies, but it was not considered right to play such a young batsman in front of the fast bowler there. In his first international innings, Sachin scored just 15 runs, the biggest thing was that the Pakistan fast bowler's balls were breathing fire and it hit his body many times, even after that, Sachin did not panic but strived hard and batted along. In the last match of that series, there was an accident with Tendulkar, a nasty and pacy ball of

Waqar Younis hit his nose in Sialkot. Despite all this, Tendulkar refused to seek medical help, despite all this, he batted despite the injury. Tendulkar scored 57 runs in this match, with the help of which India managed to draw that match. After this, when Tendulkar got his first chance to play ODI, Tendulkar returned to the pavilion at the score of zero. After this tour, Tendulkar got a chance to go to the New Zealand tour. There too he played some of the best innings, scoring 88 runs in one of these, he missed on becoming the youngest centurion in this innings. Going on the tour of England, Sachin scored the first century of his Test career, he batted very well against a brilliant English bowling unit. India survived a certain defeat when Sachin's bat did the talking on the field of Manchester. This inning is considered to be one of Sachin's finest innings; the special thing of this innings was that Sachin played his game with full confidence on the English soil at such a young age.

4.

इस टूर के बाद भारत ने ऑस्ट्रेलिया का दौरा किया, वहाँ पर अक्सर ऐसा कहा जाता है कि बल्लेबाज़ों को उछाल से परेशानी होती है। तेंदुलकर छोटे कद के थे, उनकी लम्बाई मात्र पाँच फ़ीट पाँच इंच थी, इन सब के बावजूद तेंदुलकर ने छोटी गेंदों का शानदार तरीके से सामना किया। हूक हो या पुल, तेंदुलकर ने सब में महारत हासिल कर रखी थी। यहाँ पर उनका प्रदर्शन इंग्लैंड से भी बढ़िया रहा, यहाँ उन्होंने दो बड़े शतक लगाए, तेज़ और उछाल लेती पिच पर उन्होंने इतना शानदार प्रदर्शन करके सबको हैरान कर दिया। इसके कुछ ही दिन बाद विश्व कप होने वाला था, तेंदुलकर भी उस टीम का हिस्सा थे। विश्व कप में भारतीय टीम ने तो कुछ खास प्रदर्शन नहीं किया, तेंदुलकर ने कुछ अच्छी परियाँ खेली। इसके बाद तेंदुलकर ने धीरे - धीरे वन डे में भी अपना जलवा दिखाना शुरू किया। 78 वन डे खेलने के बाद, सचिन तेंदुलकर ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अपना पहला शतक लगाया। तेंदुलकर ने विदेशी ज़मीन पर ढेर सारे रन बनाये, दरअसल भारत ने उस समय विदेशी टूर भी बहुत किये थे। इस बीच न्यूज़ीलैंड में खेली गयी एक पारी में मात्र 49 गेंदों में ही 82 रन बना दिए। उस समय 100 के स्ट्राइक रेट से खेलने वाले बल्लेबाज़ को भी बहुत तेज़ माना जाता था, उस हिसाब से यह पारी अविश्वसनीय थी। इन सालों में साल दर साल तेंदुलकर कि बल्लेबाज़ी निखरती चली गयी, एक सीरिज़ के बाद दूसरी, इस प्रकार उन्होंने पूरे विश्व को अपने बल्लेबाज़ी का मोहताज़ बना लिया था। जब पूरा

विश्व टेंदुलकर की बल्लेबाज़ी का कायल था, सचिन किसी और के कायल थे। 1990 में एयरपोर्ट पर हुई अंजलि से मुलाकात ने उन्हें अंजलि का मोहताज़ बना दिया था, आखिर 1995 में उन्होंने अंजलि से विवाह कर लिया। 1996 विश्व कप में भारत खिताब का प्रबल दावेदार माना जा रहा था, सेमीफाइनल तक तो भारत का सफर बहुत ही शानदार रहा था, यहाँ तक कि उन्होंने क्वार्टरफाईनल मुकाबले में पाकिस्तान को भी मात दी थी। टेंदुलकर पूरे टूर्नामेंट में भारत की तरफ से सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज़ थे, लगभग हर मुकाबले में उन्होंने कमाल की बल्लेबाज़ी की थी।

After this tour, India toured Australia, where it is often said that batsmen have trouble with the bounce. Tendulkar was of short stature; his height was just five feet five inches, despite all this, Tendulkar faced the short balls brilliantly. Be it a hook or a pull, Tendulkar had mastered everything. His performance here was also better than England, here he scored two big centuries, he surprised everyone by performing so brilliantly on the fast and bouncy pitch. A few days later, the World Cup was going to be held, Tendulkar was also part of that team. The Indian team did not perform great in the World Cup, Tendulkar played some exemplary innings. After this, Tendulkar gradually started showing his class in ODIs too. After playing 78 ODIs, Sachin Tendulkar hit his first century against Australia. Tendulkar made a lot of runs on foreign soil; in fact, India also did a lot of foreign tours at that time. Meanwhile, in an innings played in New Zealand, he scored 82 runs in just 49 balls. At that time, a batsman playing at a strike rate of 100 was also considered pretty quick, according to that this inning was unbelievable. Over the years, Tendulkar's batting continued to flourish year after year, one series after another, thus making the entire world enchanted to his batting. When the whole world was mesmerised by Tendulkar's batting, Sachin was enthralled by someone else. The meeting with Anjali at the airport in 1990 made her an admirer of Anjali; finally, in 1995 she married Anjali. In the 1996 World Cup, India was considered a strong contender for the title, India's journey to the semi-finals was very impressive, even beating Pakistan in the quarter-finals. Tendulkar was the highest run-scorer for India in the entire tournament, batting brilliantly in almost every match.

5.

दक्षिण अफ्रीका के दूर पर तेंदुलकर 169 ने रन की एक और शानदार पारी खेली, इस पारी से प्रभावित होकर दक्षिण अफ्रीका के महान गेंदबाज़ ऐलन डोनाल्ड ने कहा कि तेंदुलकर की वो पारी देख कर उन्हें तालियां बजाने का मन हुआ। उस पारी में मोहम्मद अज़रुद्दीन के साथ सचिन ने एक ऐसी साझेदारी कर डाली जो इतिहास के पन्नों में लिखी जायेगी। इसी प्रकार सचिन का रन बनाने का सिलसिला जारी रहा। उस समय ऑस्ट्रेलिया के महान स्पिनर शेन वॉर्न का दौर चल रहा था, अपनी गेंदबाज़ी से वॉर्न बल्लेबाज़ों को इशारे पर नचा रहे थे। 1998 में आखिर दुनिया के दो बेहतरीन क्रिकेटरों की भिड़ंत हुई, सचिन और वॉर्न। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच शारजाह में मैच हुआ, लगातार दो मैचों में शतक जमा कर, सचिन ने अकेले दम पर भारत को जीत दिलाई। शारजाह में खेली गयी वो पारियाँ, आज तक क्रिकेट के इतिहास में खेली गयी सर्वश्रेष्ठ पारियों में गिनी जाती हैं। उन पारियों को रेगिस्तान का तूफ़ान भी कहा जाता है, ऐसा इसलिए क्योंकि मैच के बीच में तूफ़ान आया था जो की अरब के रेगिस्तान में उठा था। वॉर्न उन पारियों को याद करके, अक्सर यह कहा करते हैं कि सचिन उनके सपने में भी आकर उनकी गेंदों की खूब धुनाई करते हैं। उसके अगले साल तेंदुलकर ने पाकिस्तान के दूर पे ढेर सारे रन भी बटोरे। कहते हैं कि महान वो होते हैं जो मुश्किल वक्त में भी हौसला नहीं टूटने देते और आगे बढ़ते हैं। 1999 में इंग्लैंड में विश्व कप आयोजित हुआ, विश्व कप के बीच में ही सचिन तेंदुलकर के पिताजी श्री रमेश तेंदुलकर का देहांत हो गया, सचिन बीच में टूनमेंट छोड़ भारत आ गए। अब बात विश्व कप की थी, सचिन ने तुरंत ही अपने अगले मैच में वापसी की, केन्या के खिलाफ नाबाद 140 रन बना कर, उन्होंने ये शतक अपने स्वर्गीय पिता को समर्पित किया। ऐसे मुश्किल वक्त में भी सचिन ने अपना साहस और हौसला बनाये रखा, उनकी ये पारी उनके करियर के कुछ खास पारियों में से एक है, ऐसे तो सचिन ने कई शतक जड़े हैं, लेकिन जिन परिस्थितिओं में ये पारी खेली गयी वो इसे यादगार बना देती है।

Tendulkar played another brilliant inning of 169 runs on the tour of South Africa, impressed by this innings, South African great bowler Alan Donald said that he felt like clapping after seeing that innings of Tendulkar. In that innings, Sachin formed a partnership with Mohammad Azharuddin that would be written in the pages of history. Similarly, Sachin continued to score runs. At that time, Australia's great spinner Shane Warne was dominating the era, with his bowling, Warne was making

the batsmen go clueless against him. In 1998, two of the best cricketers in the world clashed, Sachin and Warne. The match between India and Australia was held in Sharjah, scoring a century in two consecutive matches, Sachin single-handedly won India. Those innings played in Sharjah are counted among the best innings played in the history of cricket till date. Those innings are also referred to as desert storms because there was a storm in the middle of the match that erupted in the Arabian Desert. Warne, remembering those innings, often says that Sachin comes in his dream and smashes his balls a lot. The following year, Tendulkar also got a lot of runs on the tour of Pakistan. It is said that greats are the ones, those who do not let the courage shatter, even in difficult times and move forward/march ahead. The World Cup was held in England in 1999, Sachin Tendulkar's father Mr Ramesh Tendulkar died in the middle of the World Cup, Sachin left the tournament in the middle and came to India. Now as it was the World Cup, Sachin immediately returned to his next match, scoring an unbeaten 140 against Kenya, he dedicated this century to his late father. Even in such difficult times, Sachin kept his courage and grit, this inning is one of the few innings in his career, Sachin has scored many centuries, but the circumstances in which this inning was played would make it a memorable one.

6.

1996 के दौरान विश्व कप के बाद, सचिन को कप्तानी सौंपी गयी, अज़रुद्दीन इसके बाद कप्तान बनाये गए। सचिन का प्रदर्शन कप्तानी में गिर गया, इसके साथ ही साथ भारतीय टीम की प्रदर्शन भी खराब होता चला गया। सचिन से सबको बहुत उम्मीद थी, इतने सारे लोगों की उम्मीद का बोझ शायद सचिन पर थोड़ा भारी पड़ गया, सचिन कप्तान के रूप में विफल रहे। ऐसे बुरे अनुभव के बावजूद, उन्हें दोबारा कप्तान बनाया गया, इस बार भी भारतीय टीम को हार का ही मुँह देखना पड़ा। आखिर, साल 2000 में भारत को सौरव गांगुली के रूप में एक नया कप्तान मिला, एक ऐसा कप्तान जो अपनी टीम को जानता था, उनसे सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करा सकता था। सौरव गांगुली की कप्तानी में भारत बहुत सफल रहा। इसके बाद, सचिन ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अपनी शानदार बल्लेबाज़ी जारी रखी, भारत ने

2001 में ऑस्ट्रेलिया को 2 -1 से शिकस्त दी, तेंदुलकर की उसमे बहुत ही अहम भूमिका रही थी। बल्लेबाज़ी के साथ ही साथ सचिन ने गेंदबाज़ी में भी सुर्खियाँ बटोरी, कई बार, बहुत ही अहम मौकों पर, अपने लेग स्पिन गेंदबाज़ी के दम पर उन्होंने विरोधी टीम को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया। 2002 में वेस्ट इंडीज़ में हो रही टेस्ट सीरिज़ में सचिन ने अपने करियर का 29 वां शतक लगाया, इसके साथ ही उन्होंने विश्व के सर्वकालिक महान बल्लेबाज़ कहे जाने वाले डॉन ब्रेडमैन की टेस्ट शतकों की बराबरी कर ली। इस उपलब्धि पर खुद सर डॉन ने कहा कि उन्हें खुद की बल्लेबाज़ी तो नहीं याद है, उन्होंने कहा कि सचिन को बैटिंग करते देख, उन्हें ऐसा महसूस होता है कि मानो वो ऐसे ही खेला करते होंगे। इतने महान व्यक्तित्व से प्रशंसा मिलना अपने आप में एक अनोखी उपलब्धि है। इतने बेहतरीन बल्लेबाज़ी का प्रदर्शन करने के बाद, कुछ समय के लिए सचिन का फॉर्म थोड़ा सा बिगड़ गया, उनके स्कोर खराब नहीं थे, लेकिन उनके हिसाब से वो खराब ही कहे जाते।

After the World Cup during 1996, Sachin was handed the captaincy, with Azharuddin being made the captain thereafter. Sachin's performance fell under the captaincy, with the Indian team's performance also deteriorating. Everyone was expecting a lot from Sachin, the burden of expectation of so many people might have taken a toll on Sachin, Sachin failed as a captain. Despite such a bad experience, he was made captain again, this time also the Indian team had to face defeats. After all, in the year 2000, India got a new captain in the form of Sourav Ganguly, a captain who knew how to get the best performance out of his team. India was very successful under the captaincy of Sourav Ganguly. After this, Sachin continued his phenomenal batting against Australia, India defeated Australia 2–1 in 2001, Tendulkar played a very crucial role in that. Along with batting, Sachin also hogged the limelight, on many occasions, on very important occasions; he forced the opposing team to capitulate to his leg-spin bowling. In the Test series in the West Indies in 2002, Sachin scored the 29th century of his career, and with this, he equalled the Test centuries of Don Bradman, who is regarded as the world's greatest batsman of all time. On this achievement, Sir Don himself said that he does not remember his own batting, he said that seeing Sachin batting, he feels as if he would have played like this. Getting praise from such a great personality is a unique achievement in itself. After

exceptional performances with the bat, for some time Sachin's form deteriorated a bit, his scores were not bad, but according to his standards, they would have been called so.

7.

फॉर्म में थोड़ी गिरावट के बीच 2003 विश्व कप आया, इस बार विश्व कप दक्षिण अफ्रीका में हो रहा था, भारत एक युवा टीम के साथ गया था इसलिए जोश और उत्साह भरपूर था। हमेशा ही सचिन ने विश्व कप में अपना जलवा दिखाया है, भले ही इसके पहले वो कभी भारत को विजेता न बना पाए हों। इस बार भारत ने बेहद ही शानदार क्रिकेट खेली, तेंदुलकर हमेशा की तरह सबसे आगे खड़े होकर विरोधियों का सामना करते आये, अपने बल्ले से उन्होंने हर गेंद का जवाब दिया। इसके साथ ही साथ उन्होंने उन टिप्पणी करने वालों को भी करारा जवाब दिया जो उनकी आलोचना कर रहे थे। तेंदुलकर के व्यक्तित्व की सबसे खास बात यही थी, आज के गर्म स्वभाव के युवा खिलाड़ियों के विपरीत, सचिन बेहद ही शांत और सुलझे हुए रहते थे। कितनी भी मुश्किल परिस्थिति हो, सचिन कभी अपने चेहरे पर शिकन तक नहीं आने देते थे। सचिन ने मैदान के अंदर या बाहर, कभी किसी खिलाड़ी या कोच के साथ किसी भी प्रकार की बहस या बयानबाज़ी नहीं की है। उनकी शालीनता उनके व्यक्तित्व की सबसे खास बात थी, कभी किसी टिप्पणी का जवाब उन्होंने मुँह के बजाय अपने खेल या बल्ले से दिया। 2003 विश्व कप में भारत फ़ाइनल तक पहुँचा, एक मैच पाकिस्तान के साथ भी हुआ था और उसमें 98 रन की शानदार पारी खेली, भारत उनकी इस पारी की बदौलत जीतने में कामयाब रहा। फ़ाइनल में ऑस्ट्रेलिया ने पहाड़ जैसा स्कोर बना डाला, उनके कप्तान ने शायद अपने जीवन की सबसे बेहतरीन पारी खेली, भारत की उम्मीदें सचिन पर टिकी हुई थीं। इस बार तेंदुलकर उम्मीदों के बोझ को नहीं संभल पाए, पारी की शुरुआत में एक चौका लगाने के तुरंत बाद ही मैग्रा की छोटी गेंद पर पुल करते हुए अपना विकेट गँवा बैठे। भारत इसके बाद उम्मीदें छोड़ ही चुका था, सहवाग ने थोड़ी साहसी पारी खेल कर थोड़ी उम्मीदें बाँधी लेकिन अंत में वही हुआ जिसका डर था, इतने शानदार सफर तय करने के बाद भारत फ़ाइनल में ऑस्ट्रेलिया से बुरी तरह हार गया। 2003 में भारतीय टीम ऑस्ट्रेलिया का दौरा करने गयी, स्थिति बहुत ही विपरीत थी, ऐसा मन जा रहा था कि भारत टिक ही नहीं पायेगा। इस दूर पर भारत को कुछ नए युवा सितारे मिले, राहुल द्रविड़ ने यहाँ रनों का अंबार लगाया, इन सबके बीच जो सबसे अनोखी पारी देखने को मिली वो सचिन ने खेली।

The 2003 World Cup came amid a slight decline in form, this time the World Cup was being held in South Africa, India went with a young team so the enthusiasm and excitement were at a high. Sachin has always shown his mettle in the World Cup, even if he wasn't able to win India the trophy before that. This time India played splendid cricket, Tendulkar always stood at the forefront facing the opponents, answering every ball with his bat. At the same time, he also gave a befitting reply to those critics who were criticizing him. The most special thing about Tendulkar's personality was that, unlike today's hot-tempered young players, Sachin was very calm and composed. No matter how difficult the situation be, Sachin would never panic. Sachin has never made any argument or controversial statement with any player or coach, on or off the field. His modesty was the most special thing about his personality, he always responded to a comment with his performance or bat instead of his mouth. In the 2003 World Cup, India reached the final, a match was also played with Pakistan and played a brilliant inning of 98 runs, India managed to win as a result of this innings. Australia scored a monumental score in the final, their captain played perhaps the best innings of his life, India's hopes rested on Sachin. This time Tendulkar could not handle the burden of expectations, losing his wicket while pulling a short ball from McGrath soon after hitting a four at the beginning of the innings. India had already given up hope after that, Sehwag gave a glimmer of hope after playing a gusty inning but at the end, the outcome was what was feared, after such a wonderful journey, India lost awfully in the final. In 2003 the Indian team went to tour Australia, the circumstances were pretty hostile, it was believed that India would not be able to even survive. On this tour, India got some new young stars, Rahul Dravid scored piled on huge runs here, amidst these the most unique innings among them was played by Sachin.

8.

सचिन ने एक बेहद ही खतरनाक ऑस्ट्रेलियाई बॉलिंग लाइन अप के सामने लाजवाब बल्लेबाज़ी की। दरअसल, यह पारी कई मायनों में खास थी, हुआ ये था कि तेंदुलकर ऑफ स्टंप के बाहर जाती गेंदों को खेलने के चक्कर में आउट हो रहे थे, ऐसा इसलिए भी क्योंकि उन्हें कवर ड्राइव मरना बहुत पसंद था। लेकिन इस बार उनकी कवर ड्राइव उनके विकेट का कारण बन रही थी, इस से परेशान होकर सचिन ने एक अविश्वसनीय पारी खेली, एक ऐसी पारी जिसमें उन्होंने कवर की दिशा में शॉट ही नहीं लगाया। ऑफ स्टंप की लाइन पर उन्हें कई गेंदें डाली गयी, लेकिन सचिन अपने ज़िद पर अड़े रहे, सारी गेंदें छोड़ते गए। जब भारत की पारी समाप्त हुई तो सचिन का स्कोर 241 था, ऑस्ट्रेलिया के कप्तान स्टीव वॉघ ने खुद माना कि उन्होंने पहले किसी को स्थिति के अनुकूल खुद को इतना ढालते हुए नहीं देखा है। सचिन ने इसके बाद और कई उम्दा पारियाँ खेली, पाकिस्तान जाकर भी उन्होंने मुल्तान में 194 की एक अनमोल पारी खेली। अपने एक साल के ख़राब प्रदर्शन को मानो उन्होंने कब का पीछे छोड़ दिया था। उन सात से आठ सालों में तेंदुलकर अपने फॉर्म के चरम पर थे, हैरानी की बात है कि यह वही समय था जब दुनिया के कई गेंदबाज़ भी आग उगल रहे थे। अकरम, अख्तर, वॉर्न, मैग्रा या मुरलीधरन हो या फिर ब्रेट ली ही क्यों न हो, सबको तेंदुलकर के सामने झुकना पड़ा, इस कारण से सचिन को सदी का सबसे महान बल्लेबाज़ भी कहा जाता है। बिना हेलमेट और साधारण से बैट से खेलते हुए उन्होंने सबके छक्के छुड़ा दिए, आज के समय में ऐसे बैट बनते हैं जो इतने भारी होते हैं कि अगर शॉट बल्ले के बीच में न भी लगे तो सीमा रेखा तक पहुँच ही जाता है।

Sachin batted brilliantly against a very intimidating Australian bowling line up. This inning was special in many ways; it was that Tendulkar was getting dismissed while trying to play the ball outside the off-stump, also because he loved to play the cover drive. But this time his cover drive was becoming the cause of the fall of his wicket, upset by this, Sachin played an incredible inning, an innings in which he did not play a single shot in the covers region. He was bowled several balls at the off-stump line, but Sachin remained adamant on his resolution, leaving all the balls. When India's innings ended, Sachin's score was 241, with Australia captain Steve Waugh himself admitting that he had not seen anyone adapt himself to the situation at such an extent before. Sachin played many stupendous innings after this, even after going to

Pakistan; he played pivotal innings of 194 in Multan. It was as if he had left behind the poor performances of the year. In those seven to eight years, Tendulkar was at the peak of his form, surprisingly it was at the same time that many bowlers of the world were also on their pinnacle. Whether it was Akram, Akhtar, Warne, McGrath, Muralitharan or Brett Lee, everyone had to surrender against Tendulkar, for this reason, Sachin is also called the greatest batsman of the century. Playing with an ordinary bat and without a helmet, he ruled the roost, in today's era, the bats are made so heavy that even if the shot does not come from the middle of the bat, it reaches the boundary line.

9.

अगले कुछ सालों में तेंदुलकर भारत की तरफ़ से इतना ज्यादा नहीं खेले क्योंकि उन्हें चोट लग रही थी, आखिर फॉर्म में वापसी करते हुए और चोटों से उबरते हुए सचिन टीम में वापस आये। इस बार मौका था 2007 विश्व कप का, वेस्ट इंडीज़ इस बार इसका आयोजन कर रहा था, भारत की टीम से देश को बहुत उम्मीद थी, सभी उम्मीदों पर पानी फेरते हुए भारतीय टीम कई दशकों बाद ग्रुप स्टेज में ही बाहर हो गयी। बांग्लादेश ने भारत को हरा कर बाहर का रास्ता दिखाया था। इन सब के बीच कप्तानी पर भी सवाल उठे, तेंदुलकर ने धोनी को कप्तान बनाने का सुझाव दिया, इसके बाद जो हुआ वह अब इतिहास है। एक बेहद ही ख़राब विश्व कप के अनुभव के बाद भारतीय टीम अगले साल ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ़ खेलने गयी, तेंदुलकर ने पुराना रूप दिखाया, मैदान के हर तरफ़ रन बटोरे, ऑस्ट्रेलिया की कमर तोड़ दी। भारत ने ऑस्ट्रेलिया को रौंदते हुए इतिहास में पहली उनकी धरती पर वनडे सीरिज़ जीती। सचिन ने अपने स्ट्रेट ड्राइव से सबको अपना दीवाना बना दिया था, तीर की तरह सीधा उनका शॉट जब बल्ले से निकलता था तो लगता था मान लो बंदूक से गोली। उनके एक शतक और एक नब्बे के स्कोर के दम पर भारत त्रिकोणीय सीरिज़ का विजेता बना। इसके बाद साल के अंत में चेन्नई में एक नामुमानिन से लग रहे लक्ष्य का सचिन ने बेहद ही आसान तरीके से पीछा कर लिया। चेन्नई की घुमाव लेती पिच पर शायद ही किसी ने सोचा होगा कि चौथी पारी में भारत लक्ष्य का पीछा कर पायेगा, लेकिन सचिन होते हैं तो सब मुमकिन होता है। सचिन का पूरा करियर ही कुछ इस प्रकार रहा है, ख़ास कर से उनके शुरुआती दौर में कोई साथी नहीं मिलता था, वे अकेले ही भारत की तरफ़ से मोर्चा संभाल कर रखते

थे। अपने करियर के ज्यादातर मैचों में वे भारत की तरफ से इकलौते बल्लेबाज हुआ करते जो विरोधी को जवाब दे पाता, बाकी सब जल्दी आउट होकर पवेलियन लौट जाते।

In the next few years, Tendulkar did not play so much from the Indian side as he was getting injured, finally returning to form and recovering from the injuries, Sachin returned to the team. This time it was the occasion of the 2007 World Cup, the West Indies were hosting it this time, the country had high hopes from the Indian team, after shattering all expectations, the Indian team crashed out in the group stages, which happened after several decades. Bangladesh showed the door to India. Amidst all this, there were also questions on the captaincy, Tendulkar suggested Dhoni be the captain, what happened after that is now history. After a very poor World Cup campaign, the Indian team went on to play against Australia the following year, Tendulkar showed his vintage form, scoring runs across all sides of the field, demolishing Australia. India won the first ODI series on their soil, rampaging Australia. Sachin had made everyone a big fan with his straight drive, when his shot came off the bat and went straight like an arrow, it seemed as if it were a bullet coming out of a gun. India became the winner of the tri-series backed by his century and a score of ninety. After this, at the end of the year, Sachin conquered a seemingly impossible looking goal in Chennai in an extremely eased way. Hardly anyone would have thought that on the turn-taking Chennai pitch, India will be able to chase down the target in the fourth innings, but if Sachin is there then everything is possible. Sachin's entire career has been something like this, especially in his early days he did not get any partner; he alone managed to hold the fort for India. In most of the matches of his career, he would have been the only batsman from India who had an answer for the opponent; the rest would be dismissed early and return to the pavilion.

10.

2009 में भारत ने न्यूज़ीलैंड से सीरीज़ खेली, तेंदुलकर का बल्ला जम कर बरसा, इस प्रकार उनके रन बनाने का सिलसिला जारी रहा। एक साल बाद, 2010 में कुछ ऐसा हुआ जिसकी कल्पना किसी ने नहीं की थी। भारत दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ वन डे खेल रहा था, ग्वालियर के मैदान पर यह मैच सचिन के इस कारनामे से ऐतिहासिक बन गया। सचिन ने ऐसे तो कई बड़े स्कोर बनाये थे, इनमें से सबसे ऊपर उनकी 175 रन की एक पारी थी जो ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पिछले साल ही उन्होंने खेली थी। धीरे - धीरे खेलते हुए कब तेंदुलकर उस आंकड़े को पार कर गए, पता ही नहीं चला, अंत में एक सिंगल ले कर सचिन ने दोहरा शतक जड़ कर पूरी दुनिया को अचंभित कर दिया। आखिर किसने सोचा था कि वन डे, जिसमें केवल पचास ओवर बल्लेबाज़ी करने मिलती है, उसमें कोई बल्लेबाज़ दोहरा शतक जड़ देगा, सचिन आखिर सचिन ही हैं और इसलिए हम उन्हीं से ये कीर्तिमान रचने की उम्मीद भी कर सकते थे। मैच में भारत की बड़ी जीत हुई, सचिन ने इतिहास रचा। रनों का पहाड़ लगते हुए 2011 आ गया, इसके साथ ही आ गया विश्व कप, इस बार विश्व कप कई सालों बाद भारतीय महाद्वीप में आयोजित हो रहा था, भारत जैसे देश में, जहाँ लोग क्रिकेट को अपना धर्म मानते हैं, वैसी जगह अगर विश्व कप हो तो टीम से उम्मीदें बेशुमार थी। धोनी की कप्तानी वाली टीम इंडिया इस बार ट्रॉफी पर हाथ रखने के लिए तैयार नज़र आ रही थी, ऐसी अटकलें थीं कि शायद यह सचिन तेंदुलकर का आखिरी विश्व कप साबित हो। इस कारण से खिलाड़ियों पर दबाव भी बहुत ज़्यादा था, आखिर इतने बड़े महारथी को शानदार विदाई जो देनी थी। भारत ने पूरे टूर्नामेंट में बेहतरीन प्रदर्शन किया, सचिन, सहवाग, युवराज, रैना और ज़हीर, सबने अपनी तरफ से पूरा योगदान दिया। पूरी टीम एक जुट हो कर खेल रही थी। क्रार्टरफर्नल में ऑस्ट्रेलिया, फिर सेमीफाइनल में पाकिस्तान को हरा कर भारत के हौसले बुलंद थे और इच्छायें आसमान छू रही थी। फाइनल में श्रीलंका से भिड़ंत हुई, 275 रन का लक्ष्य देख कर सबकी साँसे कुछ देर के लिए थम सी गयी। टीम में सचिन और सहवाग थे, उम्मीद इन्हीं से थी, मलिंगा ने अपनी दो गेंदों से इन दोनों को पवेलियन भेजा, पूरा स्टेडियम शांत हो चुका था। अंत में धोनी और गंभीर की शानदार पारियों की बदौलत भारत 28 साल बाद विश्व विजेता बना।

In 2009, India played a series with New Zealand, Tendulkar showed an outstanding display of batting, thus continuing his run making form. A year later, in 2010, something happened that no one had imagined. India was playing one day against South Africa, this match on the fields of Gwalior became historic with this historic

feat of Sachin. Sachin had scored many big scores as such, on top of these he had an innings of 175 runs which he played against Australia last year itself. It was not realised when Tendulkar crossed that figure while playing at a slow pace, in the end, by taking a single, Sachin astonished the whole world by scoring a double century. After all, who thought that a batsman would score a double century in One Day, in which one only gets to bat just fifty overs, Sachin is Sachin after all and so we could expect him to create this record as well. India won the match, Sachin created history. Meanwhile piling up huge scores and runs, 2011 arrived, along with came the World cup, this time the World Cup was being held in the Indian continent after many years, in a country like India, where people consider cricket as their religion, if the World Cup is hosted at such a place then expectations from the team was ought to be immense. Team India captained by Dhoni looked ready to lay their hands on the trophy this time, there was speculation that it might prove to be Sachin Tendulkar's last World Cup. For this reason, the pressure on the players was also very high, after all, such a great legend had to be given a magnificent farewell. India performed well throughout the tournament, with Sachin, Sehwag, Yuvraj, Raina and Zaheer all contributing from their end. The whole team was playing cohesively. India was upbeat after beating Australia in the quarterfinals, then Pakistan in the semi-finals, and wishes were skyrocketing. In the final, Sri Lanka clashed, seeing the target of 275 runs, everyone's heart skipped a beat for a while. Sachin and Sehwag were in the team, there were hopes from them, Malinga sent both of them to the pavilion with two of his deliveries, and the entire stadium went quiet. Finally, thanks to the brilliant innings of Dhoni and Gambhir, India became world champions after 28 years.

11.

अपने इतने लम्बे करियर में सचिन ने छे विश्व कप खेले, लेकिन उन्हें जीत अपने अंतिम विश्व कप में ही मिली। सचिन को उनके साथी खिलाड़ियों ने कंधे पर बिठा कर पूरे वानखेड़े स्टेडियम का चक्कर लगाया, सचिन के हाथ में तिरंगा था जिसे वे गर्व से लहरा रहे थे। वर्तमान समय में भारत के कप्तान विराट कोहली ने उस समय एक बड़ी ही सुन्दर बात कही थी। उन्होंने कहा था कि सचिन ने इतने साल तक देश और देशवासियों की उम्मीदों का बोझ अपने कंधे पर लेकर क्रिकेट खेला है, अब हमारी बारी है कि हम उन्हें अपने कंधे पर ले। पूरे देश के साथ ही साथ सचिन का भी बरसों का सपना 2 अप्रैल 2011 को पूरा हुआ, भारत विश्व विजेता बना। विश्व कप जीतने के बाद मानो ऐसा लग रहा था कि अब सचिन का करियर पूर्ण हो चुका है, उन्होंने हर कुछ हासिल कर लिया है जो एक क्रिकेटर कर सकता है, बस एक रिकॉर्ड उनके नाम होना बाकी था। वो रिकॉर्ड था सौ अंतराष्ट्रीय शतकों का, सचिन एक साल से 99 शतकों पर लटके हुए थे, आखिर 2012 में बांग्लादेश के विरुद्ध खेलते हुए तेंदुलकर ने अपने करियर का सौवां शतक जड़ा, इसके साथ ही उन्होंने ऐसा रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया जिसे तोड़ना अब शायद ही किसी के बस की बात हो। अगले साल, यानी की साल 2013 में सचिन तेंदुलकर ने अपने घरेलू मैदान पर अपने करियर का आखिरी अंतराष्ट्रीय मैच खेला, अपनी अंतिम पारी में वे 74 रन बना कर आउट हुए। उनकी महानता का पता इस बात से लगाया जा सकता है कि अपनी आखिरी पारी में जब सचिन आउट हुए, उन्हें आउट करने वाले गेंदबाज़ ने किसी भी प्रकार कि खुशी नहीं जताई, इससे इस बात का पता चलता है कि उनके सन्यास लेने से पूरी दुनिया, पूरा क्रिकेट जगत दुखी था।

In his long career, Sachin played six World Cups, but he won it only in his last World Cup. Sachin was carried on the shoulder by his fellow players and circled the entire Wankhede Stadium, Sachin was carrying the tricolour which he was proudly waving. India's present-day captain Virat Kohli said a very beautiful thing at that time. He had said that Sachin has played cricket with the burden of hopes of the country and countrymen on his shoulder for so many years, now it is our turn to carry him on our shoulders. Along with the whole country, Sachin's dream came true on 2 April 2011, India became the world winner. After winning the World Cup, it seemed as if Sachin's career had reached its climax, he had achieved everything a cricketer could do, with

just one record left to his name. That record was of hundred international centuries, Sachin was stranded on 99 centuries for a year, after playing against Bangladesh in 2012, Tendulkar scored the hundredth century of his career, with which he made a record which could hardly be broken in the future. The next year, that is in 2013, Sachin Tendulkar played the last international match of his career at his home ground, he was dismissed for 74 in his last innings. His greatness can be sensed from the fact that when Sachin was dismissed in his last innings, the bowler who dismissed him did not express any ecstasy, this shows that with his retirement, the whole world, the entire cricket fraternity was saddened.

12.

सचिन तेंदुलकर भारतीय क्रिकेट के स्तम्भ हैं, उनके देश और विदेश में लाखों करोड़ों फैन हैं, उन्हें चाहने वालों की दीवानगी इस हद तक है कि उन्हें क्रिकेट का भगवान भी कहा जाता है। सचिन ने अनेक मौकों पर देश का प्रतिधिनित्व किया है, देश का नाम रौशन किया और कई मैचों में भारत को जीत दिलाई। सचिन ने अपने 25 साल के करियर में कई रिकार्ड कायम किये, इनमें टेस्ट और वन डे में सबसे ज्यादा रन और शतकों का रिकॉर्ड शामिल है। सचिन को खेल के प्रति और देश के प्रति समर्पण के लिए भारत के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया। सचिन वैसे तो मात्र पाँच फ़ीट पाँच इंच के थे, लेकिन उनकी मेहनत और लगन ने उन्हें शिखर पर पहुँचा दिया। सचिन की तकनीक ऐसी थी कि इतने साल खेलने के बाद भी और इतने सारे गेंदबाज़ों के खिलाफ खेलने के बाद भी उनके खिलाफ कोई कमज़ोरी नहीं ढूँढ पाया। अपने खेल के प्रति समर्पण और लगन के साथ ही साथ कड़ी मेहनत से प्रोत्साहित होकर भारत ने और कई महान क्रिकेटरों को जन्म दिया। सचिन मात्र एक क्रिकेटर नहीं थे, बदलते भारत की पहचान थे, एक नए और प्रगतिशील भारत का प्रतीक थे, भारत की औद्योगिक प्रगति एवं क्रिकेट में भारत की बदलती स्थिति एक दूसरे की परछाई थी। सचिन की कहानी कई लोगों के लिए एक बहुत बड़ी उम्मीद की किरण है, कई बच्चों ने क्रिकेट सचिन को देख कर ही खेलना शुरू किया। भारत जैसे देश में, जहाँ ऐसा कहा जाता है पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब, खेलोगे कूदोगे बनोगे ख़राब, ऐसे देश में खेल के द्वारा इतनी प्रसिद्धि और इज़्ज़त हासिल कर के सचिन ने करोड़ों भारतीयों की सोच ही बदल डाली। अब तेंदुलकर सन्यास के बाद, अपने घरेलू जीवन का आनंद उठा रहे हैं, भारत बहुत सौभाग्यशाली है जो सचिन जैसे महान व्यक्ति ने यहाँ जन्म लिया।

Sachin Tendulkar is a pillar of Indian cricket, he has millions of fans at home and abroad, the passion of those who love him is to the extent that he is also called the God of cricket. Sachin has represented the country on many occasions, made the country proud and won India several matches. Sachin holds many records in his 25-year career, including the record for most runs and centuries in Tests and One Day. Sachin was awarded the Bharat Ratna, India's highest honour for his dedication towards the game and the nation. Although Sachin was only five feet five inches, his hard work and dedication made him reach the pinnacle. Such was Sachin's technique that even after playing for so many years and playing against so many bowlers, they could not find any weakness against him. Encouraged by hard work along with dedication and devotion to his game, India gave birth to many more great cricketers. Sachin was not just a cricketer, an identity of a changing India, a symbol of a new and progressive India, India's industrial progress and India's transcending in cricket was a reflection of each other. Sachin's story is a new ray of hope for many people, many children started playing cricket after seeing Sachin. In a country like India, where it is said that if you will study, you will become a big shot, if you play, you will remain ordinary, Sachin changed the thinking of billions of Indians by gaining so much fame and respect through sports in such a country. Now Tendulkar is enjoying his personal life after retirement, India is very fortunate that a great personality like Sachin was born here.

MAHENDRA SINGH DHONI

1.

राँची के राजकुमार और भारतीय टीम के सबसे सफल कप्तानों में से एक, महेंद्र सिंह धोनी का जन्म 7 जुलाई, 1981 को हुआ था। बचपन में धोनी फुटबॉल और बैडमिंटन बहुत अच्छा खेलते थे, अपने स्कूल डी ऐ वी की फुटबॉल टीम के गोल कीपर थे। धोनी ने डिस्ट्रिक्ट और क्लब स्तर पर भी ये दोनों खेल खेले। एक बार अपनी टीम के साथ फुटबॉल की प्रैक्टिस करते समय, उनके एक शिक्षक ने उन्हें गोल कीपिंग करते हुए देखा। जिस तरह से धोनी की नज़रें गेंद की तरफ केंद्रित थीं और उनके हाथों में तेज़ी देख कर उनके शिक्षक ने उन्हें विकेट कीपिंग में हाथ आज़माने को कहा। धोनी वैसे क्रिकेट नहीं खेलते थे लेकिन विकेट कीपिंग उन्हें अच्छी लगने लगी, कमांडो क्रिकेट क्लब की तरफ से वे नियमित रूप से खेलने लग गए। अपने क्लब कमांडो क्रिकेट क्लब की तरफ से खेलते हुए उन्होंने कुछ बड़ी ही शानदार पारियाँ खेली। इसके बाद साल 1998 में देवल सहाय उनके खेल से प्रभावित हुए और उन्हें अपनी टीम सेंट्रल कोल फ़ील्ड्स में ले लिया। देवल सहाय ने धोनी का उत्साह बढ़ने के लिए एक इनाम रख दिया था, धोनी के शीश महल टूर्नामेंट में लगाए जाने वाले छक्के पर वो उन्हें पचास रूपए देते। देवल सहाय की पहुँच ऊपर तक थी, उन्होंने धोनी के खेल से प्रभावित हो कर उनके लिए बिहार रणजी टीम में खेलने के लिए बात की। राँची की टीम और उसके बाद बिहार की जूनियर टीम से खेलने के बाद धोनी ने बिहार रणजी टीम के लिए 2000 में पहला मैच खेला। देवल सहाय बिहार क्रिकेट संघ के पूर्व उप सचिव थे, धोनी अपने करियर में उन्हें एक बड़ा प्रेरणा स्रोत मानते हैं। इस बीच धोनी के करियर में उतार चढ़ाव बने रहे, घरेलू मुक़ाबलों के लिए कभी उनका चयन होता था और कभी - कभार वो चूक भी जाते थे। एक बार एक टूर्नामेंट में चयन हुआ, इस बात का पता उन्हें नहीं बल्कि उनके दोस्तों को अखबार के ज़रिये पता चला। जल्दबाज़ी में अपने दोस्तों की मदद से वह एयरपोर्ट पहुंचे लेकिन वहाँ पहुँचने पर पता चला कि टीम की फ्लाइट निकल चुकी थी, इसके बाद भी धोनी निराश नहीं हुए।

Prince of Ranchi and one of the most successful captains of the Indian team, Mahendra Singh Dhoni was born on 7 July 1981. As a child, Dhoni played football and badminton very well, being the goalkeeper of the football team of his school

DAV. Dhoni also played both these games at the district and club level. Once while practising football with his team, one of his teachers saw him goal-keeping. The way Dhoni's eyes were focused towards the ball and seeing the quickness in his hands, his teacher asked him to try his hand at wicket-keeping. Dhoni did not play cricket as such but he started liking wicket-keeping, he started playing regularly from the Commando Cricket Club. While playing for his club Commando Cricket Club, he played some great innings. After this, in the year 1998, Deval Sahay was impressed with his game and took him in his team - Central Coal Fields. Deval Sahay had kept a reward to motivate Dhoni; he would give Dhoni fifty rupees for the sixes he hit during the Sheesh Mahal tournament. Deval Sahay had connections; he was impressed by Dhoni's game and recommended for him to play in the Bihar Ranji team. Dhoni played the first match for the Bihar Ranji team in 2000 after playing with the Ranchi team and then the junior team of Bihar. Deval Sahay was a former deputy secretary of the Bihar Cricket Association, and Dhoni considers him a major source of inspiration in his career. Meanwhile, Dhoni's career continued to fluctuate, he was sometimes selected for domestic matches and sometimes he missed out. Once he was selected in a tournament, it was not known to him but his friends came to know through the newspaper. He rushed to the airport with the help of his friends in a hurry but upon reaching there, it was found that the team's flight had departed, even then Dhoni was not disappointed.

2.

धोनी के व्यक्तित्व की यह बहुत ही खास बात थी, वह जल्दी निराश नहीं होते थे, मुश्किल आने पर वे कभी घबराते नहीं थे या विचलित नहीं होते थे। 1999 की कुछ बिहार ट्रॉफी में फाइनल में एक बेहद ही रोमांचक घटना हुई, बिहार और पंजाब की टीमों के बीच मैच था, इस मैच में धोनी के भविष्य के साथी खिलाड़ी, भारत के विस्फोटक बल्लेबाज़ युवराज सिंह भी थे। पहली पारी में बिहार ने एक सामान्य स्कोर बनाया, इसमें धोनी ने 84 रन का योगदान दिया। लेकिन इन सब के बाद जब पंजाब की बल्लेबाज़ी आयी तो कुछ खास हुआ, शायद ऐसा पहले कभी किसी ने नहीं देखा होगा। युवराज सिंह ने

358 रन की शानदार पारी खेली, ये स्कोर पूरे बिहार की टीम से ज़्यादा था। ऐसे लाजवाब खेल के बाद युवराज का चयन लगभग पक्का था, धोनी को और इंतज़ार करना पड़ा। रेलवे में धोनी को एक टिकट कलेक्टर के रूप में नौकरी मिल गयी, लेकिन काम और खेल के बीच में संतुलन बनाने में सक्षम नहीं थे। भारतीय अंडर 19 टीम में भी सिलेक्शन न होने पर भी धोनी निराश नहीं हुए थे, इस मौके को एक चुनौती की तरह ले कर उन्होंने और मेहनत करने की ठानी। 2002 में BCCI ने टैलेंट रिसर्च विंग का गठन किया, इस समिति का मकसद था छोटे शहर के प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को राष्ट्रीय स्तर पर खेलने का मौका देना, जो खिलाड़ी छोटे शहर, गाँव या कस्बे से ताल्लुक रखते हैं, वे अक्सर बड़े शहर के खिलाड़ियों से पीछे रह जाते हैं क्योंकि गाँव में सुविधाएँ कम हैं और मौके भी नहीं मिलते। धोनी ने घरेलू क्रिकेट में अपनी पहचान बनाना शुरू की, कुछ अच्छी पारियाँ खेलने के बाद, एक बार देओधर ट्रॉफी में उन्हें सलैक्टर के सामने अपना जलवा दिखाने का मौका मिला।

This was the special thing about Dhoni's personality, he didn't get disheartened easily, and he never panicked or got distracted when a difficult situation arrived. A very exciting event took place in the finals of the 1999 Bihar Trophy match between teams from Bihar and Punjab, in this match Dhoni's future teammate, and India's explosive batsman Yuvraj Singh was also playing. In the first innings, Bihar scored an average score, and Dhoni contributed 84 runs. But after all this, when the batting of Punjab came, something special happened, perhaps no one would have witnessed this before. Yuvraj Singh played a brilliant inning of 358 runs, which was more than the total of the entire Bihar team. After such a great performance, Yuvraj's selection was almost certain, Dhoni had to wait longer. Dhoni got a job as a ticket collector in the Railways but was not able to strike a balance between work and sports. Dhoni was not disappointed even after he missed out on selection in the Indian Under-19 team, taking this opportunity as a challenge and decided to work harder. In 2002, the BCCI formed the Talent Research Wing, this committee aimed to give talented small-town players a chance to play at the national level, players who belong to a small city, village or town, often due to players from big cities they are left behind because the facilities in the village are less and opportunities are not available. Dhoni started

to make his mark in domestic cricket, after playing some good innings, once in the Deodhar Trophy; he got a chance to show his flair in front of the selectors.

3.

धोनी ने मौके का भरपूर फायदा उठाया, अपने दमदार प्रदर्शन से उन्होंने सलैक्टर्स को प्रभावित कर दिया। इंडिया ऐ के ज़िम्बाब्वे और केन्या टूर के लिए धोनी का चयन हुआ, वहाँ जाकर धोनी ने पाकिस्तान ऐ के खिलाफ दो बेहतरीन शतक लगाए, इसके साथ ही एक अर्धशतक बनाया। धोनी के प्रदर्शन से प्रभावित होकर उस समय के भारतीय टीम के कप्तान सौरव गांगुली और पूर्व खिलाड़ी रवि शास्त्री ने धोनी को टीम में मौका देने का सोचा। भारत के अगले बड़े टूर के लिए धोनी का चयन हुआ, उन्हें बांग्लादेश के खिलाफ भारतीय टीम में अपना करियर का पहला मैच खेलने का मौका मिला। अपने पहले मैच को शायद वो कभी न भुला पाएँ, अपने पहले ही मैच में धोनी शून्य पर ही रन आउट हो गए। बांग्लादेश सीरिज़ के बाकी मैचों में भी धोनी का प्रदर्शन या तो साधारण या उससे ख़राब ही रहा, इन सब के बावजूद धोनी पर गांगुली ने भरोसा दिखाते हुए उन्हें अगली सीरिज़ के लिए टीम में रखा। पाकिस्तान के खिलाफ हो रहे सीरिज़ के दूसरे मैच में धोनी ने अपने करियर का पहला शतक जड़ दिया, एक धुआंधार अंदाज़ में बल्लेबाज़ी करते हुए धोनी ने 148 रन बनाये, इस पारी की मदद से धोनी ने गांगुली के किये विश्वास को भी सही साबित कर दिया। उनकी इस पारी ने उनके करियर के लिए एक वरदान का काम किया, उस समय भारतीय टीम में एक अच्छे विकेट कीपर की तलाश चल रही थी, कई खिलाड़ियों को आज़माया जा चुका था लेकिन कोई बल्लेबाज़ी ख़राब करता तो कोई कैच छोड़ता। ऐसा कोई खिलाड़ी नहीं मिल पा रहा था जो कि एक भरोसेमंद बल्लेबाज़ हो और विकेट के पीछे चपलता दिखाए। नमन ओझा, दिनेश कार्तिक और धोनी, इस तीनों में मुकाबला था, धोनी के विस्फोटक बल्लेबाज़ी और ग़ज़ब की विकेट कीपिंग क्षमता के चलते वो सलैक्टर्स की पहली पसंद थे।

Dhoni took full advantage of the opportunity, impressing the selectors with his strong performance. Dhoni was selected for India A's Zimbabwe and Kenya Tour, going there, Dhoni scored two brilliant centuries against Pakistan A, along with a half-century. Impressed by Dhoni's performance, the then Indian team captain Sourav Ganguly and former player Ravi Shastri thought of giving Dhoni a chance in the team. Dhoni got selected for the next big tour of India, he got to play the first

match of his career for India against Bangladesh. He may never forget his first match, Dhoni was run out on zero in his first match. In the rest of the Bangladesh series matches, Dhoni's performance was either mediocre or below par, despite all this, Ganguly showed confidence in Dhoni and kept him in the team for the next series. In the second match of the series against Pakistan, Dhoni scored the first century of his career, batting in a blistering way, Dhoni scored 148 runs, this innings also vindicated Ganguly's faith in Dhoni. This innings served as a boon for his career, at that time the Indian team was looking for a good wicket-keeper, many players had been tried but some would perform badly with the bat and others with the gloves. No player could be found who was a dependable batsman and showed agility behind the wicket. Naman Ojha, Dinesh Karthik and Dhoni, all three of them had a competition among them, the first choice of the selectors was Dhoni due to his explosive batting and amazing wicket-keeping ability.

4.

धोनी ने अच्छे फॉर्म को पूरी तरह से भुनाया और श्रीलंका के खिलाफ जयपुर में एक वन डे मैच में नाबाद ताबड़तोड़ 183 रन जड़ डाले। आने वाले सीरिज़ में पाकिस्तान के खिलाफ भी उन्होंने बहुत ही शानदार खेल दिखाया, टीम को मुश्किल से निकाल कर जीत दिलाई। सीरिज़ दर सीरिज़ और साल दर साल धोनी भारतीय टीम का एक अहम हिस्सा बन गए। 2007 विश्व कप में भारत की हार के बाद धोनी के घर के बाहर भी लोगों ने गुस्से में आकर जमके नारेबाज़ी की थी, पुतले जलाये थे। गांगुली के बाद, धोनी को कप्तान बनाया गया, इसमें सचिन का बड़ा हाथ था क्योंकि उन्होंने धोनी के नाम की चर्चा की थी। 2007 में एक नए फ़ॉर्मेट की शुरुआत की गयी, टी 20 फ़ॉर्मेट, एक ऐसा फ़ॉर्मेट जो आज के समय में काफी प्रसिद्ध है। धोनी एक बहुत ही युवा टीम के साथ दक्षिण अफ्रीका गए, सबकी उम्मीदों को पार करते हुए भारत ने इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया जैसी टीमों को मात देते हुए फाइनल तक का सफर तय किया। फाइनल में पाकिस्तान के सामने मुकाबला बहुत ही रोमांचक मोड़ पर आ गया था, एक विकेट बचा था, आखिरी ओवर में 12 रन चाहिए थे और पाकिस्तान का एक विकेट शेष था। हरभजन सिंह, जो भारतीय टीम के अनुभवी गेंदबाज़ थे, उनका एक ओवर बचा हुआ था, उनके अलावा जोगिंदर शर्मा के ओवर भी बचे थे लेकिन वो पहले महँगे साबित हो चुके थे। यह पहला मौका था, जब धोनी ने अपनी अनोखी

सोच का परिचय दिया, हरभजन सिंह के जगह जोगिंदर शर्मा को गेंद थमा दी, पहली गेंद पर लंबा छक्का लगा, ऐसा लगा कि ट्रॉफी हाथ से फिसल गयी, इसके बाद धोनी ने जोगिंदर को पास जाकर कुछ कहा। इसके बाद जो हुआ उसने भारतीय क्रिकेट की तस्वीर बदल दी, धोनी के रखे गए फील्डर को मिस्बाह ने सीधा कैच थमा दिया। भारत पहले टी 20 विश्व कप का विजेता बना, यह धोनी के सुनहरे करियर की शुरुआत थी। अनिल कुंबले के सन्यास लेने के बाद, धोनी को टेस्ट टीम की भी कप्तानी दे दी गयी।

Dhoni fully capitalized on good form and hit an unbeaten 183 in a one-day match against Sri Lanka in Jaipur. He also performed exceptionally well in a game against Pakistan in the upcoming series, taking the team out of trouble and winning it. Series by series and year after year Dhoni became an important part of the Indian team. After the defeat of India in the 2007 World Cup, outside Dhoni's house, people were angry and shouted slogans, burnt effigies. A new format was introduced in 2007, the T20 format, a format that is well known today. Dhoni went to South Africa with a very young team, surpassing everyone's expectations, India defeated teams like England, Australia and reached the final. In the final against Pakistan, the match came to a thrilling point, one wicket left, 12 runs needed in the last over and Pakistan had one wicket remaining. Harbhajan Singh, who was the experienced bowler of the Indian team, had one over left, besides Joginder Sharma's overs were also left but he had proved to be expensive earlier. This was the first time when Dhoni showed his out of the box thinking, gave the ball to Joginder Sharma in place of Harbhajan Singh, the first ball was hit for a long six, it seemed that the trophy slipped out of hand, after that Dhoni went to Joginder and said something. What happened after that changed the picture of Indian cricket, Misbah handed a catch straight into the hands of a fielder positioned by Dhoni. India became the winner of the first T20 World Cup, marking the start of Dhoni's golden career. After Anil Kumble retired, Dhoni was also given the captaincy of the Test team.

5.

2008 में ऑस्ट्रेलिया की ज़मीन पर पहली बार भारत ने धोनी की कप्तानी में वन डे सीरिज़ जीती। फाइनल मैच के दौरान धोनी ने जीत से कुछ गेंद पहले ड्रेसिंग रूम से एक खिलाड़ी को बुलाया, उसे यह कहा कि सबको कह दे कि काफी शांत तरीके से जीत मनानी है, इसके द्वारा वह ऑस्ट्रेलिया को यह संदेश देना चाहते थे कि भारत के लिए ऑस्ट्रेलिया को हराना कोई बहुत बड़ी उपलब्धि नहीं है। धोनी की यह सोच ही उन्हें सबसे अलग करती है, वह जितने शांत और नम्र दिखते हैं, उतना ही वो आम ज़िन्दगी में ज़मीन से जुड़े हुए इंसान हैं। इसके बाद ऑस्ट्रेलिया भारत खेलने आया, धोनी की कप्तानी में भारत ने वो सीरिज़ भी जीती, इसके बाद न्यूज़ीलैंड, फिर दक्षिण अफ्रीका, इन सब के खिलाफ मैच जीत कर भारत को टेस्ट में नंबर वन का दर्जा भी धोनी की कप्तानी में मिला। इन सब के बाद आया साल 2011, वो साल जिसका सबको इंतज़ार था, टीम मज़बूत नज़र आ रही रही, भारत लड़खड़ाते, जीतते हुए फाइनल तक पहुँचा, धोनी ने पूरे टूर्नामेंट में कोई ख़ास पारी नहीं खेली थी, उनके हिसाब से उनका प्रदर्शन बल्ले से बड़ा ही फीका रहा था। धोनी बड़े मैच के प्लेयर माने जाते हैं, मुश्किल वक्त में जब सब अपने आप पर काबू नहीं रख पाते, उस समय महेंद्र सिंह धोनी बर्फ की तरह ठंडे दिमाग से सोचते हैं। फाइनल में भारत श्रीलंका के खिलाफ मुश्किल में था, लक्ष्य का पीछा करते हुए भारत तीन विकेट खो चूका था, युवराज को बल्लेबाज़ी करने जाना था। तभी, धोनी ने देखा कि मुरलीधरन आये हैं। दरअसल, युवराज स्पिनर को उतना अच्छा नहीं खेलते थे, धोनी ने परिस्थिति को भांपते हुए खुद युवराज से पहले बल्लेबाज़ी करने का फैसला लिया। उस समय यह देख कर सब ने काफी आलोचना की क्योंकि पूरे टूर्नामेंट में युवराज ने अपने बल्ले और गेंद से भारत को कई मैच जिताये थे, भारतीय टीम में सबसे अच्छी फॉर्म युवराज की ही थी। इन सब के बावजूद, धोनी खुद गए, धीरे -धीरे संयम के साथ खेलते हुए उन्होंने भारत को लक्ष्य के करीब पहुँचा दिया। अंत में अपने बल्ले से वो ऐतिहासिक छक्का लगाकर भारत को वो अनमोल चीज़ दिलाई जिसका इंतज़ार था।

In 2008, India won the ODI series under Dhoni's captaincy for the first time on the Australian soil. During the final match, Dhoni called a player from the dressing room a few balls before the victory, telling him to tell everyone to celebrate the win in a very quiet way, by this, he wanted to give a message to Australia that for India, defeating Australia is not a big achievement. This mentality of Dhoni makes him different, the more calm and humble he remains, the more he is down to earth

person in normal life. After this, Australia came to play India, India won the series under Dhoni's captaincy, after this winning matches against New Zealand, then South Africa, after being victorious against all of them India also got the number one status in the Test under Dhoni's captaincy. After all, this came the year 2011, the year that everyone was waiting for, the team looked strong, India stumbled, winning meanwhile and reached the final, Dhoni had not played any special innings in the whole tournament, according to his standards, his performance with the bat was pretty off colour. Dhoni is considered the player of the big matches, when everyone loses their control over themselves during difficult situations, Mahendra Singh Dhoni thinks cool headedly. In the final, India was in trouble against Sri Lanka, India had lost three wickets while chasing the target, Yuvraj had to go to bat. Just then, Dhoni noticed that Muralitharan had arrived. In fact, Yuvraj did not play the spinner so well, Dhoni decided to bat before Yuvraj himself, sensing the situation. Seeing this at the time, everyone criticized it because Yuvraj had won many matches for India with his bat and ball in the tournament, the best form in the Indian team of a player was that of Yuvraj. Despite all this, Dhoni went himself, playing slowly with restraint and he brought India closer to the target. In the end, smashing that historic six with his bat, he gave India the precious thing that it was waiting for.

6.

28 साल बाद भारत ने विश्व कप जीता, धोनी इसके बाद ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के दौरे पर गए, वहाँ सारे मैच हार गए। इसके बाद धोनी की कप्तानी पर बहुत सवाल उठे, इसके बाद जीत हार का सिलसिला जारी रहा, भारत इसके बाद 2013 में इंग्लैंड में चैपियंस ट्रॉफी खेलने गया। लगभग 2007 की तरह ही, भारत एक युवा टीम के साथ इंग्लैंड पहुँचा था, सचिन, सहवाग और गंभीर जैसे दिग्गजों के गैर मौजूदगी में भारत इतना मजबूत नहीं दिख रहा था। दक्षिण अफ्रीका के साथ पहला मैच था, धोनी ने सबको चौंकाते हुए, रोहित शर्मा से ओपन करने को कहा, रोहित शर्मा वैसे अक्सर पाँच या छह नंबर पर बैटिंग करने आते थे। रोहित का प्रदर्शन काफी साधारण था, लेकिन धोनी के इस फैसले ने उनके करियर की दिशा ही बदल दी, पहले ही मैच में रोहित ने शतक मारा। आने वाले मैचों में बहुत ही

बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए भारत फाइनल में पहुँचा। फाइनल में एक बार फिर माही का जादू देखने को मिला, अपने क्रिकेट की समझ और मुश्किल परिस्थिति में शांत रह पाने की कला के दम पर धोनी ने कुछ हैरतअंगेज़ फैसले लिए, यह फैसले उस समय बेतुके लगे लेकिन आगे जाकर मैच का टर्निंग पॉइंट साबित हुए। इशांत शर्मा को फाइनल में गेंद थामकर धोनी ने एक और चौंकाने वाला फैसला लिया, इशांत ने इसके बाद दो गेंदों में दो विकेट लेकर मैच का रुख ही बदल दिया। भारत चैपियंस ट्रॉफी विजेता बना। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में बीच धोनी आईपीएल में भी धूम मचा रहे थे, अपनी टीम चेन्नई सुपर किंग्स को उन्होंने अपनी बल्लेबाज़ी और कप्तानी के दम पर शिखर पर पहुँचा दिया था। चेन्नई की टीम ने आईपीएल के पहले संस्करण में फाइनल तक का सफर तय किया, इसके दो साल बाद वे पहली बार मुंबई को हराकर विजेता बने। चेन्नई की टीम अगले संस्करण में भी विजेता रही, इनके आगे वाले संस्करणों में वे फाइनल तक का सफर ही तय कर पाए।

India won the World Cup after 28 years, Dhoni then went on to tour Australia and England, losing all the matches there. After this, there were a lot of questions raised on Dhoni's captaincy, after that a run of victories, as well as defeats, continued, India then went to play the Champions Trophy in England in 2013. Similar to 2007, India had reached England with a young team, India did not look so strong in the absence of veterans like Sachin, Sehwag and Gambhir. The first match was with South Africa, Dhoni surprised everyone, he asked Rohit Sharma to open, Rohit Sharma used to come for batting at number five or six. Rohit's performance was quite average, but Dhoni's decision changed the fate of his career, in the first match, Rohit hit a century. India reached the finals by performing extremely well in the upcoming matches. Mahi's magic was seen once again in the final, Dhoni took some surprising decisions due to his understanding of the game of cricket and the art of remaining calm in a difficult situation, the decisions seemed absurd/pointless at the time but proved to be the turning point of the match. With Dhoni handing the ball to Ishant in the final, Dhoni took another shocking decision, Ishant then changed the course of the match by taking two wickets in two balls. India became Champions Trophy winners. In international cricket, Dhoni was also making headlines in the IPL, he took his team Chennai Super Kings to the pinnacle on the back of his batting and captaincy. The

Chennai team reached the final in the first edition of the IPL, two years after that they defeated Mumbai for the first time and became the winner. The Chennai team was also the winner in the next edition, in the following editions, they were able to reach just till the final.

7.

दिसंबर में भारत ने ऑस्ट्रेलिया का दौरा किया, टेस्ट मैचों में कप्तानी करते हुए, एक सुबह धोनी ने सबको चौंका दिया, सीरिज़ के बीच ही उन्होंने कप्तानी कोहली के हाथों में दे दी और टेस्ट से अपने सन्यास की घोषणा कर दी, वन डे पर ध्यान केंद्रित करने के लिए उन्होंने ये फैसला लिया था। साल 2014 में धोनी पूर्ण रूप से फिनिशर का रोल अदा करने लगे, ऐसे कई मौके आये, जहाँ लक्ष्य नामुमकिन सा लगा लेकिन धोनी ने भारत की जीत सुनिश्चित की। 2012 में एक मैच में भारत को चार गेंदों पर बारह रन चाहिए थे, धोनी ने मात्र तीन गेंदों में जीत भारत के नाम कर दी, ऐसे मौके कई बार आते रहे। इतना ही नहीं, पहले बल्लेबाज़ी करते हुए, जब अंत के ओवरों में भारत को रन तेज़ी से बनाने होते थे, धोनी आकर एक धुआंधार पारी खेल जाते थे। उनकी ऐसी पारियाँ ही जीत और हार के बीच का अंतर पैदा करती थी। भारत हो या विदेशी ज़मीन, धोनी ने भारत के लिए ऐसे कई मैच फिनिश किये जो शायद ही दुनिया का कोई और बल्लेबाज़ कर सकता था। धोनी ने दरअसल, कप्तानी मिलने के बाद से अपने खेलने का तरीका बदला था। अपने करियर की शुरुआत में वे आतिशी पारियाँ खेलते थे, कप्तानी मिलने के बाद उनके खेल में ज़्यादा ज़िम्मेदारी दिखने लगी। टीम की ज़रूरत और परिस्थिति को देख कर, सब कुछ आंकने के बाद, धोनी ये कोशिश करते कि मैच को ज़्यादा से ज़्यादा नज़दीक ले जाएँ, अंत में वे अपने ही अंदाज़ में छक्के या चौके के साथ जीत दिला देते। 2015 में विश्व कप ऑस्ट्रेलिया में हुआ, भारत अच्छा खेला लेकिन सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया से हार गया, यह विश्व कप धोनी के कप्तानी में भारत का आखिरी विश्व कप साबित हुआ। विश्व कप के बाद, वेस्ट इंडीज़ में श्रीलंका के खिलाफ एक रोमांचक मुकाबले में धोनी ने आखिरी ओवर में 17 रन बना कर भारत को मात्र एक विकेट से जीत दिला दी। धोनी की ऐसी कई पारियों के कारण ही उन्हें भारत का ही नहीं बल्कि दुनिया का सर्वश्रेष्ठ फिनिशर कहा जाता है। इसके बाद धोनी का अंदाज़ बदला हुआ नज़र आने लगा, वे ज़्यादा संभल कर खेलने लगे। इसी बीच साल 2017 की शुरुआत में धोनी ने कप्तानी की ज़िम्मेदारी भारत के उभरते सितारे, युवा बल्लेबाज़ विराट कोहली को सौंप दी।

In December, India toured Australia, captaining in the Test matches, one morning Dhoni shocked everyone, he handed over the captaincy to Kohli in the middle of the series and announced his retirement from the Test, he took this decision for focusing on One Day. In the year 2014, Dhoni started playing the role of a finisher, there were many occasions where the target seemed impossible but Dhoni ensured India's victory. In 2012, India needed twelve runs from four balls in a match, Dhoni won the game in just three balls for India, such opportunities kept coming up many times. Not only this, while batting first, when India had to make runs at a quick pace in the final overs, Dhoni came and played a blistering inning. Only his innings produced the difference between victory and defeat. Be it India or foreign soil, Dhoni finished many matches for India which hardly any other batsman of the world could. Dhoni had, in fact, changed his playing style since getting the captaincy. At the beginning of his career he used to play blinding innings, after getting the captaincy, he started showing more responsibility in his game. After judging the need and situation of the team, after assessing everything, Dhoni tried to take the match as close as possible, eventually winning it with sixes or fours in his own way. The 2015 World Cup took place in Australia, India played well but lost to Australia in the semi-finals, it proved to be India's last World Cup under the captaincy of Dhoni. After the World Cup, in a thrilling match against Sri Lanka in the West Indies, Dhoni scored 17 runs in the last over to give India a one-wicket victory. Due to many such innings of Dhoni, he is called the best finisher not only of India but of the world. After this, Dhoni's approach started changing, he started playing more cautiously. Meanwhile, in early 2017, Dhoni handed over the captaincy responsibility to India's rising star, young batsman Virat Kohli.

8.

इसके साथ ही भारतीय क्रिकेट के एक सुनहरे दौर का अंत हुआ, एक ऐसा दौर जिसने भारत को विश्व में एक अलग पहचान दिलाई। खिताब तो भारत ने जीते ही, उसके साथ ही साथ सबसे अहम चीज़ जो थी, वो थी बाकी टीमों पर दबदबा। भारत ने ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका जैसी बड़ी टीमों को पछाड़ा, टेस्ट हो या वन डे, सब में माही की टीम ने शानदार प्रदर्शन किया। इन सब के अलावा, भारत को सबसे अनमोल चीज़ जो धोनी की कप्तानी में मिली, वो थी भारत के युवा खिलाड़ी। विराट, रोहित, आश्विन और जडेजा जैसे कई खिलाड़ियों को धोनी ने अपने आप को साबित करने के भरपूर मौके दिए, इस कारण से ही यह खिलाड़ी इतना आगे बढ़ पाए। धोनी जितना चतुर और दिमाग वाला कप्तान शायद ही कभी क्रिकेट खेला हो, अपनी चतुराई और चालाकी से वो विपक्षी टीम को कब चकमा देते थे, पता ही नहीं लगता था। धोनी की कप्तानी में भी कुछ विवाद हुए, लेकिन एक क्रिकेटर के करियर का विवाद एक हिस्सा होते ही हैं। 2017 के बाद से जब धोनी ने कप्तानी छोड़ी, इसके बाद उनके टीम में जगह को ले कर सवाल उठने लगे। सन्यास की अटकलें लगाए जाने लगीं, यह बड़ी दुःख की बात है कि जिस कप्तान ने भारत को विश्व कप दिलाया, जिसके कप्तानी में भारतीय टीम ने अपना सबसे सफल दौर देखा, वैसे खिलाड़ी का सम्मान करने की जगह, लोगों ने उन पर सवाल उठाये। धोनी का प्रदर्शन काफी अच्छा था, लेकिन उनकी स्ट्राइक रेट में निरंतर गिरावट आ रही थी जो चिंता का सबब थी। इन सब के बीच आईपीएल में धोनी की चमक बरकरार रही, उन्होंने तीसरी बार 2018 में अपनी टीम को आईपीएल जीताया। धोनी की बल्लेबाज़ी अब पहले जैसी नहीं दिख रही थी, उनका हेलीकॉप्टर शॉट कहीं खो सा गया था, वे अब सिंगल डबल वाले खिलाड़ी बन गए थे।

With this came the end of a golden phase of Indian cricket, a period that gave India a distinct identity in the world. Apart from India winning titles, the most important thing along with it was that it dominated the other teams. India beat big teams like Australia, England and South Africa, Mahi's team performed splendidly well in all the Tests or One Day. Apart from all this, the most precious thing that India got under Dhoni's captaincy was the young players of India. Many players like Virat, Rohit, Ashwin and Jadeja were given plenty of opportunities by Dhoni to prove themselves, due to which these players were able to make so much progress. Hardly any clever and smart captain like Dhoni had played cricketer ever, how he got the better of the

opponents with his smartness and cleverness was not realised. There were some controversies under Dhoni's captaincy, but controversies are a part of a cricketer's career. Since 2017, when Dhoni relinquished the captaincy, questions arose over his place in the team. Speculations were being made about retirement, it is a matter of utter disgrace that the captain who led India to the World Cup Victory, under whose captaincy the Indian team saw its most successful phase, instead of honouring the player, and people questioned him. Dhoni's performance was quite good, but his strike rate was steadily declining, which was a cause for concern. Amidst all this, Dhoni's heroics in the IPL remained intact; he won his team IPL for the third time in 2018. Dhoni's batting did not look like it used to be before, his helicopter shot was sort of lost somewhere, he had become a single-double player.

9.

धोनी 2019 विश्व कप की टीम में थे, उन्होंने कुछ अच्छी पारियाँ खेली। सेमीफाइनल में शायद जब भारत को उनकी सबसे ज़्यादा ज़रुरत थी, तब वे टीम के लिए खड़े रहे, अंतिम क्षणों में मार्टिन गुएटिल के एक अविश्वसनीय डायरेक्ट हिट ने धोनी को रन आउट कर दिया, यह रन आउट धोनी के करियर का आखिरी रन आउट, यह मैच उनका आखिरी मैच साबित हुआ। पूरा देश धोनी को विश्व कप की जीत के साथ विदा करना चाहता था लेकिन वो खाइश पूरी न हो सकी। लगभग एक साल के अंतराल के बाद, देश के स्वतंत्रता दिवस के दिन, धोनी ने अपने अंतराष्ट्रीय क्रिकेट से सन्यास की घोषणा कर दी। इसके साथ ही एक बेहद ही प्रभावशाली खिलाड़ी, कप्तान और एक विकेट कीपर के सुनहरे करियर का अंत हुआ। धोनी जैसे खिलाड़ी शायद सौ साल में एक बार देखने को मिलते हैं, उनकी हर चीज़ बहुत खास थी, उनके जैसा दिमाग, उनकी बल्लेबाज़ी और उनकी स्फूर्ति का तो जवाब ही नहीं था। विकेट कीपिंग में शायद पूरे दुनिया में कोई उनका मुकाबला न कर पाए, उनके हाथ इतने तेज़ी से गिलियाँ उड़ाते थे कि पलक झपकते ही बल्लेबाज़ आउट। धोनी मैदान पर तो एक विजेता थे ही, मैदान के बाहर भी वो एक विजेता हैं। उनकी एक साधारण से कलर्क से भारतीय टीम के कप्तान और फिर विश्व कप जीतने की कहानी, एक ऐसी गाथा है जिससे आने वाली कई पीढ़ियाँ सीख लेंगीं। अपने दृढ़ निश्चय, मेहनत और लगन के कारण, राँची जैसे छोटे शहर से निकल कर उन्होंने अपने लिए नाम बनाया, इतिहास रचा और दुनिया भर में भारत का परचम लहराया। महेंद्र सिंह धोनी ने क्रिकेट खेलने

के तरीके को ही बदल कर रख दिया, अपनी गैर पारंपरिक तकनीक के बल बूते पर उन्होंने मैच जिताये, अब अंतिम ओवरों में दबाव गेंदबाज़ पर होता है, बल्लेबाज़ पर नहीं। उनकी महानता का पता इस बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने पाँच छह नंबर पर बैटिंग कर के पचास के ऊपर का एकरेज रखा, इतना ही नहीं इस एकरेज से उन्होंने दस हज़ार रन बनाये। धोनी अभी भी अपनी टीम चेन्नई से आईपीएल खेल रहे हैं, अब वे जीवन का आनंद ले रहे हैं, अपनी बिटिया ज़ीवा के साथ मस्ती करते हुए वे अक्सर नज़र आते हैं।

Dhoni was in the 2019 World Cup squad, he played some fine knocks. He stood up for the team in the semi-finals, perhaps when India needed him the most, an incredible direct hit from Martin Guptill in the final moments got Dhoni out, it was the last run out of Dhoni's career. The match proved to be his last match. The entire country wanted to bid Dhoni off with a World Cup victory but that desire could not be fulfilled. After a gap of almost a year, on the country's Independence Day, Dhoni announced his retirement from international cricket. With this, the golden career of a very impactful player, captain and a wicket-keeper came to an end. Players like Dhoni are probably seen once in a century, everything of him was so very special, a brain like him, his batting and his quickness was just top-notch. In the wicket-keeping, no one in the whole world could compete with him, his hands used to dismantle the bails so fast that the batsman was out in the blink of an eye. Dhoni was a winner on the field, he is also a winner off the field. His story of a simple clerk to the captain of the Indian team and then the World Cup victory is a saga from which many generations will learn. Due to his determination, hard work and dedication, he made a name for himself by moving out of a small town like Ranchi, creating history and making India proud around the world. Mahendra Singh Dhoni changed the way of playing cricket, he won matches on the back of his unorthodox technique, now in the final overs, the pressure is on the bowler and not on the batsman. His greatness can be sensed from the fact that by batting at number five, he maintained an average above fifty, not only that he scored ten thousand runs at this average. Dhoni is still

playing IPL with his team Chennai, now he is enjoying life; he is often seen having fun with his daughter Zeeva.

www.SpokenEnglish.Guru

CRISTIANO RONALDO

1.

फुटबॉल, दुनिया में पसंद किये जाने वाले खेलों की सूची में सबसे ऊपर आता है। यूरोप और दक्षिणी अमेरिकी महाद्वीप में खास तौर पर यह खेल बहुत ही ज्यादा लोकप्रिय है। यहाँ लोग इस खेल को अपनी ज़िन्दगी से जोड़ कर देखते हैं। बच्चे, युवा और यहाँ तक कि बड़े भी इस खेल को बहुत ही मज़े से खेलते हैं। जहाँ भारत में खेल को मौज मर्स्टी के रूप में देखा जाता है, विदेश में लोग इस क्षेत्र में अपना जीवन समर्पित कर देते हैं। इतने प्रसिद्ध खेल में पिछले दो दशकों में बहुत ही कम खिलाड़ी रहे हैं जिन्होंने इतनी गहरी छाप छोड़ी हो जितनी क्रिस्टिआनो रोनाल्डो ने छोड़ी है। पुर्तगाल में जन्मे लम्बे कद के इस खिलाड़ी ने फुटबॉल में हर वो चीज़ जीत ली है जो एक खिलाड़ी जीतना चाहता है। क्रिस्टिआनो रोनाल्डो का जन्म पुर्तगाल के एक शहर मैडिएरा में हुआ था, उनके चार भाई बहन हैं, और इन सब में वे सबसे छोटे हैं। रोनाल्डो एक बहुत ही गरीब घर में पैदा हुए थे, उनकी माँ दूसरों के घर साफ़ - सफाई का काम करती थी। इससे उनका घर चल पाता था, पिताजी को शराब की बहुत ही बुरी लत लगी हुई थी। रोनाल्डो कहते हैं कि शायद ही ऐसा कोई दिन होता था जब उनके पिता बिना शराब पिए घर आते थे। रोनाल्डो की माँ कहती हैं कि रोनाल्डो बचपन से ही फुटबॉल को लेकर बहुत ही ज्यादा उत्साहित रहते थे। रोनाल्डो के जीवन का एक ही मकसद होता था, बस फुटबॉल खेलना, चाहे वो दोस्तों के साथ घर के बाहर हो या फिर मैदान में जाकर। बहुत ज्यादा गरीबी के बावजूद रोनाल्डो ने अपने बड़े सपनों को कभी भी कमज़ोर नहीं पड़ने दिया। रोनाल्डो ने बचपन में ही अपने फुटबॉल की प्रतिभा दिखाना शुरू कर दी थी। केवल सात साल के रोनाल्डो ने अंडोरिन्हा फुटबॉल क्लब के लिए खेलना शुरू किया। रोनाल्डो के पिता इस क्लब में किट मैन का काम करते थे। यहाँ तीन साल खेलने के बाद नेशनल फुटबॉल क्लब में उन्होंने अपना खेल और निखारा। दस साल के रोनाल्डो ने सबको हैरान कर दिया। कोच से लेकर साथी खिलाड़ी, सब उनके इस शानदार प्रतिभा से बहुत ही प्रभावित थे। नेशनल फुटबॉल क्लब मैडिएरा के बेहतरीन क्लब्स में से एक था। वहाँ पर, रोनाल्डो ने अपने बचपन के कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण साल फुटबॉल खेला।

Football tops the list of most loved sports in the world. This sport is particularly popular in Europe and the South American continent. People here associate this game with their lives. Children, youth and even the elders play this game with great

pleasure. While sports are seen as fun and relaxation in India, people abroad dedicate their lives to this domain. In the last two decades, in such a famous sport, there have been very few players who have made such a huge impression as Cristiano Ronaldo has. Born in Portugal, this tall player has won everything in football that a player wants to win. Cristiano Ronaldo was born in Madeira, a city in Portugal, he has four siblings, and he is the youngest of all of them. Ronaldo was born in a very poor household; his mother cleaned the houses of others. It was due to her that they were able to make both ends meet; his father was very badly addicted to alcohol. Ronaldo says that there was hardly a day when his father came home without drinking alcohol. Ronaldo's mother says that Ronaldo was very enthusiastic about football since childhood. Ronaldo's life had only one purpose, just playing football, whether it was outside the house with friends or in the field. Despite so much poverty, Ronaldo never let his big dreams fade away. Ronaldo started showing his football flair as a child. Only seven years old Ronaldo started playing for the Andorinha Football Club. Ronaldo's father worked as a kit man at this club. After playing here for three years, he grew his game in the National Football Club. Ten-year-old Ronaldo surprised everyone. From coaches to fellow players, everyone was very impressed by his brilliant talent. The National Football Club was one of the best clubs in Madeira. There, Ronaldo played football for some of the very vital years of his childhood.

2.

बारह साल की छोटी सी उम्र में रोनाल्डो और उनके परिवार ने एक बहुत ही कठिन फैसला लिया। रोनाल्डो को आगे अगर फुटबॉल में बड़ा करियर बनाना था तो उन्हें बड़े शहर जाना था, पुर्टगाल की राजधानी लिस्बन उनका इंतज़ार कर रही थी। लिस्बन में बहुत से अच्छे फुटबॉल क्लब्स थे। इतनी छोटी उम्र में जब बच्चे वीडियो गेम खेलते हैं या मौज मस्ती करते हैं, ऐसी नहीं सी उम्र में रोनाल्डो ने अकेले लिस्बन जाने का निर्णय लिया। यह फैसला उनके परिवार के लिए बहुत ही भावुक था। रोनाल्डो अपने परिवार से बहुत प्यार करते हैं, उनकी माँ के लिए खास तौर पर यह एक मुश्किल फैसला था।

उन्हें रोनाल्डो को इतनी कम उम्र में बड़े शहर भेजने में डर लग रहा था। इन सब के बावजूद उन्हें अपने बेटे पर भरोसा था और वह जानती थी कि वह ये सब उसके भलाई के लिए ही कर रही थी। बारह साल की उम्र में रोनाल्डो ने पुर्तगाल के एक बहुत ही जाने माने क्लब स्पोर्टिंग लिस्बन में अपनी जगह बनाई। यहाँ पर वह उनकी टीम से नहीं बल्कि उनकी अकादमी में खेलते थे। चौदह साल की उम्र में रोनाल्डो एक बहुत ही ऊर्जावान युवा खिलाड़ी के रूप में उभर रहे थे। रोनाल्डो का इस समय का एक किस्सा बहुत ही चर्चित है। रोनाल्डो को उनके शिक्षक ने यह कहा था कि वह फुटबॉल खेल कर अपना गुजारा नहीं कर पाएंगे। इस बात पर रोनाल्डो आग बबूला हो गए, उन्हें फुटबॉल से बहुत प्यार था। यह सब सुनते ही उन्होंने शिक्षक पर कुर्सी उठा कर फेंक दी। इसके बाद रोनाल्डो ने अपने फुटबॉल पर और ज्यादा ध्यान देना शुरू कर दिया। रोनाल्डो की सबसे खास बात ये है कि वे बचपन से ही बहुत ज़िद्दी हैं। यह ज़िद ही उन्हें आज इतने ऊँचे मुकाम पर ले आयी। अपने सपने को हर हाल में पूरा करने की ज़िद, उसके लिए खूब मेहनत और पूरी लगन, रोनाल्डो ने यह सब दिखाया। वे एक इंटरव्यू में कहते हैं कि इतनी कम उम्र में एक अनजान शहर में आ कर सपने देखना और उसके लिए लगातार मेहनत करना कोई आसान काम नहीं था। उन्हें बहुत लम्बे समय पर अपने परिवार से मिलने का मौका मिलता था, परिवार की स्थिति भी इतनी अच्छी नहीं थी कि वे हर सप्ताह मिलने आ सके। आज रोनाल्डो के पास जितना पैसा है, इज़्ज़त है, वो इन सब का श्रेय अपनी इन छोटी - छोटी कुर्बानियों को देते हैं। इसके साथ ही वे अपने घर परिवार के लोगों का भी एक अहम रोल मानते हैं।

At the young age of twelve, Ronaldo and his family made a very difficult decision. If Ronaldo wanted to pursue a big career in football, he had to go to the big city, Portugal's capital Lisbon was waiting for him. There were many good football clubs in Lisbon. At such a young age when children play video games or have fun, Ronaldo at such a young age decided to go to Lisbon alone. This decision was very emotional for his family. Ronaldo loves his family so much, it was a difficult decision, especially for his mother. She was afraid to send Ronaldo to the big city at such a working age. Despite all this, she had confidence in her son and knew that she was doing all this for his son's good. At the age of twelve, Ronaldo earned his place in Sporting Lisbon, a very well known club in Portugal. Here he played not in the team but in his academy. At the age of fourteen, Ronaldo was emerging as a very energetic young player. One of Ronaldo's stories of this time is very popular. Ronaldo was told by his

teacher that he would not be able to survive by playing football. Ronaldo was furious at this statement as he loved football so much. On hearing this, he took the chair and threw it at the teacher. After this, Ronaldo began to pay more attention to his football. Ronaldo's most special thing is that he has been very adamant since childhood. This stubbornness brought him to the pinnacle today. The stubbornness of fulfilling his dream in every condition, his hard work and complete dedication, Ronaldo showed it all. He says in an interview that it was not easy to dream and work hard for him by coming to an unknown city at such a young age. He used to get a chance to meet his family after a long time, the family's financial situation was not so good that he could come to meet every week. Today, whatever money and respect Ronaldo has, he gives credit to all these little sacrifices. Along with this, he also considers the members of their family played an important role.

3.

लगभग पंद्रह साल की उम्र में रोनाल्डो के साथ एक बहुत ही भयानक घटना हुई। रोनाल्डो के दिल की धड़कन सामान्य से तेज़ धड़कती थी, इस बात के कारण उन्हें आगे बढ़ी परेशानी हो सकती थी। बात तो यहाँ तक पहुँच गयी थी कि रोनाल्डो को अपना पसंदीदा खेल, फुटबॉल, भी छोड़ना पड़ता। डॉक्टरों ने रोनाल्डो के दिल का ऑपरेशन किया, ईश्वर की कृपा से रोनाल्डो को कुछ परेशानी नहीं हुई। इतने बड़े ऑपरेशन के बाद भी रोनाल्डो डरे नहीं। अगर कोई दूसरा बच्चा होता तो शायद वो फुटबॉल खेलना भी छोड़ देता। रोनाल्डो की यही बात उन्हें हमेशा से उन्हें सबसे अलग करती आयी है। मुश्किल हालत हो या तनाव, रोनाल्डो कभी भी इसका असर अपने खेल पर नहीं पड़ने देते। मैच चाहे विश्व कप का हो या एक सामान्य सा लीग मैच, रोनाल्डो सभी मैचों में एक बराबर का दम दिखाते हैं। रोनाल्डो ने दिल का ऑपरेशन होने के कुछ ही दिनों के अंदर फिर से फुटबॉल खेलना शुरू कर दिया। शायद रोनाल्डो का जन्म ही फुटबॉल खेलने के लिए हुआ है। एक साल बाद रोनाल्डो स्पोर्टिंग लिस्बन की सीनियर टीम से खेलने लगे। उन्होंने मात्र एक ही साल में अंडर 16, 17 और 18 टीम में खेला और सीधा सीनियर टीम में जगह बना ली। 2002 का साल रोनाल्डो के लिए बहुत ही अनोखा साबित हुआ, स्पोर्टिंग में रोनाल्डो ने अद्भुत खेल का प्रदर्शन किया। उनके इतने बेहतरीन खेल को देख कर यूरोप के सारे बड़े क्लब उन पर नज़र रखे हुए थे। बार्सिलोना, मिलान से ले कर आर्सनल और वालेंसिया, सब

की रोनाल्डो पर नज़र थी। 2002 में हुए एक मैच में रोनाल्डो ने मैनचेस्टर यूनाइटेड के खिलाफ बहुत ही उम्दा प्रदर्शन किया, उनके इस मैच के प्रदर्शन से सर अलेक्स फेर्गुसन इतना ज़्यादा प्रभावित हो गए कि उन्होंने रोनाल्डो को लोन पर साइन कर लिया। मैनचेस्टर में लाजवाब खेल दिखाने के बाद, खिलाड़ियों ने सर एलैक्स फेर्गुसन से निवेदन किया कि रोनाल्डो जैसे प्रतिभावान खिलाड़ी को जाने देना सही नहीं होगा। इसके बाद 2003 -04 के सीज़न में मैनचेस्टर यूनाइटेड ने पूरे साढ़े बारह मिलियन डॉलर की डील साइन की। एक सोलह साल के युवा फुटबॉलर के लिए उस समय ये रकम अविश्वसनीय थी। रोनाल्डो का कद इसके बाद से अविश्वसनीय रूप से बढ़ना शुरू हुआ।

A very terrible incident happened to Ronaldo at the age of about fifteen. Ronaldo's heartbeat was faster than usual, due to the fact he could have further problems. The point was reached that Ronaldo would have to give up his favourite sport, football too. The doctors operated on Ronaldo's heart, by the grace of God, Ronaldo had no problems. Ronaldo was not scared even after such a big operation. If there had been another child, he would probably have stopped playing football. This is what sets Ronaldo apart from everyone else. Ronaldo would never let it affect his game, whether it was a difficult situation or stress. Whether the match is a World Cup or a simple league match, Ronaldo shows equal dedication in all matches. Ronaldo started playing football again within a few days of having the heart operation. Perhaps Ronaldo was born to play football. A year later Ronaldo started playing with the senior team of Sporting Lisbon. He played in the Under 16, 17 and 18 teams in just one year and made a place in the senior team directly. The year 2002 proved to be very unique for Ronaldo, with Ronaldo exhibiting an amazing performance in Sporting. Seeing such great performance, all the big clubs in Europe had their eyes set on him. From Barcelona, Milan to Arsenal and Valencia, all had their eyes on Ronaldo. Ronaldo performed exceptionally well against Manchester United in a match in 2002, Sir Alex Ferguson was so impressed by his performance that he signed Ronaldo on loan. After wonderful performances in Manchester, the players requested Sir Alex Ferguson that it would not be right to let a talented player like Ronaldo go. Subsequently, in the 2003–04 season, Manchester United signed a full

twelve and a half million dollar deal. For a sixteen-year-old young footballer, the amount was unbelievable at the time. Ronaldo's stature began to grow incredibly thereafter.

4.

मैनचेस्टर यूनाइटेड विश्व विख्यात क्लब है और इस क्लब का इतिहास बहुत ही सुनहरा रहा है। आज के समय में यूनाइटेड की चमक थोड़ी फीकी ज़रूर पड़ गयी है। उस समय में जब रोनाल्डो का ट्रांसफर यूनाइटेड में हुआ था तब वह विश्व के सर्वश्रेष्ठ क्लबों में गिना जाता था। यहाँ तक कि आज के समय में भी यूनाइटेड विश्व के सबसे धनी क्लबों में गिना जाता है। यहाँ के लोगों के दिल में फुटबॉल के लिए जो जुनून और ज़ज़बा है वो शायद ही किसी दूसरे क्लब के समर्थकों में दिखे। रोनाल्डो ने जब यूनाइटेड में कदम रखे तो उन्हें लोग एक युवा प्रतिभा के रूप में जानते थे। उनके एजेंट जॉर्ज मेंडेस से उस समय यूनाइटेड के मैनेजर रहे सर अलेक्स फेर्गुसन ने वादा किया था कि रोनाल्डो को कम से कम पूरे सीज़न के आधे मैच खेलने ज़रूर मिलेंगे। यूनाइटेड की लाल जर्सी में वो पहली बार 16 अगस्त, 2003 को मैदान पर उतरे। बोल्टोन की टीम के खिलाफ यूनाइटेड चार गोल के अंतर से जीतने में कामयाब रहा। यूनाइटेड के पूर्व खिलाड़ी और सबसे आकर्षक खिलाड़िओं में से एक जॉर्ज बेस्ट ने कहा कि रोनाल्डो सचमुच एक बहुत ही दिलचस्प खिलाड़ी हैं। यूनाइटेड के समर्थक भी इस नए खिलाड़ी को ले कर बहुत ही उत्साहित दिख रहे थे। रोनाल्डो की तरफ से यूनाइटेड के लिए पहला गोल एक शानदार फ्री किक के रूप में आया। पोर्ट्समाउथ के खिलाफ खेले गए उस मुकाबले में रोनाल्डो ने एक बहुत ही बेहतरीन तरीके से गेंद को गोल के अंदर पहुँचा दिया। धीरे - धीरे यूनाइटेड को उनके महंगे सौदे का फायदा दिख रहा था। रोनाल्डो ने लिस्बन के तरफ से यूनाइटेड के खिलाफ जो तहलका मचाया था, वही आतिशबाज़ी अब वो यूनाइटेड की टीम के लिए कर रहे थे। सर अलेक्स फेर्गुसन फुटबॉल की दुनिया में एक बहुत ही सम्मानित व्यक्ति माने जाते हैं। रोनाल्डो के करियर को उड़ान देने का सबसे बड़ा श्रेय अक्सर लोग सर अलेक्स को ही देते हैं। यहाँ तक कि रोनाल्डो भी सर अलेक्स का बहुत सम्मान करते हैं। वे सर अलेक्स फेर्गुसन को अपने पिता के सामान इज़्ज़त और प्यार देते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो फुटबॉल की दुनिया में रोनाल्डो सर अलेक्स को अपना पिता मानते हैं।

Manchester United is a world-renowned club and the history of this club is very rich. In today's time, United's craze has faded a bit. Manchester was counted among the

best clubs in the world when Ronaldo was transferred to United. Even today, United is counted among the wealthiest clubs in the world. The passion and zeal for football in the heart of the people here is rarely seen in the supporters of any other club. People knew him as a young talent when he stepped into United. His agent George Mendes, was promised by the then United's manager Sir Alex Ferguson, that Ronaldo would get to play at least half of matches of the entire season. He first stepped on the field on August 16, 2003, in United's red jersey. United managed to win by a four-goal margin against Bolton's team. Former United player and one of the most attractive players, George Best said that Ronaldo is a really interesting player. United supporters were also very excited about this new player. Ronaldo's first goal for United came in the form of a stunning free-kick. In that match played against Portsmouth, Ronaldo delivered the ball inside the goal in stellar fashion. Gradually United was able to realise the rewards of their expensive deal. The blitzkrieg that Ronaldo did for Lisbon against United, was now doing the same fireworks for United's team. Sir Alex Ferguson is considered a highly respected figure in the football world. Sir Alex often gives the greatest credit for giving impetus to Ronaldo's career. Even Ronaldo respects Sir Alex very much. He gives respect and love to Sir Alex Ferguson as his father. In other words, Ronaldo considers Sir Alex his father in the world of football.

5.

मैच दर मैच रोनाल्डो अपनी छाप छोड़ते चले गए। अक्सर इंग्लैंड की प्रेमिएर लीग दुनिया के सबसे कठिन फुटबॉल लीग मानी जाती है। यहाँ का ठंडा मौसम और भरी भरकम शरीर वाले डिफेंडरो के बीच से बॉल

निकालना बेहद ही मुश्किल काम माना जाता है। यहाँ की लीग में कुछ भी निश्चित रूप से कहना आसान नहीं है। कोई भी टीम किसी भी दूसरी टीम को हरा सकती है, फिर चाहे वो लीग टेबल में कितने ही निचले पायदान पर क्यों न हो। ऐसी मुश्किल लीग में खेलने के साथ - साथ रोनाल्डो को एक और परेशानी थी। यह परेशानी थी उनके भाषा की। जैसा की सभी को पता है कि ब्रिटेन की भाषा

अंग्रेजी है इसलिए वहां सभी खिलाड़ी या दर्शक सब अंग्रेजी में बोलते थे। रोनाल्डो पुर्टगाल से थे, यहाँ उनका अंग्रेजी से दूर दूर तक कोई वास्ता नहीं था। रोनाल्डो को पुर्टगीस आती थी जो पुर्टगाल में बोली जाती है। कई बार इंटरव्यू के दौरान रोनाल्डो को अपने साथ एक साथी खिलाड़ी को लाना पड़ता था क्योंकि वह अंग्रेजी बोल नहीं पाते थे। रोनाल्डो ने यूनाइटेड के तरफ से सीज़न का आखिरी गोल करते हुए एफ ऐ कप के फाइनल में यूनाइटेड को तीन गोल की शानदार जीत दिलाई। इस जीत के साथ ही रोनाल्डो ने यूनाइटेड के साथ अपनी पहली ट्रॉफी भी जीती। रोनाल्डो ने अपने पहले सीज़न में यूनाइटेड के लिए अद्भुत खेल दिखाया, एक अठारह साल के युवा फुटबॉलर के हिसाब से देखा जाए तो उनका सीज़न काफी अच्छा गया। इसके बाद के कुछ सालों में रोनाल्डो अपना प्रदर्शन सुधारते गए। अपने क्लब के साथ साथ अब वे अपने देश पुर्टगाल के लिए भी एक बहुत ही महत्वपूर्ण खिलाड़ी बन चुके थे।

Ronaldo went on to leave his mark. The Premier League of England is often considered the toughest football league in the world. It is considered extremely difficult to get the ball past the bulky and huge defenders and freezing weather. It is not easy to say anything definitively in the league here. Any team can beat any other team, no matter how low it is in the league table. Along with playing in such a difficult league, Ronaldo had another problem. This was the problem of his language. As everyone knows that the language of Britain is English, so all the players and spectators there spoke English. Ronaldo was from Portugal, where he had nothing to do with English. Ronaldo knew Portuguese which is spoken in Portugal. Many times during interviews, Ronaldo had to bring a fellow player with him because he could not speak English. Ronaldo scored United's final goal of the season to give United a three-goal victory in the final of the FA Cup. With this victory, Ronaldo also won his first trophy with United. Ronaldo played an amazing game for United in his first season, an eighteen-year-old young footballer who had a pretty good season. In the following years, Ronaldo improved his performance. Along with his club, he now became a very important player for his country Portugal.

6.

इन दिनों का एक किस्सा बहुत ही मशहूर है। एक बार क्लब के मैनेजर सर अलेक्स फेर्गसन अपने केबिन में काम कर रहे थे। शाम का समय था तो सभी खिलाड़ी ट्रेनिंग के बाद घर लौट रहे थे। कुछ देर बाद लगभग सभी खिलाड़ी स्टेडियम से निकल गए। इसके कुछ ही समय बाद सर अलेक्स को पेड़ों और झाड़ियों के बीच से आवाज़ आना शुरू हुई। स्टेडियम के पीछे एक जगह थी जहाँ देर सारे पेड़ और झाड़ियों थीं। वहाँ की ज़मीन बहुत ही उबड़ खाबड़ थी, फुटबॉल खेलना तो दूर वहाँ तो चलना भी असंभव सा था। सर अलेक्स को लगा कि कोई विपक्षी क्लब उनकी जासूसी कर रहा है। वे तुरंत ही स्टेडियम के पीछे उस मैदान में गए। जब सर अलेक्स वहाँ पहुंचे तो वे हैरान रह गए, जो उन्होंने देखा वो शायद उन्होंने सोचा नहीं होगा। जंगलों के पेड़ और झाड़ियों के बीच एक युवा रोनाल्डो बॉल के ड्रिब्लिंग की प्रैक्टिस कर रहे थे। दरअसल मैच में ड्रिब्लिंग करना एक बड़ी ही अद्भुत कला है, पूरी दुनिया में गिने चुने कुछ खिलाड़ी हैं जो अपनी ड्रिब्लिंग के लिए जाने जाते हैं। रोनाल्डो उन उबड़ खाबड़ रास्तों पर इसलिए मेहनत कर रहे थे जिससे वो मैच में और भी आसानी से ड्रिब्लिंग कर पाएँ। रोनाल्डो के इस फुटबॉल के प्रति उनके समर्पण को देख कर सर अलेक्स को उसी समय यह अंदाज़ा हो गया था कि रोनाल्डो आगे जा कर बहुत बड़े खिलाड़ी बनेंगे, इसी किस्से से रोनाल्डो के बारे में कुछ बातें साफ़ पता चलती हैं। रोनाल्डो शुरू से यह जानते थे कि अगर उन्हें बड़ा खिलाड़ी बनना है तो मेहनत करनी ही पड़ेगी। रोनाल्डो ने अपने बचपन में बहुत गरीबी देखी, परिवार से दूर रहे इसलिए उन्हें पता था कि अगर कुछ बड़ा करना है तो अपनी पूरी ज़िन्दगी इस खेल को समर्पित करनी होगी।

An anecdote of these days is very famous. Once the manager of the club, Sir Alex Ferguson, was working in his cabin. It was evening, all the players were returning home after training. After some time almost all the players left the stadium. Shortly thereafter, Sir Alex began to hear something from among the trees and bushes. There was a place behind the stadium where there were lots of trees and bushes. The surface there was very rough, it was impossible to even walk, playing football there seemed fairly impossible. Sir Alex felt that an opposition club was spying on him. He immediately went to the ground behind the stadium. When Sir Alex arrived there, he was surprised; he might not have thought what he saw. A young Ronaldo was practicing dribbling the ball among the trees and bushes of the forest. Actually

dribbling in a match is a very amazing art; there are few players all over the world who are known for their dribbling. Ronaldo was working hard on those bumpy and rocky surfaces so that he could dribble into the match more easily. Seeing Ronaldo's dedication to this football, Sir Alex at the same time had the idea that Ronaldo would go on to become a very big player, this story clearly reveals some things about Ronaldo. Ronaldo knew from the beginning that if he had to become a big player, he would have to work hard. Ronaldo experienced abject poverty during his childhood, staying away from family, so he knew that if something big had to be done, he would have to devote his entire life to the sport.

7.

रोनाल्डो के पिता को शराब पीने की बहुत ही बुरी लत लगी हुई थी। बचपन में भी रोनाल्डो ने अपने पिता को रोज़ रात को नशे की हालत में ही देखा था। रोनाल्डो के पिता अपने बेटे के लिए बहुत बड़े बड़े सपने देख रखे थे लेकिन वे अपने बेटे को बड़ा आदमी बनते देख नहीं पाए। उनकी शराब पीने की उनकी लत ने आखिर उनकी जान ले ली। साल 2005 में रोनाल्डो के पिता का निधन हो गया, रोनाल्डो ने अपने पिता को बचाने की पूरी कोशिश की। उन्हें एयर एम्बुलेंस से लंदन ले गए। अंत में उनकी दोनों किडनी खराब होने से उनकी मृत्यु हो गयी। रोनाल्डो अपने पिता के बहुत करीब थे, उनके चले जाने से रोनाल्डो को बहुत बड़ा सदमा लगा। रोनाल्डो के जीवन में दो चीज़ें सबसे ज़्यादा मायने रखती हैं। एक फुटबॉल और एक उनका परिवार, रोनाल्डो की ज़िन्दगी इन दोनों के इर्द गिर्द ही घूमती है। कहते हैं कि एक सफल इंसान कभी भी अपने जीवन में आने वाली मुश्किलों का सामना करने से घबराता नहीं है। मुश्किल वक्त आने पर वह दोगुना मेहनत करता है और पूरी कोशिश करता है कि उस मुश्किल समय से उबर पाए। आने वाला सीज़न रोनाल्डो के लिए बेहतरीन साबित हुआ और उन्होंने इतने सालों में सबसे लाजवाब प्रदर्शन किया। रोनाल्डो ने तीन सालों में पहली बार बीस गोल से ज़्यादा करने का कारनामा किया। रोनाल्डो के लिए नए कोच के साथ खेलना बहुत ही फ़ायदेमंद साबित हुआ। रोनाल्डो ने नवंबर और दिसंबर में प्लेयर ऑफ़ द मॉथ का खिताब जीता जो कि किसी भी खिलाड़ी ने लगातार बस दो बार जीता था। उसी साल चैंपियंस लीग के मुकाबले में रोनाल्डो ने अपना पहला गोल किया, रोमा के खिलाफ गोल करके उन्होंने विशाल अंतर से यूनाइटेड को जीत दिलाई। अगले मैच में मिलान के खिलाफ एक गोल करके जीत दिला दी, इसके बाद अगले लेग में यूनाइटेड तीन गोल से हार गयी।

इसके बाद पांच मई 2007 को मैनचेस्टर सिटी के खिलाफ रोनाल्डो ने गोल करके यूनाइटेड को चार साल बाद प्रीमियर लीग विजेता बनाया। रोनाल्डो के करियर ग्राफ अब धीरे धीरे आसमान हूँ रहा था। प्रीमियर लीग जीत कर रोनाल्डो ने अपने करियर में एक बड़ा मुकाम हासिल किया।

Ronaldo's father was addicted to alcohol. Even in childhood, Ronaldo saw his father in a drunken state every night. Ronaldo's father had very big dreams for his son, but he could not see his son becoming a big shot. His addiction to drinking alcohol ultimately killed him. Ronaldo's father passed away in 2005, Ronaldo tried his best to save his father. He was taken by air ambulance to London. In the end, he died due to both of his kidney failures. Ronaldo was very close to his father, Ronaldo was shocked by his departure. Two things matter most in Ronaldo's life. One is football and the other is family, Ronaldo's life revolves around these two. It is said that a successful human is never afraid to face the difficulties in his life. He works doubly hard when it comes to difficult times and tries his best to overcome that difficult time. The coming season proved to be a great one for Ronaldo and he had the most outstanding performances in all these years. Ronaldo scored more than twenty goals for the first time in three years. Playing with the new coach proved to be very rewarding for Ronaldo. Ronaldo won the Player of the Month title in November and December, which was won just twice by any player. The same year, Ronaldo scored his first goal in a Champions League match, scoring United against Roma to win United by a huge margin. In the next match, they won by a goal against Milan, then United lost by three goals in the next leg. Ronaldo then scored for United against Manchester City on May 5, 2007, making United the Premier League champions after a span of four years. Ronaldo's career graph was slowly skyrocketing. Ronaldo achieved a major milestone in his career by winning the Premier League.

8.

इन सब के बीच ही रोनाल्डो अपने देश के लिए भी नए कीर्तिमान रच रहे थे। 2007 में अपने जन्मदिन के दिन, यानी की पांच फरवरी को रोनाल्डो ने अपने देश की कप्तानी की। रोनाल्डो को कुछ समय बाद ही सात नंबर की जर्सी मिल गयी। इसके बाद तो रोनाल्डो ने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। अपने देश पुर्तगाल के लिए भी वो अक्सर अकेले ही लड़ा करते, पुर्तगाल की टीम वैसे तो बहुत अच्छी थी लेकिन रोनाल्डो जैसे खिलाड़ी नहीं थे। रोनाल्डो मज़ाक में कहते हैं कि अगर पुर्तगाल की टीम में दो तीन रोनाल्डो और होते तो फिर उन्हें खेलने में बड़ा आराम होता। 2008 के यूरो टूर्नामेंट में पुर्तगाल की टीम का सफर सराहनीय रहा, टीम ने कुछ अच्छे मैच जीते, इन सब के बावजूद वो क्वार्टर फाइनल में जर्मनी के सामने हार गयी। रोनाल्डो ने पूरे टूर्नामेंट में अच्छा प्रदर्शन किया लेकिन भला एक अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। 2008 में उन्होंने यूनाइटेड की कप्तानी की और उनके लिए पहले ही मैच में दो गोल किये। इस सीज़न में रोनाल्डो ने जॉर्ज बेस्ट के एक सीज़न में यूनाइटेड के लिए किये गए सबसे ज्यादा गोल का रिकॉर्ड तोड़ दिया। इस सीज़न के कारनामे के लिए रोनाल्डो को प्रीमियर लीग के कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। यह रोनाल्डो के सुनहरे करियर का एक सुनहरा पत्ता था, यूनाइटेड के लिए खेले गए उनके सभी सीज़न में यह सीज़न सबसे बेहतरीन था। इस साल के अंत में रोनाल्डो को अपने करियर का सबसे बड़ा इनाम मिला। बैलन डी ओर, जो फुटबॉल की दुनिया में सबसे प्रतिष्ठित अवार्ड माना जाता है, यह पूरे सीज़न सबसे ज़बरदस्त प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी को दिया जाता है। रोनाल्डो ने अपने करियर में पहली बार यह खिताब अपने नाम किया। मैसी और काका जैसे दिग्गजों को पीछे छोड़ कर पूरी दुनिया में अपना डंका बजाया।

In the midst of all this, Ronaldo was also creating new records for his country. Ronaldo captained his country on February 5, 2007, on the eve of his birthday. Ronaldo received the number seven jersey shortly afterwards. After this, Ronaldo did not look back. He often fought alone for his country Portugal, Portugal's team was very strong but there were no players like Ronaldo. Ronaldo jokingly says that if there were two more Ronaldo in the Portugal team, then he would have had great comfort to play. Portugal's journey to the 2008 Euro tournament was commendable, the team won some great matches, despite all these, they lost to Germany in the quarter-finals. Ronaldo did well throughout the tournament, but one swallow does

not make a summer. In 2008 he captained United and scored two goals for them in the first match. This season, Ronaldo broke George Best's record for the most goals scored for United in a season. Ronaldo was awarded several Premier League awards for this season's exploits. It was another feather in the cap of Ronaldo's glorious career, it was the best out of all seasons played for United. Ronaldo received the biggest reward of his career later this year. The Ballon d'Or, considered to be the most prestigious award in the world of football, is awarded to the most outstanding player of the season. Ronaldo held the title for the first time in his career. Leaving behind the legends like Messi and Kaka, leaving the world mesmerised.

9.

रोनाल्डो अब बड़े खिलाड़ी बन चुके थे, यूनाइटेड के लिए इतने बेहतरीन प्रदर्शन के बाद तो जैसे हर टीम उन्हें लेने के लिए उत्साहित थी। आखिर इस बड़ी मछली का शिकार दुनिया के सबसे बेहतरीन और अमीर क्लबों में गिने जाने वाले रियल मेड्रिड ने की। मेड्रिड की टीम का इतिहास बहुत ही सुनहरा रहा है, दुनिया भर के कई दिग्गज खिलाड़ी मेड्रिड की जर्सी में खेल कर अपना जलवा बिखेर चुके हैं। रोनाल्डो ने पोर्टो के खिलाफ खेले गए मैच में चालीस यार्ड दूर से एक गोल किया। इस गोल के लिए उन्हें पुस्कास अवार्ड से सम्मानित किया गया। रोनाल्डो ने उसे बाद एक बयान में कहा भी कि वह गोल उनके करियर के सबसे शानदार गोल में से एक था। इस साल रोनाल्डो ने क्लब के साथ चैंपियंस लीग का खिताब भी अपने नाम किया। फाइनल मैच में रोनाल्डो ने एक शानदार हैडर से चेल्सी के खिलाफ यूनाइटेड को बढ़त दिला दी। चेल्सी के लिए लैम्पार्ड ने हाफ टाइम से पहले एक गोल कर के मैच को बराबरी पर ला के खड़ा कर दिया। पूरे नब्बे मिनट खेलने के बाद भी मैच का नतीजा नहीं निकला। इसके बाद एक्स्ट्रा टाइम में भी दोनों टीमों से कोई गोल नहीं हुआ, मैच अब एक बहुत ही रोमांचक स्थिति में आ चुका था। अंत में जाकर पेनल्टी शूट आउट पर फैसला किया जाना था। रोनाल्डो अपनी किक पर चूक गए, इतने बड़े मंच पर इतने नाजुक स्थिति में रोनाल्डो की ये छोटी सी गलती यूनाइटेड को बहुत भरी पड़ सकती थी। कहते हैं कि किस्मत भी बहादुर का ही साथ देती है, रोनाल्डो बहादुर तो थे ही लेकिन उससे ज्यादा वो मेहनती थे। अगली किक चेल्सी के जॉन टेरी ने ली। रोनाल्डो की और यूनाइटेड की किस्मत आज उनके साथ थी, टेरी ने गेंद को दिशाहीन रूप से मार दिया। इसके बाद बहुत ही धैर्य के साथ यूनाइटेड के गोल कीपर वन देर सर ने निकोलस की किक बचा कर यूनाइटेड

को कई साल बाद चैंपियंस लीग का विजेता बना दिया। जब वो गोल बचा तो सारे खिलाड़ी दौड़ कर गोल कीपर के पास गए और जश्न मनाने लगे। रोनाल्डो ज़मीन पर गिर पड़े और खुशी के आंसुओं से रोने लगे। आखिर ये उनके लिए बहुत भावुक होना जायज़ था। रोनाल्डो ने पहले बार अपने जीवन में चैंपियंस लीग खिताब जीता था।

Ronaldo had become a prominent player now, after such a great performance for United; every team was excited to have him. After all the fuss, this big fish was hunted by Real Madrid, which is counted among the world's best and richest clubs. The history of Madrid's team is very illustrious; many legendary players from all over the world have showcased their heroics by playing in the jersey of Madrid. Ronaldo scored a goal from forty yards away in a match played against Porto. He was awarded the Puskas Award for this goal. Ronaldo also said in a later statement that the goal was one of the most spectacular goals of his career. This year Ronaldo also won the Champions League title with the club. In the final, Ronaldo gave United a lead against Chelsea with a brilliant header. For Chelsea, Lampard levelled the match with a goal before half time. The result of the match did not come even after playing the full ninety minutes.

10.

दरअसल फुटबॉल में चीज़ों क्रिकेट से थोड़ी अलग हैं। इसमें खिलाड़ी अपने क्लब से साल के लगभग नौ महीने खेलते हैं और अपने देश के लिए बीच में एक दो महीने। क्रिकेट में अंतराष्ट्रीय क्रिकेट का ज्यादा प्रचलन है, इसके विपरीत फुटबॉल में क्लब के टूर्नामेंट और क्लब के लिए किये गए कारनामे ज्यादा मायने रखते हैं। देश के लिए खिलाड़ी किसी बड़े टूर्नामेंट जैसे यूरो या विश्व कप में ही खेलते हैं। इस हिसाब से चैंपियंस लीग को विश्व कप जीतने के बराबर कहा जा सकता है। इन सब के बावजूद विश्व कप जीतना एक अलग ही अनुभव होता है जो अद्भुत है। चैंपियंस लीग के साथ ही साथ रोनाल्डो के साथ यूनाइटेड ने बहुत सफलता हासिल की। तीन प्रीमियर लीग खिताब जीत कर रोनाल्डो ने यह साबित कर दिया था कि उनमें कितनी काबिलियत है। अगर इन दिनों में युवा रोनाल्डो के खेलने की तकनीक की बात करें तो वो भी आज की उनकी तकनीक से काफी अलग थी। अपने शुरुआती दिनों में युवा रोनाल्डो को विंगर के रूप में खेलने का मौका मिलता था। युवा होने के कारण उनकी गति भी

बहुत तेज़ थी, वैसे वो आज भी विश्व के सबसे तेज़ फुटबॉलर में गिने जाते हैं। रोनाल्डो यूनाइटेड और उससे पहले लिस्बन के लिए मिडफील्डर के रूप में ही खेलते थे। वो बॉक्स में क्रॉस डालने की कोशिश करते थे। एक रूप से देखा जाए तो उनका सबसे ज़रूरी काम स्ट्राइकर या बॉक्स में खड़े साथी खिलाड़ी को गेंद पहुँचाना था। उनकी ड्रिब्लिंग शुरू से ही बहुत शानदार रही है। अपने युवा काल में रोनाल्डो विपक्षी टीम पर कहर बन कर गिरते थे। प्रीमियर लीग में इतने शानदार डिफेंडरों के होने के बाद भी रोनाल्डो बड़ी ही आसानी से उन सब को चकमा दे कर आगे निकल जाते थे। उनका स्टेप ओवर नाम की गेंद को डिफेंडर से छका कर ले जाने की तकनीक बहुत अधिक प्रसिद्ध है। चोप्पिंग की तकनीक भी रोनाल्डो को बड़ी ही अच्छे तरीके से आती है।

Actually things in football are slightly different from cricket. In this, players play for about nine months of the year from their club and one to two months in between for their country. In cricket, international cricket is more popular, in contrast to it, in football, club tournaments and club exploits are more important. For the country, players only play in big tournaments like the Euro or World Cup. Accordingly, the Champions League can be said to be equivalent to winning the World Cup. Despite all this, winning the World Cup is a different experience which is amazing. United achieved great success in the Champions League as well with Ronaldo. Ronaldo proved how capable he was by winning three Premier League titles. If we talk about the technique of young Ronaldo's play in these days, then it was also very different from his technique of today. In his early days young Ronaldo used to get a chance to play as a winger. Due to his young age, his speed was also pretty fast, although he is still counted among the fastest footballers in the world. Ronaldo used to play for United and earlier Lisbon as a midfielder. They tried to put crosses in the box. In a way, his most important job was to deliver the ball to the striker or fellow player standing in the box. His dribbling has been fantastic from the very beginning. In his youth, Ronaldo used to wreak havoc on the opposition team. Despite the presence of so many great defenders in the Premier League, Ronaldo used to easily dodge them all. One of his techniques named the step-over which included getting past the

defenders with the ball is very famous. The technique of chopping also comes to Ronaldo inherently.

11.

इन सब के साथ ही साथ रोनाल्डो की शारीरिक बनावट और क्षमता भी उन्हें सामने वाले खिलाड़ी के ऊपर बढ़त देती है। लम्बे कद के मज़बूत रोनाल्डो बड़ी ही आसानी से हवा में उछल कर गेंद को सीधा गोल में पहुँचा देते हैं। रोनाल्डो यूनाइटेड के साथ खेलते - खेलते अपने खेल में और परिपक्ता लाते गए। अपने यूनाइटेड के साथ करियर में अंत के सालों में उन्होंने स्ट्राइकर और मिडफील्डर दोनों के रूप में अपना शानदार खेल जारी रखा। रोनाल्डो की रूनी के साथ बेमिसाल जोड़ी थी, रूनी एक मझे हुए स्ट्राइकर के रूप में रोनाल्डो द्वारा डाले हुए क्रॉस को गोल में डाल देते थे। रोनाल्डो और रूनी की जोड़ी दुनिया की कुछ बहुत ही कमाल की जोड़ी में से एक मानी जाती है। दोनों ने लगभग एक ही साथ अपने करियर की शुरुआत यूनाइटेड के साथ ही की थी। अपने यूनाइटेड के लिए खेले गए अंत के कुछ सीज़न में रोनाल्डो भी फारवर्ड की भूमिका अदा करने लगे। इन सब के बीच जो रोनाल्डो की सबसे बड़ी खूबी रही वो थी उनकी हैंडर मारने की क्षमता जो आज भी उतनी ही लाजवाब है। आखिर 2009 में विश्व रिकार्ड फी पर रोनाल्डो यूनाइटेड से मेड्रिड आ गए। टीम बदलना और उससे भी बढ़कर दूसरे देश की लीग में जा के खेलना बेहद ही मुश्किल काम होता है। एक खिलाड़ी सालों से एक टीम के साथ खेल कर, साथी खिलाड़ी और विपक्षी टीम के कई खिलाड़ियों से परिचित हो जाता है। इसके साथ ही साथ उस लीग में खेल कर उसे महारत और अनुभव हासिल हो जाता है। इसके साथ ही अब उन्हें ब्रिटेन छोड़ कर स्पेन जाना था। अगर कोई साधारण खिलाड़ी होता तो शायद वो ऐसा निर्णय नहीं लेता लेकिन ये रोनाल्डो है। रोनाल्डो ने हमेशा से कहा है कि उन्हें जीवन में चुनौती बहुत पसंद है। वे चुनौती वाली परिस्थिति में खुद को बार - बार आज़माना चाहते हैं जिससे वो खुद को और बेहतर बना सकें। उनकी ऐसी मानसिकता ही शायद उन्हें बाकी सारे खिलाड़ियों से अलग करती है। जहाँ बाकी खिलाड़ी आराम और आसान रास्ता चुनने की कोशिश करते हैं वहाँ रोनाल्डो बार बार खुद को मुश्किलों के सामने आज़माते हैं।

Along with all this, Ronaldo's physical build and ability also gives him an edge over the opposing player. Mighty Ronaldo of tall stature easily jumps into the air and delivers the ball straight to the goal. Ronaldo brought more maturity to his game by

playing with United. He continued his illustrious game as both a striker and a midfielder in the later years in his career with United. Ronaldo had a phenomenal pairing with Rooney, with Rooney scoring a cross played in by Ronaldo, as a determined striker. Ronaldo and Rooney are considered to be one of the most outstanding pairs in the world. Both started their career with United almost simultaneously. Ronaldo also played the role of Forward in the last few seasons he played for United. Ronaldo's greatest quality among all of his abilities was his ability to hit the header which is equally scintillating today. Finally, Ronaldo moved to Madrid from United in 2009 at a world record fee. Changing the team and more than that going to another country's league is a very tedious task. A player becomes familiar with fellow players and many players of the opposition team, playing with a team for years. Along with that, he gets adept and experienced by playing in that league. With this, now he had to leave Britain and go to Spain. If there had been an ordinary player, he probably would not have made such a decision but this is Ronaldo. Ronaldo has always said that he loves challenges in life. He wants to try himself again and again in challenging situations so that he can improve himself. Perhaps such a mentality sets him apart from the rest of the players. Where the rest of the players try to choose a simple and easy path, Ronaldo repeatedly tests himself by juggling with difficulties.

12.

रोनाल्डो अब ला लीगा में आ चुके थे, यहाँ उनके साथ विश्व के एक और महान फुटबॉलर में से एक मैसी उनका इंतज़ार कर रहे थे। रोनाल्डो को यूनाइटेड में सात नंबर की जर्सी दी गयी थी। मेड्रिड जाने पर उन्हें सात नंबर नहीं मिला क्योंकि उस समय राउल गार्सिया सात नंबर की जर्सी पहनते थे। गार्सिया के अगले साल मेड्रिड से जाने पर रोनाल्डो को उनकी नंबर सात वाली जर्सी मिल गयी। मेड्रिड के साथ पहले साल में उनका प्रदर्शन कुछ बहुत खास नहीं रहा, उनके हिसाब से मेड्रिड में उनका सीज़न ठीक-ठाक था। गोल के आंकड़ों के हिसाब से देखा जाए तो रोनाल्डो ने लगभग 28 मैचों में 26 गोल किये। इन सब के बावजूद जो सबसे बड़ी बात थी वो ये थी कि मेड्रिड में अपने पहले सीज़न में रोनाल्डो

कोई भी ट्रॉफी जीतने में असफल रहे। इन सब के बावजूद उन्होंने यह माना कि टीम नयी थी और ताल - मेल बनाने में समय लगता है। इन सब कारणों से शायद मेड्रिड में उन्हें अपना पहला सीज़न बिना ट्रॉफी के ही खत्म करना पड़ा। इसी साल दक्षिण अफ्रीका में फीफा विश्व कप का भी आयोजन हुआ। विश्व कप के लिए क्वालिफिकेशन मैचों में रोनाल्डो का प्रदर्शन बहुत ही फीका रहा, रोनाल्डो क्वालिफिकेशन में एक भी गोल करने में नाकाम रहे। उनके इस बेजान प्रदर्शन से पुर्तगाल का विश्व कप में खेलना बड़ा ही मुश्किल लग रहा था। किसी तरह पतली हालत होने के बावजूद पुर्तगाल की टीम विश्व कप के लिए क्वालीफाई कर गयी। पुर्तगाल का प्रदर्शन बहुत ही नीरस रहा और वे स्पेन से हार कर विश्व कप से बाहर हो गए। पुर्तगाल की टीम के लचर प्रदर्शन के बावजूद रोनाल्डो तीन मैचों में मैन ऑफ़ थे। इसके बाद रोनाल्डो ने ला लगा में अपना बेहतरीन फॉर्म रखा। वे सभी टीमों के खिलाफ शानदार प्रदर्शन कर रहे थे, एक गोल या तीन, सबसे ज़रूरी बात यह थी कि वह गोल कर रहे थे।

Ronaldo was now in La Liga, with Messi, one of the world's greatest footballers awaiting him. Ronaldo was given a number seven jersey at United. He did not get number seven when he went to Madrid because Raul Garcia wore a number seven jersey at that time. Ronaldo received his number seven jersey when Garcia left Madrid the following year. His performance in the first year with Madrid was not very special, according to him he had a decent season in Madrid. Ronaldo scored 26 goals in nearly 28 matches, according to the goal statistics. Despite all this, the biggest thing was that Ronaldo failed to win any trophy in his first season in Madrid. Despite all this, he admitted that the team was new and that it took time to build a rapport with all. For all these reasons, he probably had to finish his first season in Madrid without a trophy. The same year, the FIFA World Cup was also held in South Africa. Ronaldo's performance in the qualification matches for the World Cup was below par, with Ronaldo failing to score a single goal in the qualification. His lifeless performance made it very difficult for Portugal to qualify for playing the World Cup. Portugal somehow qualified for the World Cup by the slightest of margins. Portugal's performance was very dull and they crashed out of the World Cup after losing to Spain. Ronaldo was the man of the match in three matches despite the Portugal team's poor performance. After that Ronaldo kept his best form in La Laga. He was

performing brilliantly against all the teams, scoring a goal or even three, the most important thing was that he was scoring goals.

13.

अगला सीज़न रोनाल्डो और उनकी टीम के लिए खुशियों की सौगात ले कर आया, रोनाल्डो ने एक बार फिर यह बात साबित की कि आखिर क्यों लोग उन्हें दुनिया का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी कहते हैं। मेड्रिड के साथ रोनाल्डो ने पहली बार ला लीगा का खिताब अपने नाम किया। मेड्रिड ने पूरे चार साल के अंतराल के बाद चमचमाती ट्रॉफी अपने नाम की। अपने सबसे बड़े प्रतिद्वंद्वी बार्सिलोना को पछाड़ कर मेड्रिड ने यह ऐलान किया कि अब उनकी टीम मज़बूत हो चुकी है। कोपा देल रे में मेड्रिड रोनाल्डो के दो गोलों के बावजूद बार्सिलोना से एक गोल से हार गयी। वहीं चैंपियंस लीग में बायर्न के हाथों मेड्रिड को हार झेलनी पड़ी। रोनाल्डो ने शूट आउट में पेनल्टी गँवा दी जिसके कारण मेड्रिड वो मैच गँवा बैठी। इसके साथ ही अब रोनाल्डो अपनी शारीरिक क्षमताओं के शीर्ष पर थे। मज़बूत शरीर और जानदार मांसपेशियाँ रोनाल्डो को बहुत ही मज़बूत खिलाड़ी बनाती हैं। गति उनके पास पहले से ही थी लेकिन अब सही मार्गदर्शन और ट्रेनिंग के दम पर वह शारीरिक रूप से भी दुनिया के सबसे अच्छे खिलाड़ी में से एक बन चुके थे। अब रोनाल्डो गेंद को अपने पास ज़्यादा देर रखते और कोशिश करते कि अपने ताक़तवर शॉट से गेंद को गोलकीपर के पार गोल में पहुँचा दे। रोनाल्डो के पैरों से जब बॉल निकलती थी तो ऐसा लगता है मानो रॉकेट हो। गेंद इतने तेज़ी से जा कर गोल में घुसती थी कि गोलकीपर भी हैरान रह जाता था। आज भी रोनाल्डो के शॉट्स उतने ही प्रभावशाली और ताक़तवर हैं। रोनाल्डो अपने इन खूबियों के कारण अब एक मुख्य फारवर्ड के रूप में खेलने लगे, लंबी दूरी से ही शॉट्स ले कर अब वे खौफ़ पैदा कर रहे थे। रोनाल्डो की फ्री किक तो शुरू से ही बहुत ज़बरदस्त रही है लेकिन उनका फ्री किक लेने का अंदाज़ बहुत ही निराला है। वे अपने शॉट्स को ऊपर खींच लेते हैं और अपनी जांघें दिखाते हैं। उनके ऐसे करने से मानो ऐसा प्रतीत होता है कि वे सभी को ललकार रहे हैं और अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रहे हैं। वैसे तो पहले भी कई बार रोनाल्डो को लोगों ने घमंडी कहा है लेकिन रोनाल्डो ने हर बार उनका मुँह से जवाब देने के बजाय अपने खेल से उनका जवाब दिया है। रोनाल्डो कहते हैं कि उन्होंने जो कुछ भी हासिल किया है उसके लिए उन्होंने बहुत मेहनत की है। बात भी सही है, रोनाल्डो ने जीवन के दोनों पहलु देखे हैं, उनका बचपन बहुत गरीबी में बीता है। लगातार मेहनत और खेल के प्रति अपने समर्पण के दम पर वे आज दुनिया पर अपना दबदबा बना पाए हैं।

The next season brought ecstasy to Ronaldo and his team, with Ronaldo once again proving why people called him the best player in the world. Ronaldo held the title of La Liga for the first time with Madrid. Madrid won the gleaming trophy after a gap of four years. Madrid, after beating their biggest rival Barcelona, announced that their team has now become mighty. In the Copa Del Rey, despite Ronaldo's two goals, Madrid lost by one goal to Barcelona. Ronaldo missed a penalty in the shoot-out, causing Madrid to lose the match. With this, Ronaldo was now at the top of his physical abilities. Sturdy body and powerful muscles make Ronaldo a very athletic player. He already had the pace but now with the right guidance and training, he had become one of the best players in the world physically. Now Ronaldo kept the ball longer with him and kept trying to get the ball past the goalkeeper with his powerful shots. When the ball comes off Ronaldo's feet, it seems like a rocket taking off. The ball used to go into the goal so quickly that even the goalkeeper was surprised. Even today, Ronaldo's shots are equally impressive and powerful. Ronaldo now started playing as a main forward due to his skills, he was creating fear by taking shots from long distances. Ronaldo's free-kick has been very sound from the beginning, but the way of taking his free-kick is very unique. He pulls up his shorts and shows his thighs. It seems as if he is daring everyone and showing his prowess. Although Ronaldo has been called arrogant many times in the past, Ronaldo has responded with his performances every time instead of answering them verbally. Ronaldo says that he has worked hard for what he has achieved. The fact is right, Ronaldo has seen both aspects of his life, his childhood has been spent in extreme poverty. He has been able to dominate the world today due to his continuous hard work and his dedication to the game.

14.

साल 2012 में भी रोनाल्डो ने बेहतरीन प्रदर्शन किया लेकिन मैसी ने उस सीज़न ऐसा धमाल किया कि बैलन दी ओर की रेस में वो आगे निकल गए। साल 2008 में बैलन दी ओर जीतने के बाद रोनाल्डो लगातार चार साल उस खिताब से दूर रहे। रोनाल्डो ने ऐसे तो हर साल बेहद ही अच्छा प्रदर्शन किया था लेकिन हर बार वे मैसी से थोड़े पीछे रह जाते। इस साल यूरो में रोनाल्डो ने बेमिसाल प्रदर्शन किया, ऐसा लगा मानो अकेले दम पर ही रोनाल्डो पुर्तगाल को यूरोप का बादशाह बना देंगे। बड़े ही कड़े मैच के बाद स्पेन के साथ मैच ड्रा हो गया। नतीजा निकालने के लिए पेनल्टी शूट आउट की मदद ली गयी। पुर्तगाल इसमें पार न पा सकी और इतने सुनहरे सफर के बाद बाहर हो गयी। इसके बाद आया साल 2013, यह साल पूरे तरह से रोनाल्डो के नाम रहा। रोनाल्डो ने ला लीगा में भी सबसे ज़्यादा गोल करने के रिकार्ड के साथ - साथ चैंपियंस लीग में भी सबसे ज़्यादा गोल किए। रोनाल्डो ने अपनी टीम मेड्रिड को चैंपियंस लीग का खिताब दिलाया जो कि दरअसल 2013-14 के सीज़न का फाइनल था। यह फाइनल कई मायनों में खास था। हुआ ये था कि फाइनल में रियल के सामने एटलेटिको थी, बहुत कोशिशें करने के बाद भी रियल गोल नहीं कर पाई। खेल के नब्बे मिनट पूरे ही होने वाले थे। दर्शक भी निराश थे और उनके साथ मेड्रिड की टीम भी। मेड्रिड के डिफेंडर सर्जिओ रामोस ने आखिरी लम्हों में एक हैडर से गेंद को गोल में भेज कर मानो पूरी टीम को ज़िंदा कर दिया हो। इसके बाद तो जैसे गोल की बारिश हो गयी। मेड्रिड ने एकस्ट्रा टाइम में एक के बाद एक करके पूरे तीन गोल किये और अंत में 4-1 के अंतर से एटलेटिको को हराया। रोनाल्डो ने साल 2013 में बैलन दी ओर भी जीता, यह जीत उनके लिए बहुत ज़रूरी थी। मैसी ने इससे पहले लगातार चार साल यह खिताब अपने नाम किया था और उनके नाम सबसे ज़्यादा बैलन दी ओर खिताब का रिकार्ड हो गया था। रोनाल्डो और मैसी को ले कर उनके समर्थकों के बीच हमेशा तना - तनी होते रहती है। कुछ कहते हैं कि रोनाल्डो विश्व के सबसे बढ़िया खिलाड़ी हैं तो वहीं कुछ कहते हैं मैसी। इस समय रोनाल्डो के पास बस एक ही खिताब था वहीं मैसी के पास चार। यह समय रोनाल्डो के लिए शायद मुश्किल रहा हो और इसलिए 2013-14 का सीज़न उनके लिए बहुत ही ज़रूर माना जाता है। रोनाल्डो ने इसके बाद अगले पांच साल में से चार बार इस खिताब पर कब्ज़ा किया और अपना दबदबा बनाया।

Ronaldo did well in the year 2012 too, but Messi was so successful that season that he overtook him in the Ballon D' Or race. Ronaldo stayed away from that title for four consecutive years after winning the Ballon D' Or in 2008. Ronaldo did extremely well

every year, but every time he would be slightly behind Messi. This year, Ronaldo performed brilliantly in the Euro, it seemed as if Ronaldo single-handedly would make Portugal the King of Europe. After a tough match, the match with Spain was drawn. Penalty shoot out was taken to get the result. Portugal could not overcome it and after such a glorious journey they were ousted. After this, came the year 2013, this year was completely made by Ronaldo his own. Ronaldo also created the record for the most goals scored in La Liga as well as in the Champions League. Ronaldo won his team Madrid the Champions League title, which was actually the final of the 2013–14 seasons. This final was special in many ways. It happened that Atletico was facing Real in the finals, despite many attempts Real could not score goals. Ninety minutes of the game were about to be completed. The audience was also disappointed and the Madrid team along with them. In the final moments, Madrid defender Sergio Ramos sent the ball into the goal with a header after which it seemed as if the entire team was alive. After this, there were raining goals. Madrid scored three goals in succession in extra time and eventually defeated Atlético by a 4–1 margin. Ronaldo also won the Ballon D'Or in 2013, this achievement was extremely crucial for him. Messi had earlier won this title for four consecutive years and etched his name by creating the record for most Ballon D' Or titles. There are always tensions between Ronaldo and Messi supporters. Some say Ronaldo is the best player in the world, while some say Messi. At this time, Ronaldo had only one title, while Messi had four. This time may have been difficult for Ronaldo and therefore the 2013–14 season is considered very significant for him. Ronaldo then held the title four times out of the next five years and established his domination.

15.

इस फाइनल में मेड्रिड के वापसी की कहानी तो यादगार है ही। इसके साथ ही मशहूर है एक और किस्सा जो दिल को छू लेने वाला है। दरअसल रोनाल्डो के बड़े भाई, जो उनसे लगभग दस साल बड़े हैं, उन्हें शराब पीने की बहुत ही बुरी लत थी। शराब के साथ साथ वे नशा भी करते थे। रोनाल्डो पहले ही अपने पिता की हालत देख कर परेशान रहते थे, जब पिता ने दुनिया छोड़ा तब रोनाल्डो को गहरा सदमा लगा था। रोनाल्डो अपने भाई से बहुत ज़्यादा जुड़े हुए हैं। उन्होंने अपने भाई से एक वादा करने को कहा, अगर मेड्रिड मुकाबला जीत जाता है तो वह शराब और नशे की लत हमेशा के लिए छोड़ देंगे। जब मेड्रिड फाइनल जीत कर चैंपियन बानी तो रोनाल्डो सबसे पहले दौड़ कर अपने भाई के पास गए। उन्हें गले से लगाया और जश्न मनाने लगे। कोपा देल रे के एक मैच में दो गोल कर के रोनाल्डो एक बहुत ही अद्भुत और अनोखा रिकॉर्ड अपने नाम किया। यह रिकॉर्ड था फुटबॉल के खेल में हर एक मिनट में गोल करना। रोनाल्डो ने उस मैच में दो गोल करके यह रिकॉर्ड कायम किया और ऐसा करने वाले वे विश्व के पहले खिलाड़ी बने। रोनाल्डो को इस साल मेड्रिड की कप्तानी भी मिली थी, वह मेड्रिड की कप्तानी करने वाले सात सालों में पहले गैर - स्पेनिश खिलाड़ी बने। इसके बाद रोनाल्डो ने उम्र के साथ अपने खेलने के अंदाज़ में थोड़ा परिवर्तन लाया। उम्र के साथ वे विंगर की भूमिका कम और एक स्ट्राइकर के रूप में ज़्यादा खेलने लगे। उनका ध्यान अब बॉक्स में रह कर गोल का मौका ढूँढ़ना था। वे अब भी अपनी टीम के लिए मौके बनाते थे लेकिन उन्होंने ड्रिलिंग काफी कम कर दी थी। साल 2014 के आने पर रोनाल्डो को एक बहुत ही भयानक चोट लगी। घुटने की इस चोट के कारण रोनाल्डो का विश्व कप में भी खेलना तय नहीं लग रहा था।

The story of Madrid's comeback in this final is memorable. Also famous is another anecdote that is heart touching. Actually, Ronaldo's elder brother, who is almost ten years older than him, had a very bad addiction to drinking. He used to get drunk along with additives. Ronaldo was already upset seeing his father's condition, Ronaldo was deeply shocked when his father left the world. Ronaldo is very much attached to his brother. He asked his brother to make a promise, that if Madrid wins the match; he will give up alcohol and drug addiction forever. When Madrid won the final and became champions, Ronaldo ran first to his brother. Embraced him and started celebrating. Ronaldo had a very amazing and unique record by scoring two

goals in a match in Copa del Rey. This record was of scoring in every single minute of the game of football. Ronaldo created that record by scoring two goals in that match and became the first player in the world to do so. Ronaldo was also given the captaincy of Madrid this year, becoming the first non-Spanish player in seven years to captain Madrid. Ronaldo then changed his style of play with age. With age, he began to play less of a winger and more as a striker. His focus now was to find a chance to score a goal by staying in the box. He still used to create opportunities for his team but he reduced dribbling significantly. In the year 2014, Ronaldo suffered a terrible injury. Due to this knee injury, Ronaldo did not seem to be playing in the World Cup too.

16.

इन सब के बावजूद रोनाल्डो ने अपने देश के लिए खेलना बहुत ज़रूरी समझा। इतनी गंभीर समस्या होने के बाद भी रोनाल्डो ने यह विश्व कप खेलने का जोखिम उठाया। अखबार और न्यूज़ में रोनाल्डो की चोट को ले कर भारी विवाद था लेकिन रोनाल्डो ने इन सब को अनसुना कर के देश के लिए खेलना ज़रूरी समझा। रोनाल्डो टीम में रहते हुए भी टीम को जर्मनी के हाथों चार गोल के शर्मनाक अंतर की हार से नहीं बचा पाए। इसके बाद अमेरिका के खिलाफ एक गोल करके मैच ड्रा करवाया। घाना के साथ आखिरी मैच में गोल करके पुर्तगाल को जीत दिलाई। वो कहते हैं न अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गयी खेत, पुर्तगाल के साथ भी ऐसा ही हुआ। शुरुआत में जर्मनी से हारने का खामियाज़ा उन्हें भुगतना पड़ा। पुर्तगाल पहले ही राउंड में विश्व कप से बाहर हो गयी। रोनाल्डो पर बहुत से सवाल उठे लेकिन अगर पूरी टीम अच्छा नहीं खेलेगी तो दुनिया का सबसे अच्छा खिलाड़ी भी बेबस नज़र आता है। इस समय रोनाल्डो, बेल और बेंजेमा की जोड़ी को बहुत सराहा जाने लगा। बेल पिछले ही साल रिकार्ड फीस पर मेड्रिड में आये थे। रोनाल्डो और बेल विंगर, वहीं बेंजेमा स्ट्राइकर की भूमिका में खेलते थे। इन तीनों की जोड़ी को अक्सर एम एस एन की जोड़ी से जोड़ के देखा जाता है। मैसी, सुआरेज़ और नेमार की जोड़ी को एम एस एन कहते हैं जो बार्सिलोना से खेला करते थे। रोनाल्डो अब बहुत हद तक अपने टीम के लिए गोल करने पर ज़्यादा ध्यान देते थे, अब उनका काम मौके बनाना नहीं था। इस सीज़न के बाद अगले सीज़न भी रोनाल्डो को बैलन दी ओर से नवाजा गया, रोनाल्डो अब रुकने वाले नहीं थे। अब बस एक कमी थी तो एक बड़ी ट्रॉफी अपने देश के लिए जीतने की।

Despite all this, Ronaldo considered it important to play for his country. Even after having such a serious problem, Ronaldo risked playing this World Cup. There was a huge controversy in the newspaper and the news about Ronaldo's injury, but Ronaldo deemed it necessary to play for the country by ignoring it. Ronaldo, despite being in the team, could not save the team from a humiliating four-goal loss to Germany. After this, he scored a goal to play a draw against America. In the last match with Ghana, he scored a goal to win the game for Portugal. It's said, what is the need to cry over spilt milk; the same happened with Portugal. They had to bear the brunt of losing to Germany in the beginning. Portugal was eliminated from the World Cup in the first round. Ronaldo had a lot of questions raised against him, but if the whole team does not play well, then the best player in the world also seems helpless. At this time, the pair of Ronaldo Bale and Benzema started to be appreciated. Bale came to Madrid last year at a record fee. With Ronaldo and Bale as wingers, Benzema played as a striker. The pair of these three are often seen in association with the pair of MSN. The pair of Messi, Suarez and Neymar are called MSN who played for Barcelona. Ronaldo was now very much focused on scoring goals for his team, now his job was not to create opportunities. After this season, Ronaldo was also awarded the Ballon D'or following season, Ronaldo was unstoppable now. Now there was just one thing missing, it was to win a grand trophy for his nation.

17.

दो साल बाद यानी 2016 में रोनाल्डो ने पुर्तगाल की टीम का यूरो में प्रतिधिनित्व किया। इस बार रोनाल्डो से सबको बहुत उम्मीदें थी। रोनाल्डो का फॉर्म भी अपने चरम पर लग रहा था। रोनाल्डो ने ग्रुप मैचों में अपनी टीम को किसी तरह पार पहुँचाया, इसके बाद नाक आउट में रोनाल्डो की टीम को बड़ी टीमों से लोहा लेना पड़ा। रोनाल्डो ने कुछ बहुत ही शानदार प्रदर्शन दिखाते हुए अपने टीम को अकेले फाइनल तक पहुँचाया। फाइनल में पुर्तगाल का सामना फ्रांस के साथ था। शुरुआती पलों में ही फ्रांस

के डिफेंडरों ने रोनाल्डो के साथ काफी खराब खेल का प्रदर्शन किया, रोनाल्डो को चोट के कारण पूरे मैच के लिए बाहर बैठना पड़ा। रोनाल्डो ने उस दिन एक कोच से भी बढ़कर भूमिका निभाई, उन्हें चलने - फिरने में परेशानी हो रही थी लेकिन अपने टीम का हौसला बढ़ाने और हौसला अफ़ज़ाई करने वे पूरे समय मैदान पर खड़े रहे। आखिर अंतिम लम्हों में किये गए एक गोल से पुर्तगाल ने फ्रांस को हरा कर एक बेहद ही आश्वर्यजनक इतिहास बना डाला। रोनाल्डो ने अपने देश के साथ भी एक बहुत बड़ा कीर्तिमान रच दिया। रोनाल्डो ने उस यूरो कप में लाजवाब प्रदर्शन किया और उन्हें कई अवार्ड से भी नवाजा गया। इस साल रोनाल्डो ने चौथी बार बैलन दी ओर का खिताब अपने नाम किया, इसके साथ ही साथ मेड्रिड के साथ उन्होंने चैंपियंस लीग भी जीती जो कि उनका चौथा चैंपियंस लीग का खिताब था। रोनाल्डो रियल के साथ इन चार - पांच सालों में अपने करियर के शीर्ष पर थे। ऐसा लग रहा था सारे खिताब और सारे इनाम बस रोनाल्डो के लिए ही बने हैं। अब रोनाल्डो काफी हद तक एक फारवर्ड की तरह ही खेलते थे, मौका देख कर बॉक्स में घुसते और गोल चुरा लेते। इसके साथ ही रोनाल्डो ने अपने नाम और कई कीर्तिमान स्थापित किये, रोनाल्डो अब तीस साल के ऊपर के हो चुके थे, उन्होंने इसके बावजूद पिच पर अपना खेल उच्चतम स्तर का बनाये रखा। साल 2017 में रोनाल्डो फिर से बैलन दी ओर खिताब के विजेता बने और पांचवीं बार यह खिताब जीत कर उन्होंने मैसी की बराबरी भी कर ली। इस साल भी रोनाल्डो ने बेहद ही शानदार ढंग से अपने टीम रियल मेड्रिड को चैंपियंस लीग का खिताब दिलाया। फाइनल में किये गए उनके एक बाइसिकल किक वाले गोल के लिए खास तौर पर सराहा गया।

Two years later, in 2016, Ronaldo represented the Portugal team in the Euro. Everyone had high hopes from Ronaldo this time. Ronaldo's form also seemed to be at its peak. Ronaldo somehow overpowered his team in group matches, after which Ronaldo's team had to take on the big teams in knock outs. Ronaldo led his team to the finals alone with some spectacular performances. Portugal faced France in the final. In the opening moments, the French defenders played a very ugly tactic with Ronaldo, Ronaldo had to sit out for the entire match due to injury. Ronaldo played the role of more than a coach that day, having trouble walking but he stood on the field the whole time, cheering and lifting up his team. After all this, a goal scored in the final moments helped Portugal create a fascinating history by defeating France. Ronaldo also achieved a rare feat with his country. Ronaldo did well in that Euro Cup

and was also awarded several laurels. This year Ronaldo won the Ballon D'or title for the fourth time, along with Madrid he won the Champions League which was his fourth Champions League title. Ronaldo was at the top of his career in these four-five years with Real. It seemed that all the titles and all the awards were made just for Ronaldo. Now Ronaldo used to play largely like a forward, sneaking into the box and scoring goals. With this, Ronaldo established his name and many records, Ronaldo now being over thirty years of age, he continued his game on the pitch to the highest level. In the year 2017, Ronaldo again became the winner of the Ballon D'or title, and he also equalled Messi by winning this title for the fifth time. This year also, Ronaldo won his team Real Madrid the title of Champions League in a stunning fashion. He was particularly appreciated for his bicycle kick goal in the final.

18.

मेड्रिड लगातार तीन बार चैंपियंस लीग का खिताब जीतने वाली पहली टीम बनी और उसके साथ ही रोनाल्डो की क्लब छोड़ने की अटकलें भी तेज़ होने लगी। सीज़न के अंत में ऐसा ही हुआ, रोनाल्डो ने इटली के क्लब युवेन्टस का हाथ थाम लिया। रोनाल्डो ने इसके बाद विश्व कप में भी अपना प्रभाव छोड़ा, स्पेन के खिलाफ उनके फ्री किक की तो दुनिया कायल है। पुर्तगाल की टीम में बस दो - तीन बड़े खिलाड़ी होने के कारण हमेशा की तरह टीम एक पड़ाव पर जाकर बाहर हो गयी। रोनाल्डो पिछले दो साल से युवेन्टस के साथ फुटबॉल खेल रहे हैं। उन्होंने युवेन्टस के साथ खेले गए अपने अब तक के दोनों सीज़न में सीरी आ का खिताब जीता है, चैंपियंस लीग में उन्हें निराशा ही हाथ लगी है। रोनाल्डो युवेन्टस में अब एक फारवर्ड और स्ट्राइकर के रूप में खेलते हैं। रोनाल्डो बहुत ही अनुभवी खिलाड़ी है और हर टीम के लिए उनका ये अनुभव बहुत काम आता है। इसी बीच रोनाल्डो ने 2019 में पुर्तगाल के लिए नेशंस लीग का खिताब जीता जिसमें यूरोप की सभी बड़ी टीमें खेली थीं। रोनाल्डो ने इसी बीच अंतर्राष्ट्रीय फुटबॉल में गोल का शतक बनाया। इसी बीच एक मैच में रोनाल्डो ने एक बहुत ही अनोखा कारनामा किया। रोनाल्डो को उनके हैंडिंग के लिए शुरू से जाना जाता है। सम्पदोरिआ के खिलाफ एक मैच में उन्होंने क्रॉस बार से भी ऊँची छलांग लगाई, जब वे हवा में थे तो उन्हें गार्ड करता हुआ डिफेंडर उनके पेट तक ही पहुँच पाया था। रोनाल्डो की शारीरिक क्षमता उनके उम्र से परे है। इतनी उम्र होने के बावजूद वे पिच पर बहुत ही तेज़ी से दौड़ते हैं और छलांग तो ऐसी की ऊँची कूद करने

वाला खिलाड़ी भी शर्मा जाए। रोनाल्डो हाल ही में पेले का रिकार्ड तोड़ दुनिया के सबसे ज्यादा गोल करने वाले खिलाड़ी बन गए हैं।

Madrid became the first team to win the Champions League title three times in a row and with that, speculation of Ronaldo leaving the club also started intensifying. Exactly similar thing happened at the end of the season, with Ronaldo joining hands with the Italy's club, Juventus. Ronaldo also made his impact in the World Cup after that, his free kick against Spain left the world spell bounded. As usual, there were two to three star players in the Portugal team and the team crashed out after reaching a certain juncture. Ronaldo has been playing football with Juventus for the last two years. He has won the title of Series A in both his seasons so far played with Juventus, he was left disappointed in the Champions League. Ronaldo now plays as a forward and striker at Juventus. Ronaldo is a very experienced player and his experience is very useful for every team. Meanwhile Ronaldo won the Nations League title for Portugal in 2019, in which all the big teams of Europe played. Ronaldo meanwhile scored a century of goals in international football. Meanwhile, Ronaldo achieved a very unique feat in a match. Ronaldo has been known for his heading from the beginning. In a match against Sampdoria, he leaped higher than the crossbar, when he was in the air; the defender guarding him was able to reach up to his stomach only. Ronaldo's physical abilities are beyond his age. Despite being aged, he runs extremely fast on the pitch and his jumps are such that even a player of High Jump sport would feel ashamed. Ronaldo, recently after breaking Pele's record, became the world's highest goal scorer.

19.

इतनी सारी दौलत और शोहरत के बाद भी रोनाल्डो को सबसे कीमती चीज़ उनका परिवार लगता है। रोनाल्डो दुनिया के सबसे अमीर खिलाड़ियों में शुमार है, इंस्टाग्राम पर उनके अभी पूरी दुनिया में सबसे ज़्यादा फॉलोवर हैं। रोनाल्डो की कहानी फर्श से अर्श तक के सफर की कहानी है। रोनाल्डो ने अपने मेहनत और काबिलियत के दम पर अपनी और अपनी परिवार की किस्मत बदल कर रख दी। रोनाल्डो से जो बात सीखने वाली है वो यह है कि अगर हम लगन के साथ मेहनत करें तो कोई भी मुकाम मुश्किल नहीं है। रोनाल्डो के सामने हर प्रकार की मुश्किल थी, गरीबी हो या शराबी पिता, इन सब के बाद भी उन्होंने मेहनत करना नहीं छोड़ा। उनकी घुटने की चोट के बाद भी उन्होंने बेचारा बनने के जगह मेहनत की। खेल के प्रति उनका प्यार और उनके हार न माने वाले उनके रवैये ने उन्हें सभी से आगे ला कर खड़ा कर दिया। रोनाल्डो के सम्मान में एक म्यूजियम भी है, इसके अलावा उनके जन्म स्थल मैडिएरा में जो एयरपोर्ट है उसका नाम भी रोनाल्डो के नाम पर रखा गया है। रोनाल्डो ने कई बार ज़रूरतमंदों को दान भी दिया है, बीमारी से पीड़ित लोगों के लिए भी उन्होंने दान किये हैं। रोनाल्डो अभी भी एक युवा की तरह खेलते हैं और शायद आने वाले काफी समय तक वे खेलते रहे। रोनाल्डो जैसे इतने सालों तक शीर्ष पर जमे रहने के लिए निरंतर मेहनत और प्रयास लगती है। रोनाल्डो उन सभी लोगों के लिए एक प्रेरणा स्रोत हैं जो अपने जीवन में संघर्ष कर रहे हैं। रोनाल्डो का जीवन इस बार का प्रमाण है कि जुझारूपन और हौसला बनाये रखने से सफलता ज़रूर हाथ लगती है।

Despite having so much wealth and fame, Ronaldo finds his family the most valuable thing. Ronaldo is one of the richest players in the world; he has the highest number of followers in the world right now on Instagram. Ronaldo's story is a journey from rags to riches. Ronaldo changed his and his family's fortunes by virtue of his hard work and ability. The thing that could be learnt from Ronaldo is that if we work diligently, no goal is difficult to achieve. Ronaldo faced all sorts of difficulties, poverty or drunken father, even after all this he did not stop working. Even after his knee injury, he worked hard instead of acting innocent. His love for the game and his unconquerable attitude made him stand out from everyone. There is also a museum in Ronaldo's honour, in addition to this, the airport in his birthplace Madeira, has also been named after Ronaldo. Ronaldo has also donated many times to the needy; he

has also donated to those suffering from diseases. Ronaldo still plays like a young player and he may probably play for a long time to come. It takes constant effort and hard work to stay on top like Ronaldo for so many years. Ronaldo is an inspirational source for all those who are struggling in their lives. Ronaldo's life is a testimony to the fact that success is always achieved by being courageous and striving hard.